अगस्त 2008 ■ Rs.15/-

चन्दामामा

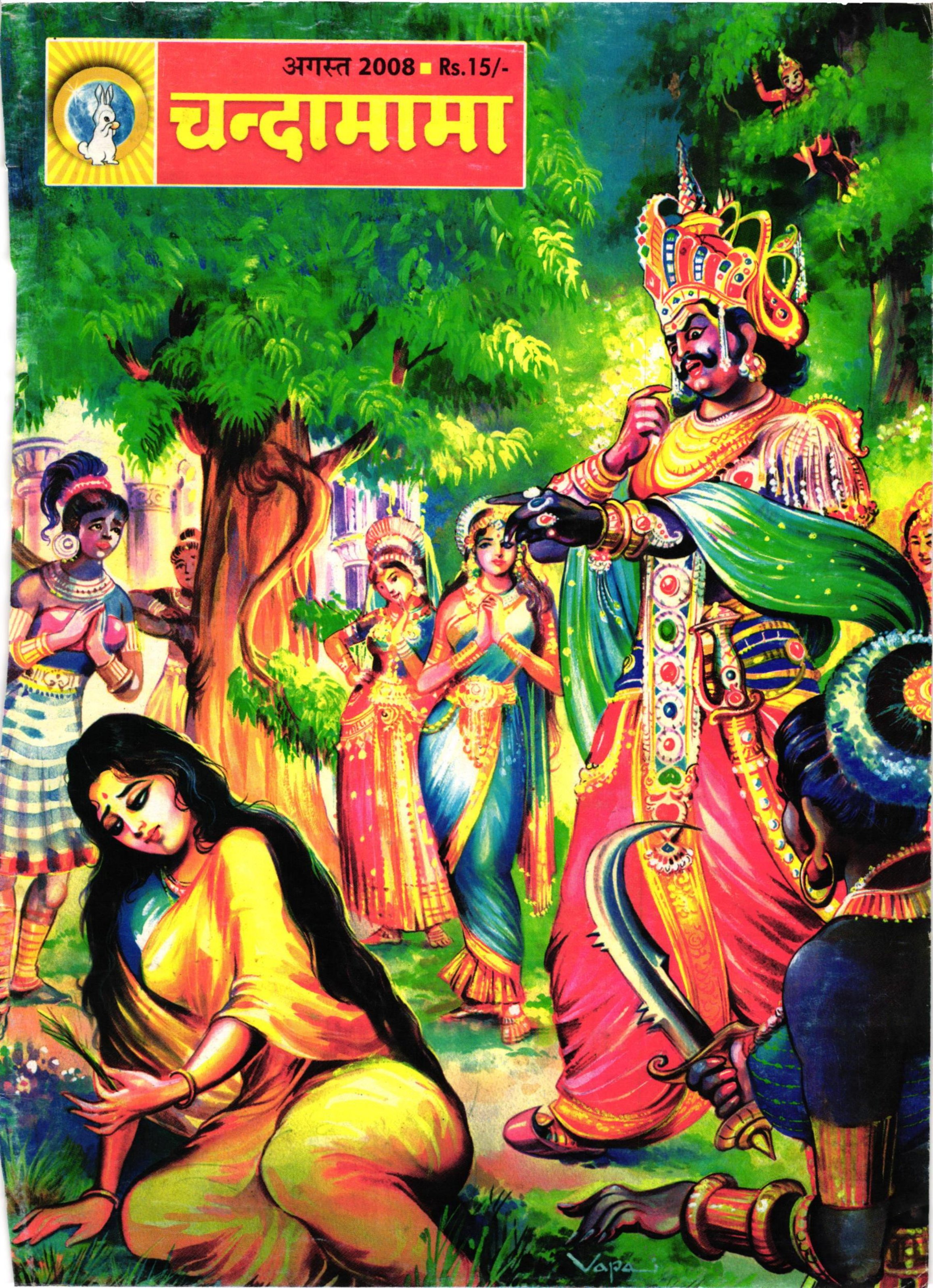

MY CANDYMAN ADVENTURES

यह बॉक्स किसका है?

Double the mazaa with *Choco Double.*

ITC Limited

Spot the doubles in this picture.

Log on to www.MYCANDYMANCLUB.com

REGISTER, EARN POINTS & WIN EXITING GIFTS!

Just three steps for winning many exciting Candyman Prizes:

- Answer the question.
- Complete the slogan 'I like Candyman because...' in not more than 10 words.
- Complete all the details about yourself and send it by August 30, 2008.

Ramya.B, Chandamama India Ltd., 6th floor, Block A, JVL Plaza, 626, Anna Salai, Teynampet, Chennai - 18

OR, e-mail us before 30th August 2008 at **candyman@chandamama.com**

How many doubles (pairs) do you see in this picture? (Not including the characters) ....

I like Candyman because ....

Name: .... ☐Boy ☐Girl Age: .... Address: ....

.... Ph. No.: ....

School: .... Class: .... E-mail ID: ....

CANDYMAN

TERMS AND CONDITIONS

1. This contest is open to all residents of India.
2. The participants understand that sending entries implies acceptance to the terms and conditions of this contest.
3. The entries for this contest shall be sent by ordinary post to Ramya.B, Chandamama India Ltd., 6th floor, Block A, JVL Plaza, 626, Anna Salai, Teynampet, Chennai-18 on or before August 30, 2008.
4. Incomplete and/ or illegible entries shall be disqualified.
5. This contest is not open to employees of ITC Limited and Chandamama India Ltd and their family members.
6. ITC Limited reserves the right to extend, cancel, discontinue, withdraw, change, alter or modify this contest or any of the terms thereof with or without notification and without assigning any reason.
7. The winners of this contest shall be selected by a panel of judges appointed by ITC Limited.
8. The decision of ITC Limited will be final and binding with regard to any dispute arising out of this contest and is non-contestable. No correspondence shall be entertained in this regard.
9. The prizes shall be sent to the winners at the addresses specified in the entries sent by them and ITC Limited shall not be responsible if the winners are unavailable at such addresses.
10. ITC Limited and Chandamama India Ltd shall not be liable for incorrectly addressed or undelivered entries or for disruption, delay or non-receipt of entries due to postal delays or any other reason.
11. Prizes are non-transferable, non-negotiable, subject to availability and cannot be exchanged for cash.
12. ITC Limited shall not be liable for any loss expense or damage which may be suffered in connection with this contest or accepting or using any prize given under this contest.
13. All disputes in connection with or arising out of this contest are subject to the jurisdiction of courts located at Bangalore.

DRAFTFCB + ULKA 850552

Get India's Most Loved Magazine for Children at your doorstep

Subscribe to *Chandamama*

Chandamama stories explore our traditions, folk tales, mythology, history and science in an unforgettable narrative style which captures your child's imagination.
Generations of children have grown up reading *Chandamama* in their native language.
Subscribe today and let your child's quest for knowledge stay alive forever.

I want to subscribe to the following editions of Chandamama: (Tick whatever applies)

☐ **English** ☐ **Language**.................................... ☐ **Junior Chandamama**

My Name .... Date of Birth ....

Send my issues to: Mr/Ms...

Address ....

....

....

City.............................. State .... Pin ....

Telephone.............................. Mobile .... Email ....

Enclosed Cheque/DD* for Rupees...

Cheque/DD no...Favouring **Chandamama India Ltd**

on .... bank. (Send At-par cheques or add Rs. 60 for non-Chennai cheques) Your subscription will start in 4 weeks.

Please mail the subscribtion form to :
Chandamama India Limited, JVL Plaza, 6th Floor, 626 (Old 501) Anna Salai Teynampet, Chennai – 600 018.
Tel: (044) 24334455 Telefax: 24322103 Email: chandamama@chandamama.com Web: www.chandamama.com

*Language/edition for one year is Rs. 180. Only English: Rs. 180 for 1 year. English + any language: Rs. 360 for 1 year. English Chandamama + Junior: Rs. 360 for 1 year. English Chandamama + Junior + any language: Rs. 540 for 1 year.
*Conditions apply.

LO HO GAYI
'POOJA'
ISS GHAR KI
भारत की पहली दैनिक पारिवारिक कॉमेडी
LO HO GAYI
sms SAB to 52525
सोम–गुरु रात 9 बजे
SAB
www.sabtv.com

चन्दामामा सम्पुट-५९ अगस्त २००८ सञ्चिका-८

विशेष आकर्षण

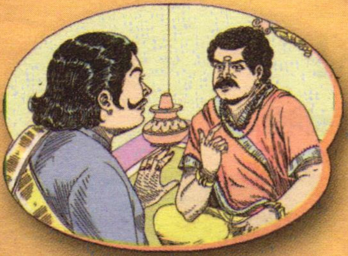

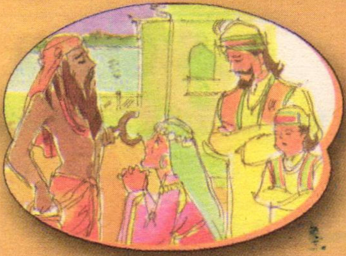

अच्छा शत्रु (वेताल कथाएँ) ...१९

कश्मीर की एक लोक कथा ...३९

चिरस्मरणीय ऐतिहासिक घटनाएँ-११ ...४४

रामायण (सुन्दर काण्ड) ...५७

अंतरंग

- पाठकों का पन्ना ...०८
- घर के बीचों-बीच पिशाची ...०९
- पाताल दुर्ग-१ ...१३
- समाचार झलक ...२५
- एकलव्य ...२६
- कहानी, जो मुझे सबसे अधिक पसन्द थी-१५ ...२९
- महान पुरुषों के जीवन की झाँकियाँ-३२ ...३२
- बीरबल की कहानियाँ-१३ ...३४
- इधर-उधर से ...३८
- भारत दर्शक ...४८
- उनके पिछवाड़े में जंगल ...४९
- जातक कथा ...५२
- पड़ोसी झंझट ...६३
- आपकी मनपसन्द नायक आर्य की वापसी ...६७
- सदा सतर्क ...६८
- चन्दामामा प्रश्नोत्तरी-७ ...७१
- बच्चे अखबार की सुर्खियों में ...७२
- भारत के धरोहर स्थल ...७३
- चित्र कैप्शन प्रतियोगिता ...७४

संस्थापक
बी. नागि रेड्डी
और चक्रपाणि

अमर वाणी

ऐश्वर्यवान में सौजन्य, वीर में अल्पभाषिता, ज्ञानी में सहनशीलता, धनी में दानशीलता, तपस्वी में क्रोध का अभाव, ज्ञानी में विनय, धर्मात्मा में छिद्रान्वेषण का अभाव इन सब में शील ही बड़ा भूषण है।

massage message.

अधिक महान और उदारचेता राष्ट्र की ओर

साठ वर्ष पूर्व, १५ अगस्त १९४८ में, स्वाधीनता की प्रथम वर्षगाँठ के अवसर पर, आप की पत्रिका ने अपने पाठकों को एक अत्यन्त महत्वपूर्ण बात हमेशा याद रखने की सलाह दी थी। जब कि अलग-अलग मतों के लोग अलग-अलग अवसरों को मनाते हैं, उदाहरण के लिए, हिन्दुओं द्वारा दशहरा, मुसलमानों द्वारा मुर्हरम तथा ईसाइयों द्वारा क्रिसमस, १५ अगस्त भारत के सभी लोगों के द्वारा, समस्त राष्ट्र के द्वारा मनाया जाता है।

जबकि हम अन्य अवसरों को भक्तिपूर्वक तथा समारोह के साथ मनाते हैं, १५ अगस्त को अवश्य ही अपनी मातृ भूमि की एकता तथा समृद्धि के प्रति निवेदित भाव के साथ मनाया जाना चाहिये।

विदेशी शासन के विरुद्ध सन १८५७ का प्रथम स्वाधीनता संग्राम विफल न होता यदि केवल तत्कालीन भारत के रजवाड़े शासक मिल कर काम करते। पर वे आपस में उलझते रहे। अब, जबकि वे शांसक नहीं रहे, मिलकर सोचने और काम करने का गम्भीर तथा पावन कर्तव्य-भार देश के नेताओं पर- न केवल राजनीतिक नेताओं पर, बल्कि, समाज के सभी क्षेत्रों के नेताओं पर आ पड़ा है। केवल वे ही हमारे नागरिकों की युवा पीढ़ी के लिए ईमानदारी, कठिन परिश्रम तथा सामजंस्य के दृष्टान्त बन सकते हैं।

कृतज्ञता के साथ, आयें, उन सभी देश भक्तों को याद करें जिन्होंने देश की स्वाधीनता के लिए संग्राम किया और उनमें से कुछ लोगों ने अपने प्राणों की आहुति दे दी। हम सब उन्हें अच्छी तरह जानते हैं। लेकिन सर्वप्रथम हम उन निर्भीक-साहसी वीरात्माओं को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करें जिन्होंने बीसवीं शताब्दी के पहले दशक में स्वाधीनता का नारा दिया, जब कि स्वाधीनता का विचार मात्र एक सपना था और इस शब्द का उच्चारण भी खतरे से खाली नहीं था। उस समय अपने देश के लिए पूर्ण स्वराज्य की मांग करनेवाले सबसे पहले व्यक्ति थे- श्री अरबिन्द, जो अन्ततोगत्वा उन्हीं के जन्म दिन पर हमसब को मिला। फिर, उसी समय बाल गंगाधरतिलक ने भी यह घोषणा की कि ''स्वाधीनता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। और हम इसे लेकर रहेंगे।''

एम अधिक महान और उदारचेता राष्ट्र के निर्माण के लिए हम सब को उन महान आत्माओं से प्रेरणा ग्रहण करनी चाहिये।

सम्पादक : विश्वम

Visit us at : http://www.chandamama.com

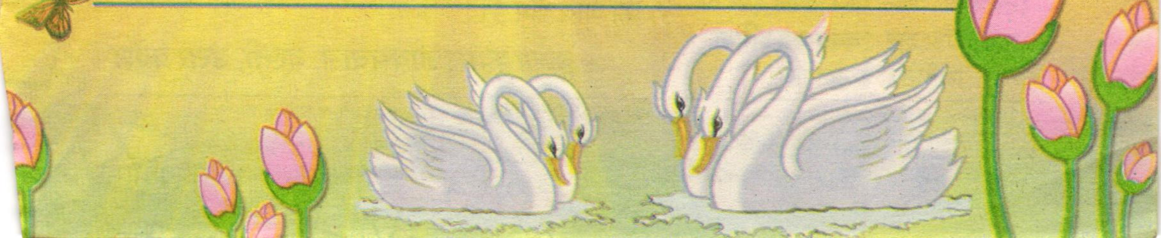

चन्दामामा

Editor, Publisher : B. Viswanatha Reddi (Viswam)
Chief Executive Officer : L. Subramanyan
Editorial Advisors : Ruskin Bond, Manoj Das
Consultant Editor : K. Ramakrishnan
Senior Artists: K.C. Sivasankaran (Sankar), Gandhi Ayya, P. Mahesh
Artist : Jayapandian
Assistant Editor : R. Sudha
Creative Writer : R. Vaasugi
Layout Designer : B.A. Hemalata Malini

CIRCULATION TEAM :
Chennai : T N Ravi Shankar, National Sales Manager
Mobile +91 99620 70014
email : ravishankar.tn@chandamama.com
Fazal Khan, Manager-Circulation & Institutional Sales
Mobile +91 99625 67860
email : fazal.khan@chandamama.com
Mumbai : Rajendra K Jadhav, Asst. Manager - Circulation
Mobile +91 9271720669
CHANDAMAMA INDIA LTD., B-3, Lunic Industry Opp. State Bank of India, Near Police Station Cross Road No.6, MIDC Andheri (East), Mumbai-400093
Phone +91 22 28312872 / 28311849
email : rajendra.jadhav@chandamama.com
New Delhi : Sushil Sharma, Circulation Manager-North
Mobile +91 98719 30767
CHANDAMAMA INDIA LTD., Goyal Business Centre, C-23/2 First floor, Connaught Place, New Delhi-110001
Bangalore : P. Murali, Asst. Circulation Manager -Karnataka
Mobile +91 94488 36952
CHANDAMAMA INDIA LTD., 18, 10th Cross, Mayura Street Papanna Lay Out, Outer Ring Road, RMV 2nd Stage Bangalore-560094, Phone +91 80 6655 1000
email:murali.p@chandamama.com
Kolkata : Ananth Prakash, Circulation Manager-East
Mobile +91 98362 82202
email : ananth.prakash@chandamama.com
Advertisement : email : sales@chandamama.com
Business Dev and Online : Surajit Agarwal
email : surajit@chandamama.com
Subscription Queries: L Govindasamy
e-mail : govindaswamy.l@chandamama.com
Customer Cell : A B Sairam Mobile: +91 9841983774
e-mail : sairam.ab@chandamama.com

Head Office : CHANDAMAMA INDIA LTD.,
JVL Plaza, Block-A, 6th Floor, 626, Anna Salai, Teynampet CHENNAI-600018, Phone +91 44 2432 2101/02,
Fax +91 44 2432 2103
email : chandamama@chandamama.com
Website : www.chandamama.com

शुल्क:

भारत में बुक पोस्ट द्वारा बारह अंक १८० रुपये। अपनी रकम डिमांड ड्राफ्ट या मनी-ऑर्डर द्वारा **'चंदामामा इंडिया लिमिटेड'** के नाम भेजें।

पाठकों का पन्ना

आज हमारा *चन्दामामा* ६० वर्ष का युवा हो गया है। *चन्दामामा* हमारे पूरे परिवार को प्यार-दुलार, मान-सम्मान देता है व सदैव प्रेरित करता रहता है कि अच्छे रास्तों पर चलो। *चन्दामामा* जैसे पहले था वैसे अब भी है। इसकी सुन्दर आकर्षक सरल भाषा के साथ राष्ट्रभाषा में प्रकाशन बहुत ही उत्कृष्ट है। सचमुच भारत में तो लोकप्रियता शिखर पर है, लेकिन विदेशों में भी अच्छी लोकप्रियता है। *चन्दामामा* एक सूत्र में पिरो कर रखता है। *चन्दामामा* में प्रकाशित समस्त सामग्री उच्च कोटि की और प्रभावशाली होती है। जीवन को सार्थक बनाने में एक नया आयाम देती है। सभी कहानियों में कुछ न कुछ आपको अपने जीवन में उतारने का अवसर मिलेगा। देश विदेश के महाग्रन्थों, महाभारत, रामायण, पुराण, लोक कथा, सामान यज्ञान, वेताल कथाएँ, आदि व विश्व प्रसिद्ध साहित्यकारों की उत्कृष्ट रचनाओं से परिचित कराती है।

हमारी लोकप्रिय पत्रिका *चन्दामामा*, इसके रंगीन चित्र इतने अच्छे होते हैं कि पूछिए मत। आज के आधुनिक युग में हमारी यह पत्रिका बच्चों को व सभी लोगों को अपने संस्कारों की रीति रिवाजों से परिचित कराती है। *चन्दामामा* रूपी समुद्र में जितने गोते लगाओगे उतने ही अनमोल मोती पाओगे। इस पत्रिका की जितनी प्रशंसा की जाये कम है।

- कृष्ण कुमार जायसवाल, बस्ती, उत्तर प्रदेश

© The stories, articles and designs contained in this issue are the exclusive property of the Publishers. Copying or adapting them in any manner/ medium will be dealt with according to law.

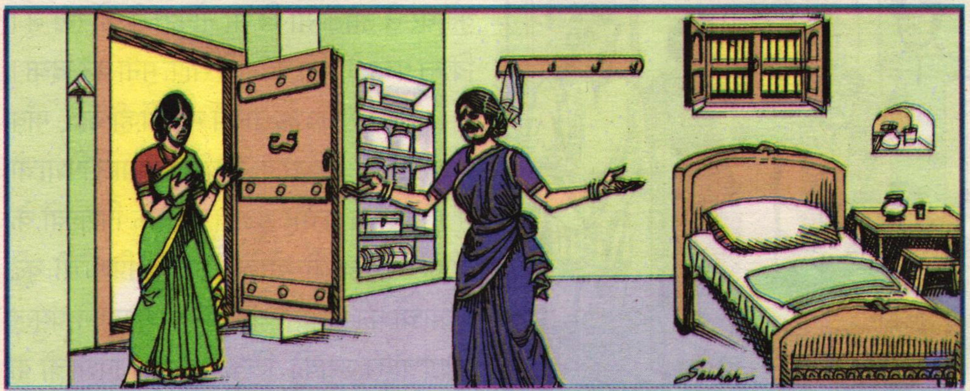

घर के बीचों-बीच पिशाची

कल्याणदुर्ग का केशव मेहनती किसान था। अपने तीन एकड़ के खेत को खुद जोतता था। उसकी पत्नी जलजा घर का सारा काम खुद करती थी। उस दंपति के दो बेटे और दो बेटियाँ थीं। बड़ा बेटा अरुण जब अठारह साल का हुआ, तब खेती के काम में पिता की सहायता करने लगा। घरेलू कामों में माँ को सहायता पहुँचाने के उद्देश्य से उसने पद्मा नामक एक युवती से शादी की। पर, जैसे ही वह ससुराल आयी, अलग घर बसाने के लिए पति को सताने लगी।

एक दिन केशव बैलगाड़ी से नीचे गिर गया। उसकी कमर में बड़ी चोट लगी। वैद्य ने उसे सावधान करते हुए कहा कि वह ज्यादा मेहनत का काम न करे। चालीस साल की उम्र में ही केशव ने अठारह साल के अरुण को घर की जिम्मेदारियाँ सौंप दीं। अरुण ने रात-दिन मेहनत की और बहनों की शादी करायी। भाई को भी पढ़ाया-लिखाया और वह अब शहर में ही परिवार सहित रहने लगा। अब अरुण की आमदनी भी बढ़ गयी और वह निश्चिंत होकर जीवन बिताने लगा। पर, उसकी पत्नी अब भी असंतुष्ट थी। वह सास और ससुर को चाहती नहीं थी। जब देखो, उनपर ताने कसती रहती थी।

जलजा ने एक दिन एक साँप को पिछवाड़े से आकर घर में घुसते हुए देखा। उसने यह बात बहू से बतायी तो उसने ध्यान नहीं दिया। उसने भी साँप को अंदर आते हुए देखा, पर कहने लगी, ''साँप! मैंने तो नहीं देखा।'' उसका उद्देश्य था, साँप सास-ससुर को डस ले, तो वे मर जायेंगे और सदा के लिए उनसे पिंड छूट जायेगी, घर में अकेले राज करूँगी।

जलजा किसी को बुलाने घर के बाहर आयी।

वसुंधरा

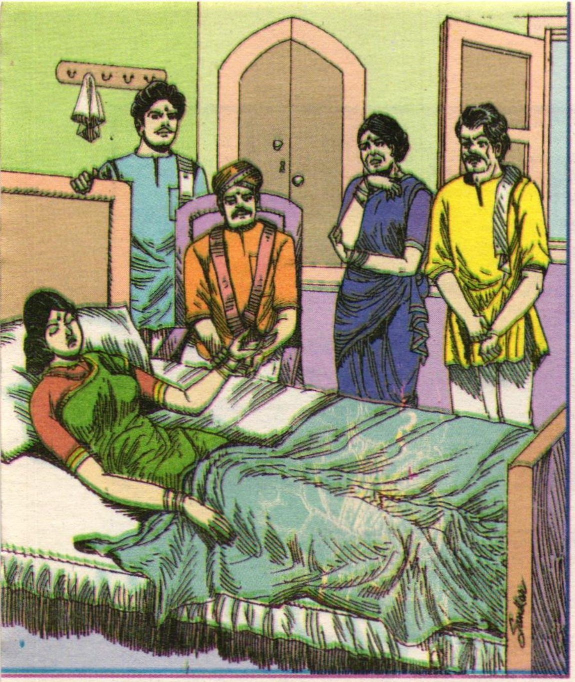

उधर से गुज़रते हुए मांत्रिक नागराज से उसने यह विषय बताया। उसने तुरंत आँखें बंद करके जप किया और कहा, ''थोड़ी ही देर में तुम्हारे घर में आया साँप ढीला पड़ जायेगा। वह तुम्हें कोई हानि नहीं पहुँचायेगा। शांत रहो।''

ज़लजा घर के अंदर आयी तो देखा कि साँप बहू की ओर जाने लगा।

पद्मा साँप को देखकर चिल्ला पड़ी और बेहोश हो गयी। इतने में साँप पिछवाड़े में चला गया।

तब से पद्मा खाट पर ही पड़ी रहने लगी। वैद्य ने उसकी परीक्षा करके कहा, ''बेचारी घबरा गयी है, जल्दी ही ठीक हो जायेगी।'' दो हफ्तों के बाद भी पद्मा की कमज़ोरी दूर नहीं हुई। पर, मन ही मन इस बात पर खुश होने लगी कि सास ही घर का पूरा काम संभाल रही है। अरुण चाहता था कि माँ की सहायता के लिए किसी रिश्तेदार औरत को घर ले आऊँ या किसी नौकरानी को रख लूँ। किन्तु पद्मा ने ऐसा करने से साफ़ मना कर दिया।

पद्मा की जिद के बारे में गाँव में ही नहीं, गाँव से सटे इमली के पेड़ों के बीच में रहनेवाले पिशाचों में भी इसका प्रचार हुआ। वहाँ के पिशाचों के झुंड में रहनेवाली मोहिनी नामक पिशाची बूढ़े पिशाचों को सताती थी। बूढ़े पिशाचों ने प्रमुख पिशाचों से उसकी शिकायत की। पिशाचों के प्रमुख ने मोहिनी से कहा, ''तुम कल्याणदुर्ग जाओ। तुम्हारे जैसे स्वभाव की पद्मा के घर में तुम्हें तीन महीनों तक काम करना होगा। तभी हमारे झुंड में तुम्हें स्थान मिलेगा।''

मोहिनी झुंड को छोड़कर जाना नहीं चाहती थी, पर करे भी क्या? उसे प्रमुख की आज्ञा को मानना ही पड़ेगा। सुंदर युवती के वेष में उसने पद्मा का दरवाज़ा खटखटाया। जलजा ने दरवाज़ा खोला। उसे मालूम हुआ कि वह नौकरानी का काम करने आयी है, तो वह उसे बहू के पास ले गयी। उसने मोहिनी को लापरवाही से देखते हुए कहा, ''हर दिन घर को साफ़ करना, कुएँ से पानी खींचना, कपड़े धोना, बरतन मांजना और रसोई का काम तुम्हें करना पड़ेगा। दोनों वक़्त का खाना मिलेगा। महीने में दो सौ रुपये मिलेंगे। यह सब मंजूर हो तो काम में लग जाना।''

पद्मा समझती थी कि वह इतने सब काम करने को तैयार नहीं होगी। किन्तु मोहिनी ने ये सब शर्तें मान लीं। पद्मा चिढ़ती हुई बोली, ''एक बार काम करने के लिए मान जाओगी तो कम से

कम एक महीने तक तुम्हें काम अवश्य करना होगा। खूब सोचो और निर्णय कर लो।'' मोहिनी ने हँसते हुए कहा, ''एक महीना क्या, तीन महीनों तक यह घर छोड़कर नहीं जाऊँगी। परंतु, बीच में मुझे नौकरी से हटाना नहीं चाहिये।''

पद्मा अवाक् रह गयी। पर कर क्या सकती थी। उसने मोहिनी को नौकरी पर रख लिया। उसने अंदर ही अंदर योजना बना ली कि दो तीन दिनों में इसे डराऊँगी, धमकाऊँगी, तो वह खुद घर से भाग जायेगी।

चूँकि मोहिनी में अद्‌भुत शक्तियाँ थीं, इसलिए बड़े से बड़े काम को भी आसानी से कर देती थी। मोहिनी के आ जाने से जलजा को घर के काम से छुट्टी मिल गयी। बेटे, बेटियाँ, बहुएँ आयीं और कुछ दिनों तक रहकर चली गईं। उन्हें घर का कोई भी काम करना नहीं पड़ा। उन्हें इस बात पर भी खुशी हुई कि बूढ़ी माँ को काम करना नहीं पड़ रहा है।

उनके आने से जलजा बेहद खुश हुईं। सास का सुख पद्मा से देखा नहीं गया। किसी भी तरह से मोहिनी को नौकरी से हटाने के लिए उसने उससे कहा, ''कुएँ से पानी खींचो, सब बड़े-बड़े बरतनों को पानी से भर दो। पिछवाड़े का पेड़ गिराकर लकड़ियाँ काटो।'' उसने जितने भी काम सौंपे, मोहिनी ने तुरंत कर दिखाया। उसने आख़िर कहा, ''देखो, गाँव के बच्चे घर में जब देखो, आ-जा रहे हैं। उन्हें अंदर आने मत दे।'' मोहिनी ने यह मानने से इनकार करते हुए कहा, ''तुम जो

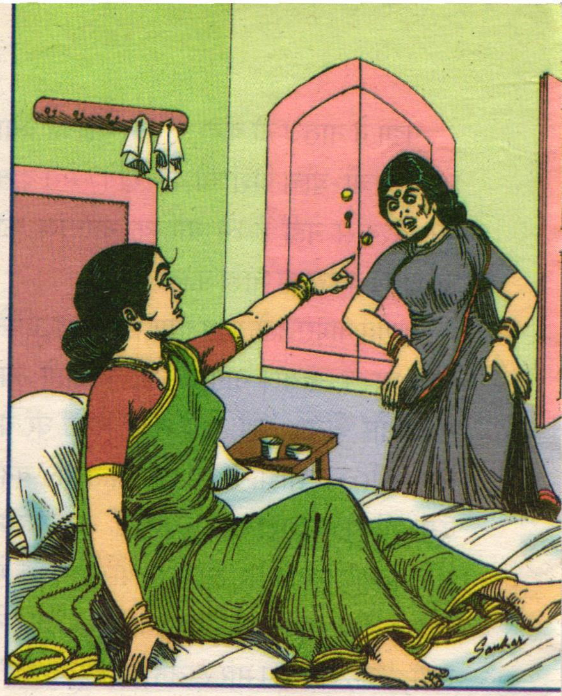

भी काम सौंपती हो, कर रही हूँ। अगर बच्चे खेलने के लिए घर में आयें, इससे तुम्हार क्या बिगड़ता है? उन्होंने तुम्हारा तो कुछ नहीं बिगाड़ा है न?''

''मुझसे सवाल करने की तुम्हारी इतनी हिम्मत? जो कहा करो, नहीं तो चली जाओ'', पद्मा ने आँखें बड़ी-बड़ी करके देखते हुए कहा।

''देखो, ऐसा करना मुझे भी आता है'', कहते हुए पिशाची ने भी लाल-लाल आँखों से उसे देखा।

पद्मा उसका चेहरा देख 'पिशाची, पिशाची' कहकर लोगों को बुलाने लगी। और मोहिनी को घर तुरंत से निकालने को कहा।

पद्मा के स्वभाव से परिचित घर के लोगों ने उसकी बातों का विश्वास नहीं किया और कहा, ''हो सकता है, मोहिनी पिशाची हो, पर उससे हमारा भला ही हुआ है, कोई हानि नहीं पहुँची। घर से भला क्यों निकाल दें।''

पद्मा ने नाराज़ हो कहा, ''जान बूझकर क्या घर के बीचों-बीच पिशाची को रखेंगे? मेरी बात का विश्वास नहीं है तो मांत्रिक नागराज को बुलाइये। वे इसका भांडा फोड़ देंगे।''

केशव नागराज के पास गया, और उसे अपने साथ घर ले आया। नागराज घर के आगे रुक गया और बोला, ''हाँ, यह सच है कि घर के बीचों-बीच पिशाची है। मैं उसे शक्तिहीन बना दूँगा।'' कहते हुए उसने आँखें बंद करके मंत्रोच्चारण किया। पर आश्चर्य, थोड़ी ही देर में पद्मा के हाथ-पांव शक्तिहीन हो गये। वह चिल्लाने लगी, ''यह सब मुझे मार डालने का षड्यंत्र है।''

सब मांत्रिक की ओर देखने लगे। उसने सिर हिलाते हुए कहा, ''वाह, तुम एक असाधारण स्त्री हो। तुम्हारे कारण मुझे मेरी मंत्रशक्ति का अंदाज़ा लग गया।''

''तुम क्या कह रहे हो? साँपों और पिशाचों पर तुम जिन मंत्रों का प्रयोग करते हो, वे मुझ पर काम कर गये? यह सब क्या हो रहा है?'' पद्मा ने दुख भरे स्वर में पूछा।

नागराज ने हँसकर कहा, ''मंत्रशक्ति का प्रभाव रूप के अनुसार नहीं, स्वभाव के अनुसार होता है। उस दिन तुम्हारे घर में साँप का घुसना एक आकस्मिक घटना मात्र थी। परंतु तुम साँप से भी अधिक विषैली हो। तुम अपने सास-ससुर से घृणा करती हो। इसलिए मेरा मंत्र तुम्हारे लिए शाप बन गया। तुमने मनुष्य का जन्म लिया, पर तुममें मनुष्य की बुद्धि नहीं है, इसीलिए मैंने तुम्हें असाधारण स्त्री कहा। इसी वजह से साँप और पिशाची पर मैंने जिन मंत्रों का प्रयोग किया, उन्होंने तुम्हें पीड़ा पहुँचायी। अगर तुम चाहती हो कि मेरे मंत्रों का प्रभाव हट जाए तो तुम्हें अच्छी बुद्धि और सद्व्यवहार की आदत डालनी होगी।'' यों कहकर मांत्रिक चला गया।

पद्मा को अपनी दुर्गति का कारण मालूम हो गया। उस क्षण से उसके स्वभाव में परिवर्तन आ गया। क्रमशः उसकी बीमारी भी जाती रही और अब घर का काम खुद संभालने लगी। इससे घर के लोग बहुत खुश हुए। पहले जो घर नरक था, अब स्वर्ग बन गया।

पाताल दुर्ग

कुन्तल देश के मन्त्री का लड़का, शशिकान्त एक दिन अपने मित्र भद्र और जयन्त के साथ शिकार खेलने जंगल गया। जंगल में हिरण, जंगली सूअर आदि खूब थे। परन्तु शशिकान्त और उसके मित्रों को इन निर्दोष प्राणियों को मारने में रुचि नहीं थी। वे बाघ या शेर जैसे हिंसक, क्रूर और खतरनाक जानवरों का शिकार करना चाहते थे। वे शेर की तलाश में, बहुत दूर जंगल में निकल गये। करीब दुपहर के समय उनका प्रयत्न सफल हुआ। वे एक पहाड़ी नाले के साथ-साथ जा रहे थे कि नाले के पार शशिकान्त को एक शेर खड़ा दिखाई दिया। शेर तभी पानी पीकर फिर जंगल की ओर जाने को तैयार खड़ा था।

शशिकान्त ने उस शेर को अपने मित्रों को दिखाते हुए कहा, ''हम घोड़े यहीं छोड़ दें और चुपचाप नाला पार करके, शेर को चारों तरफ़ से घेर लें। हममें से किसी न किसी के बाण का वह अवश्य शिकार होगा।''

घोड़े पर से उतरकर, शशिकान्त जा ही रहा था कि जयन्त ने उसके कन्धे पर हाथ रखकर उसको रोका। उसने कहा, ''शशिकान्त जल्दी न करो। नाले के उस पार का जंगल हमारा नहीं, कदम्ब राज्य का है और उस राजा से हमारी बड़ी दुश्मनी है। उनकी सीमा में जाना हमारे लिए आपत्तिजनक ही नहीं, खतरनाक भी हो सकता है। शिकार खेलने की बजाय हम खुद मुसीबत के शिकार बन जायेंगे। हमारी जान भी जा सकती है। उस राज्य को हमारे राज्य पर आक्रमण का

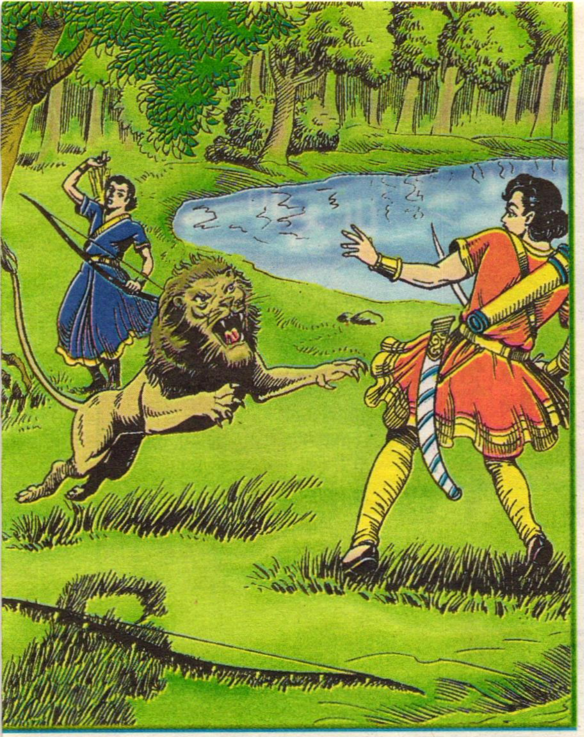

बहाना मिल सकता है। हमें बन्धक बनकर वे कुछ भी शर्त्त मानने को हमारे राज्य को मजबूर कर सकते हैं।''

शशिकान्त तो शिकार के जोश में था। उसने अपने मित्र की सलाह की अवहेलना की और हँसकर कहा, ''मैं वैसे ही डरपोक हूँ। मुझे और डरपोक न बनाओ। हम कदम्ब राज्य को जीतने के लिए या आक्रमण करने के लिए उस राज्य में प्रवेश नहीं कर रहे हैं। क्रूर पशुओं का शिकार खेलने जा रहे हैं। वह काम ख़त्म होते ही, हम फिर अपने राज्य में आ जायेंगे।''

जयन्त किसी भी हालत में दुश्मन के राज्य में जाने के पक्ष में नहीं था। लेकिन शशिकान्त ने उसकी सलाह को मजाक में उड़ा दिया और शेर पर ध्यान टिकाये रहा जो नाले के पार दूसरे राज्य के जंगल में खड़ा था। वह फिर भी शशिकान्त को मना करना चाह रहा था तभी भद्र कुछ बोल पड़ा।

''शशिकान्त, तुमने खूब कहा। यदि शेर हमें मिल गया, तो माँस कदम्ब के राजा के पास भेज देंगे और उसका चमड़ा उनकी इकलौती पुत्री कान्तिसेना को उपहार में दे देंगे। यह ठीक रहेगा न?'' भद्र ने कहा।

यह सुन शशिकान्त बड़ा हँसा।

तभी शेर ने सिर मोड़ा। अपनी ओर आते शिकारियों को देखा। थोड़ा गरज़ा। फिर पूँछ हिलाता आगे चला गया। शशिकान्त सामने से गुजरते शेर को मारने का अवसर हाथ से जाने देना नहीं चाहता था, चाहे वह दुश्मन के क्षेत्र में ही क्यों न हो। वह बहुत उत्साहित और उत्तेजित था। उसने तुरन्त धनुष पर बाण चढ़ाया और शेर के गले का निशाना बनाकर छोड़ दिया। वह बाण जाकर उसे लगा। लगते ही वह जोर से गरजा और घायल होकर नाले की ओर कूदा।

शशिकान्त और उसके मित्र झट अलग हो गये। घुटने भर के पानी को तुरंत पार कर गये और शेर पर उन्होंने तीन ओर से बाण छोड़े। इस बार एक बाण शेर के पेट पर लगा। वह गरजता तीनों शिकारियों में पास के शशिकान्त पर लपका।

शशिकान्त ने सोचा कि अब बाण से काम न चलेगा। उसने तलवार निकाली। इतने में पेड़ों के पीछे आहट होने लगी और देखते-देखते एक भाला शेर के सिर पर ज़ोर से लगा।

शशिकान्त और उसके मित्र चकित होकर उस तरफ़ देख रहे थे कि इतने में सुनाई पड़ा, ''सीमा पार करके आये हुए शत्रुओं को मार दो।'' और उन पर बाण वर्षा भी होने लगी।

शशिकान्त घायल होकर, धूल चाट रहा था। वह जोर से चिल्लाया, ''भद्र, जयन्त, तुम जल्दी भाग जाओ। कपट युद्ध करनेवाले शत्रुओं से लड़ना अच्छा नहीं है।''

पर तब तक जयन्त बाण की चोट से नीचे गिर गया था। भद्र ने भागने के लिए जो पीठ मोड़ी, तो उसकी पीठ पर भी शत्रु का बाण लगा। पर उसने उस चोट की परवाह न की।

वह बड़ी तेज़ी से भागता गया। नाला पार कर घोड़ों के पास गया और बड़ी कठिनाई से घोड़े पर सवार हुआ और घोड़ा सरपट दौड़ने लगा। उसके साथ बाकी दोनों घोड़े भी भागे। नाले के पार से कुछ शत्रु सैनिक भागे-भागे आये और उन पर बाण छोड़ने लगे। ''उसे जीता जी न भागने दो। यहाँ जो घायल प्राण छोड़ने को है, वह कुन्तल देश के मन्त्री का लड़का मालूम होता है।'' उनको पीछे से ये बातें सुनाई पड़ रही थीं।

भद्र की हालत ऐसी थी कि वह कुछ भी न सुन सकता था। वह घोड़े के गले के बाल पकड़कर उस पर झुक-सा गया था। चूँकि घोड़ा रास्ता जानता था, इसलिए वह सीधे उसको राजधानी ले जाने लगा।

इधर नाले के पास घायल शशिकान्त और जयन्त को घेरकर बहुत-से हथियार बन्द सिपाही

खड़े हो गये। शेर तब तक प्राण छोड़ चुका था। वे लोग, जो भद्र का पीछा करते गये थे, जब वह उन्हें न मिला, तो निराश हो वे नाले के पास वापस आ गये।

मगर शशिकान्त का घोड़ा उनको मिल गया, चूँकि उसकी लगाम किसी पेड़ से अटक गई थी।

''महाराज! क्षमा कीजिये। वह घायल दुश्मन के साथ, दो घोड़े भी जंगल में कहीं चले गये हैं। बहुत मुश्किल से हम इसे पकड़ पाये हैं। यह पंच कल्याणी मालूम होता है। कीमती जीन आदि को देखकर हमने सोचा कि यह घोड़ा कुन्तल देश के मन्त्री के लड़के का ही होगा।'' सैनिकों ने घोड़े को आगे चलाते हुए कहा।

कदम्ब राजा उग्रसेन ने तरेरते हुए सैनिकों की ओर एक बार देखा, फिर पास में हाथ बाँधे

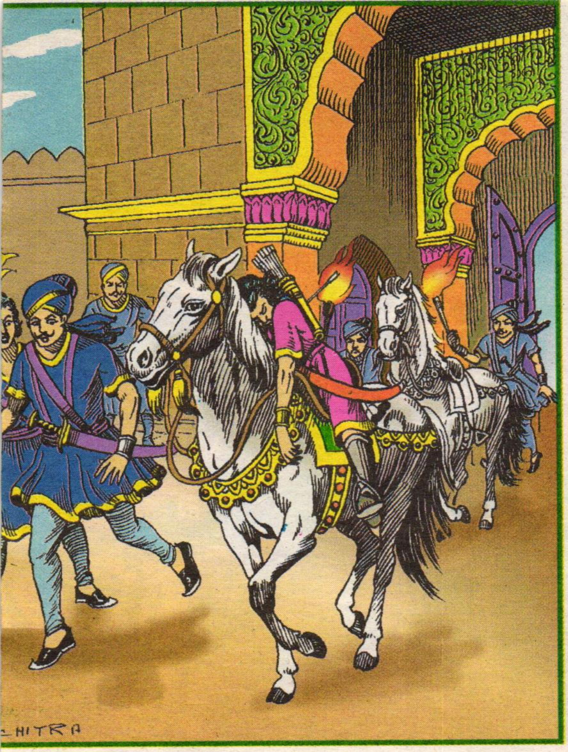

खड़े सेनापति की ओर मुड़कर कहा, ''सेनापति! हमारे सैनिक इतने निकम्मे हैं कि घायल शत्रु को भी नहीं पकड़ सकते हैं। इन लोगों के भरोसे ही क्या हमने कुन्तल देश के राजा से दुश्मनी मोल ली थी?''

सेनापति ने कुछ कहना चाहा, पर राजा के मुँह पर क्रोध देखकर कहा, ''महाराज!'' वह हिचकिचाने लगा।

उग्रसेन शशिकान्त के पास आया। उसे पैर से इधर उधर हिला डुला कर कहा, ''यह मन्त्री का लड़का है। इसमें कोई सन्देह नहीं है। अभी कुछ जान बाकी मालूम होती है। इसे ले जाकर, कहीं गुफ़ा में डाल दो। कोई शेर उसे खा जायेगा और जो दूसरा घायल है, वह कौन है?''

दो सैनिकों ने जयन्त को हिलाकर कहा, ''इसके प्राण पखेरु तो कभी के उड़ चुके हैं, महाराज।''

''तो उसे भी गुफ़ा में डाल दो।'' कहते हुए उग्रसेन ने सेनापति की ओर मुड़कर कहा, ''सेनापति! आज जिस समय हम शिकार खेलने निकले थे, शायद वह समय अच्छा न था। जब मैंने बाण छोड़ा था, तो मेरा यही ख्याल था कि ये कोई कुन्तल देश के मामूली सैनिक हैं। मुझे क्या मालूम था कि ये कुन्तल देश के मन्त्री का लड़का और उसके दोस्त हैं। वह राजा हम से कहीं अधिक बलवान है। मन्त्री की चतुरता भी हम जानते हैं। इस अशुभ घटना से हमारे राज्य पर आपत्ति आ सकती है। हमें सावधान रहना होगा। हम राजधानी जाकर, एक पत्र लिखकर उनको भेजेंगे कि सीमा के सैनिकों ने गलती से यह सब कर दिया है। कुछ ऐसा ही सोचना होगा। फिर भी कुन्तल का राजा इसका क्या अर्थ निकालेगा, कुछ कहा नहीं जा सकता। युद्ध की सम्भावना से भी इनकार नहीं किया जा सकता देखें, महामंत्री की क्या राय है?''

''हाँ, महाराज हाँ, इसके लिए हमारे महामन्त्री सर्व समर्थ हैं।'' सेनापति ने कहा।

उग्रसेन ने कुछ न कहा। वह घोड़े पर सवार होकर चल दिया। उसके पीछे सेनापति भी चला। सैनिकों में से दस आदमी, शशिकान्त और जयन्त को चटाइयों की तरह कन्धों पर डाल ''हाँ.... हूँ...'' करते यूँ गुफ़ा की ओर चले, जैसे कोई पालकी उठा रहे हों।

और वह घोड़ा, जिस पर घायल भद्र पड़ा हुआ था, नगर द्वार बन्द होने से पहले द्वार के पास पहुँचा। द्वार रक्षक मन्त्री के लड़के की प्रतीक्षा कर रहा था। जब उसने उसके मित्र भद्र को उस हालत में देखा, तो वह घबरा गया। उसे छूकर यह जानने के लिए भी डरा कि वह जीवित है कि नहीं और वह घोड़ा, जिस पर जयन्त सवार होकर गया था, भद्र के घोड़े के साथ था।

द्वार रक्षक भद्र के घोड़े के साथ मशालें लेकर राजधानी की ओर चले। एक मनुष्य को, जिसकी पीठ में बाण घुसा हुआ था और उस घोड़े को द्वार रक्षकों को मशालें लेकर, ले जाते देखने के लिए बहुत-से लोग वहाँ जमा हो गये। सिवाय इसके कि घोड़े पर मन्त्री का दोस्त भद्र था, कोई कुछ न जानता था।

घोड़ा सीधे राजमहल में गया और वहाँ के घुड़साल में खड़ा हो गया। इस बीच खबर मिलते ही, राजा शतयानु और मन्त्री गंगाधर वहाँ आये। नौकरों ने भद्र को होशियारी से घोड़े पर से उतारा। राजवैद्य ने उसकी परीक्षा की और उसकी पीठ पर लगे बाण को होशियारी से निकाला। उस समय भद्र कुछ हिला डुला।

वैद्य ने उसकी परीक्षा करके कहा, ''महाराज! मैं भरसक कोशिश करूँगा। यदि भाग्य ने साथ दिया, तो भद्र के जीने की आशा है।''

नौकर, भद्र को एक चारपाई पर लिटाकर महल के अन्दर ले गये। तब तक मन्त्री बाण की परीक्षा करता खड़ा था। फिर उसने एक सेवक को बुलाकर

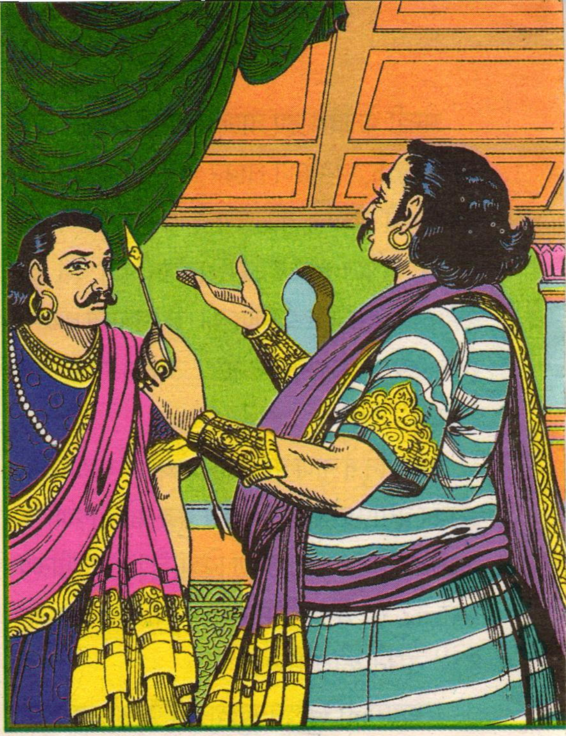

उसके हाथ में बाण देते हुए कहा, ''इसे खूब धो धाकर ले आओ।''

''शशिकान्त और जयन्त का क्या हुआ महामन्त्री, मैंने कभी न सोचा था कि हमारे देश में इतने प्रबल शत्रु हैं।'' शतयानु ने कहा।

''महाराज! मुझे ऐसा लगता है कि यह घटना हमारे राज्य में नहीं हुई है। यदि भद्र ज़िन्दा रहा, तो हम जान जायेंगे कि जंगल में क्या क्या हुआ था। मैं नहीं सोचता कि शशिकान्त और जयन्त फिर वापस आयेंगे। भद्र को जिस बाण ने घायल किया है, उस पर मुद्रित चिन्हों से..'' कहते कहते, मन्त्री गंगाधर ने अंगोछे से आँसू पोंछे। शतयानु भी विह्वल था। शशिकान्त मन्त्री का इकलौता लड़का था। क्या कहकर उसको आश्वासन दिया जा सकता था।

मन्त्री के दिये हुए बाण को खूब धोकर, खूब साफ़ करके, सेवक ने लाकर फिर उसको दिया। गंगाधर ने मशाल की रोशनी में उस बाण को देखा। चकित होकर उसे शतयानु को देते हुए कहा, ''महाराज, इस बाण को छोड़नेवाला कदम्ब राजा उग्रसेन है। उसके नीचे उसका राज चिह्न ''भालू'' है।''

शतयानु ने बाण को देखा जाँचा। ''महामन्त्री! इसका क्या मतलब है? बिना युद्ध की घोषणा के उग्रसेन ने हम पर आक्रमण किया है? हमारे भेदिये क्या कर रहे हैं? सीमा के सैनिक क्या कर रहे हैं?'' उसने क्रोध में पूछा।

''महाराज! खुल्लम खुल्ला हम पर हमला करने की ताकत उग्रसेन में नहीं है। फिर भी हमारे लिए चौकन्ना रहना अच्छा है। सेनापति से कहिये कि सेना तैयार की जाये और देश की रक्षा की व्यवस्था की जाये।'' गंगाधर ने कहा।

शतयानु ने एक सेवक को, सेनापति को बुलाकर लाने को कहा। इसके बाद वह महल की ओर जा ही रहा था कि एक सैनिक हाँफता हाँफता राजा के पास आया। ''महाराज, कदम्ब राजा के दूत नगर के द्वार के पास हैं। क्या आज्ञा है कि उनको आपके पास लाया जाये?''

''उग्रसेन हमारे पास दूत भेज रहा है?'' शतयानु को आश्चर्य हुआ।

''कितने दूत आये हैं? उनके हाव भाव कैसे हैं? क्या वे कुछ घमंड अकड़ दिखा रहे हैं?'' गंगाधर ने पूछा।

''नहीं तो! वे कुल मिलाकर छः हैं। उनके साथ दो आदमी हैं, जिनकी मुश्कें बंधी हुई हैं। सब ऐसे दिखाई देते हैं, जैसे उनकी जान हथेली पर हो।'' सैनिक ने कहा।

''महामन्त्री, इसके पीछे कोई कुटिल राजनीति तो नहीं है?'' शतयानु ने सिर हिलाते हुए पूछा।

''उग्रसेन ऐसी बातों में बहुत चलता हुआ है? फिर भी यह जानना ज़रूरी है कि उन दूतों द्वारा उसने क्या कहला भेजा है। वे कौन कैदी हैं, जिनकी मुश्कें बाँधकर लाया जा रहा है?'' गंगाधर कुछ देर तक सोचता रहा, फिर उसने सैनिकों को आज्ञा दी, ''अच्छा तो उन दूतों को तुरत सभा मन्दिर में लाओ।'' ***(अभी है)***

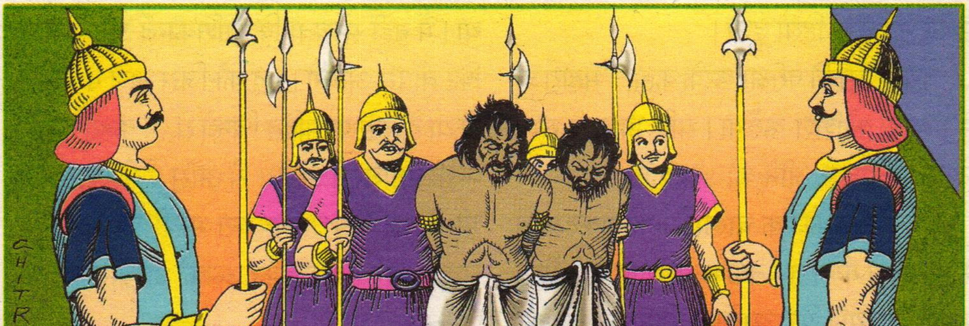

अच्छा शत्रु

धुन का पक्का विक्रमार्क पुनः पेड़ के पास गया, पेड़ पर से शव को उतारा और उसे अपने कंधे पर डाल लिया। फिर यथावत् वह श्मशान की ओर जाने लगा। तब शव के अंदर के वेताल ने कहा, ''राजन्, जो दूसरों की भलाई करते हैं, उनके साथ मैत्री निभाना मानव का सहज गुण है। बड़ों का विचार है कि इस मानव धर्म को कभी भी भुलाना नहीं चाहिये। किन्तु ज्ञानेंद्र नामक उस विचित्र गुरु की कहानी तुम्हें सुनाऊँगा, जिसने एक पिता को सलाह दी कि वह भलाई करनेवाले उस उपकारी को शत्रु माने, जिसने उसके पुत्र का यथाशक्ति उपकार किया।'' फिर वेताल उस ज्ञानेंद्र की कहानी यों सुनाने लगाः

विजयपुर का संपाद धनाढ्य था। उस धनाढ्य की इतनी बड़ी संपत्ति थी कि उसकी पीढ़ी दर पीढ़ी हाथ

वेताल कथा

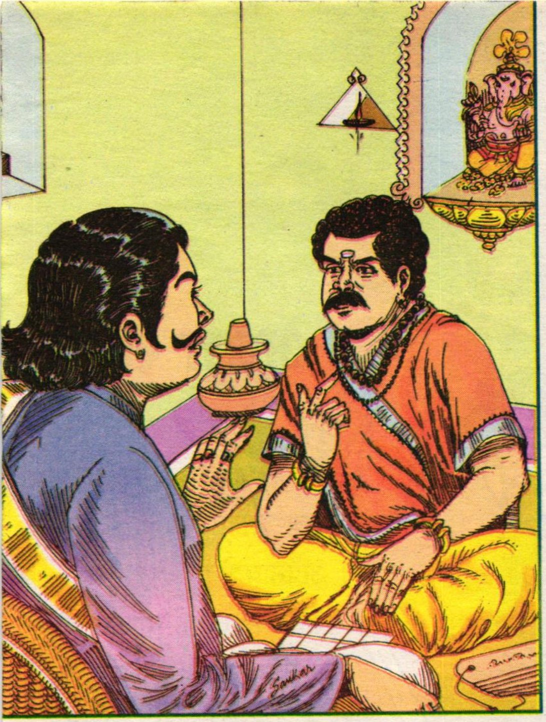

पर हाथ धरे बैठकर खा-पी सकती थी। धनाढ्य होते हुए भी उसमें अहंकार नहीं था। उसका मन निर्मल था। पर दुर्भाग्यवश लंबे अर्से तक वह संतानहीन था। उसके मित्र उसे सलाह दिया करते थे कि भगवान की पूजा करो, तो वे अवश्य तुम्हें संतान प्रदान करेंगे। मानव सेवा को वह भगवान की सेवा मानता था, इसलिए संतान के लिए वह विशेष पूजा नहीं करता था। अंत में उसका विश्वास सही साबित हुआ। उसके एक पुत्र हुआ। उसने उसका नाम रखा निंपाद और बड़े ही प्यार से उसकी परवरिश करने लगा।

निंपाद बचपन से ही निस्तेज और अप्रतिभ था। जैसे-जैसे उसकी उम्र बढ़ती गयी, वैसे-वैसे उसके तौर-तरीक़े भी विचित्र होने लगे। कोई कुछ कहता तो वह नये प्रकार से उसका अर्थ निकालता था। लोग उसे जब समझाते कि उसका यह अर्थ नहीं है तो वह उसे अपना अपमान मानता था। चूँकि वह एक धनाढ्य का इकलौता पुत्र था, इसलिए कोई भी कुछ कहने का साहस नहीं करता था, पर उसकी अनुपस्थिति में सब उसकी हँसी उड़ाते थे। संपाद को लगा कि इसे पढ़ाने से इसकी बुद्धि विकसित होगी, इसलिए उसने उसे गाँव के प्रसिद्ध गुरु के पास भेजा। पर कोई लाभ नहीं हुआ। वैद्यों की भी सलाह ली। वे भी पता लगा नहीं सके कि इसकी त्रुटि है क्या। उसे एक प्रसिद्ध ज्योतिषी के पास भी ले गया और अपने बेटे के स्वभाव के बारे में उन्हें सविस्तार बताया।

ज्योतिषी ने निंपाद की जन्म कुंडली देखने के बाद कहा, ''यह सब ग्रहों का प्रभाव है। अपने पुत्र को किसी और स्थल पर ले जाइये, हो सकता है, इसमें परिवर्तन हो। विद्यावन निंपाद के लिए अनुकूल स्थल है। वहाँ ज्ञानेंद्र नामक महापंडित गुरुकुल चला रहे हैं। आप अपने पुत्र को उनके सुपुर्द कीजिये और जब तक इसमें परिवर्तन न आये, तब तक इसे उन्हीं के पास रखिये,'' उन्होंने यों सलाह दी।

संपाद ज्योतिषी की सलाह पर पुत्र को ज्ञानेंद्र के पास ले गया। उससे संबंधित पूरा विषय उन्हें सविस्तार बताया। ज्ञानेंद्र ने निंपाद से कुछ प्रश्न पूछे, उसकी परीक्षा की और कहा, ''इसकी सोचने की पद्धति दूसरों से बिलकुल भिन्न है और विचित्र भी। इसमें परिवर्तन लाना मुश्किल है।

कह नहीं सकता कि इसमें कितना समय लगेगा। आप कभी-कभी आते रहिये और जानकारी प्राप्त करते रहिये।''

संपाद निंपाद को गुरुकुल में दाख़िल कर चला गया।

साल बीतते गये! निंपाद की सोच में कोई परिवर्तन नहीं आया। हर विषय पर वह विपरीत अर्थ निकालता रहता था, जिसे सुनकर बाकी शिष्य उसकी हँसी उड़ाते रहते थे।

तभी सुरपुर से एक किसान का बेटा सुधीर गुरुकुल में दाखिल हुआ और कुछ ही दिनों में उसने साबित कर दिया कि वह सभी शिष्यों में सर्वश्रेष्ठ है। निंपाद सब शिष्यों में एकदम नीचे था, इसलिए उसने सुधीर की मैत्री माँगी। पर अन्य शिष्यों के समान सुधीर ने भी उसकी हँसी उड़ायी और दोस्ती का हाथ बढ़ाने से इनकार कर दिया।

एक साल के अंदर सुधीर को मालूम हुआ कि उसके पिता कर्ज़ों में डूबे हुए हैं। इसलिए उसने वापस जाने का निर्णय कर लिया। उस समय अपने पुत्र निंपाद को देखने आये हुए संपाद को यह विषय मालूम हुआ। उसने सुधीर से कहा, ''अक़्लमंदों को पढ़ाई छोड़नी नहीं चाहिये। तुम्हारा खर्च मैं भरूँगा। सुरपुर जाकर जानकारी भी प्राप्त करूँगा कि तुम्हारे पिता की समस्या क्या है। उस का हल भी निकालूँगा''।

वह अनावश्यक ही निंपाद की हँसी उड़ाता रहा जबकि उसके पिता बिना माँगे ही उसकी सहायता करने आगे आये। उसे अपनी भूल पर

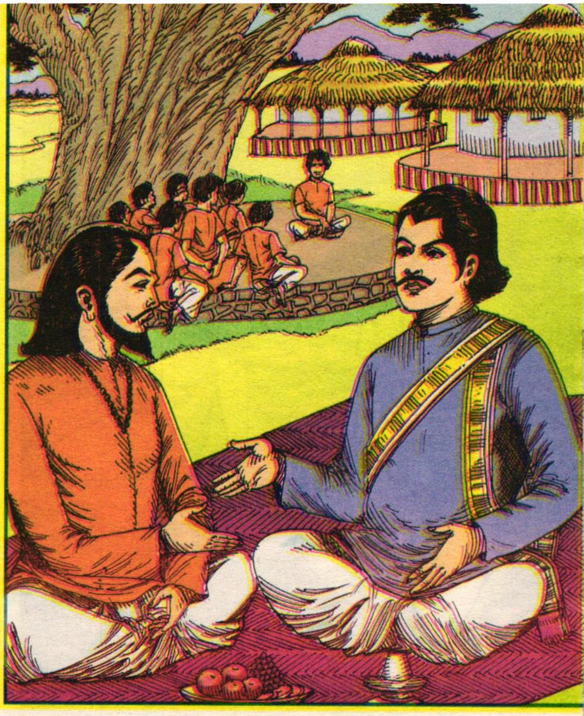

शर्म आयी। उसने निंपाद की मैत्री के लिए हाथ बढ़ाया। पूर्व अनुभव के आधार पर निंपाद को विश्वास नहीं हुआ और उसने संदेह-भरे स्वर में कहा, ''क्या फिर मेरी हँसी उड़ा रहे हो!''

सुधीर ने हँसते हुए कहा, ''मैं तुम्हारी मैत्री इसलिए चाहता हूँ क्योंकि तुम बहुत ही बुद्धिमान हो। गुरुजी जो विषय बताते हैं, उनका अंतरार्थ सही रूप में तुम्हें सूझता है। उनका मैं अध्ययन करूँगा और अपनी बुद्धि विकसित करूँगा।''

सुधीर से अपनी प्रशंसा सुन निंपाद बहुत प्रसन्न हुआ। वह सुधीर का मित्र बन गया। वह सुधीर को बताता कि गुरु के पाठों को उसने कैसे समझा, उन्हें सुन सुधीर चकित रह जाता।

कुछ दिनों के बाद सुधीर ने निंपाद से कहा, ''जान लिया कि तुमने गुरु के पाठों को किस

प्रकार से समझा है। अब तुम भी जानो कि उन पाठों का अर्थ हमने कैसे समझा।''

निंपाद सुधीर के विवरणों को तत्परता से सुनने लगा। क्रमशः गुरु के बताये पाठों को निंपाद भी दूसरों की ही तरह समझने लगा।

कुछ दिनों के बाद निंपाद के बोध में परिवर्तन आने लगा। ज्ञानेंद्र ने उसमें आये परिवर्तन को ध्यान से देखा और सुधीर को बुलाकर कहा, ''जब तक तुमने नहीं बताया, तब तक मैं समझ नहीं पाया कि निंपाद के बोध में अर्थ है। तुम्हारे द्वारा उसके बोध में वृद्धि हुई है। यह कैसे संभव हो पाया?'' चकित ज्ञानेंद्र ने पूछा।

''जिसकी बुद्धि मंद है, उनकी हँसी उड़ाने में अक़्लमंदी की ज़रूरत नहीं है। उसके समर्थन के लिए ही अक़्लमंदी की ज़रूरत है। समर्थन से मंद बुद्धिवालों में उत्साह बढ़ता है और उनका आत्मविश्वास विकसित होता है। निंपाद के साथ मैंने यही किया।'' सुधीर ने कहा।

ज्ञानेंद्र ने उसकी प्रशंसा करते हुए कहा, ''तुम्हारी यह अच्छाई, अगर मालूम हो जाए तो संपाद तुम्हारा अत्यधिक उपकार करेगा।''

तब सुधीर ने विनयपूर्वक कहा, ''संपाद निस्वार्थ होकर जो मदद पहुँचायेगा, उसे मैं स्वीकार करूँगा। आप उनसे यह मत बताइयेगा कि मेरे कारण निंपाद में यह परिवर्तन हुआ है।

ज्ञानेंद्र ने ''हाँ'' कहकर सहमति व्यक्त की। इस बीच अपने वचन के अनुसार संपाद सुरपुर गया और सुधीर के पिता के कर्ज चुका दिये। वह वहाँ जान गया कि उसकी मुसीबतों का कारण उसके रिश्तेदार हैं। जब-जब वह विद्यावन आता, तब-तब वह सुधीर से उसके पिता के कुशल-क्षेम तथा उसके रिश्तेदारों की दुष्टता के बारे में भी कहता रहता था। इस वजह से सुधीर के मन में रिश्तेदारों के प्रति घृणा पैदा हो गयी। उसमें प्रतिकार की ज्वाला भड़क उठी।

और पाँच सालों में सुधीर का विद्याभ्यास पूरा हुआ। जब वह गुरु से विदा ले रहा था, तब उन्होंने कहा, ''तुम अच्छे युवक हो। तुम्हारी अक़्ल भी इस अच्छाई के साथ जुड़ जाए तो तुम बहुत बड़े आदमी बनोगे। अतः किसी भी प्रकार की परिस्थिति में अच्छाई छोड़ना मत।'' सुधीर ने गुरु को नमस्कार करते हुए कहा, ''गुरुवर, मेरे पिता के रिश्तेदार नहीं चाहते कि मैं अपने पिता

के साथ रहूँ और उनकी मदद करता रहूँ, इसीलिए रिश्तेदारों ने मुझे गुरुकुल भेजा है। इसमें उनकी दुष्ट बुद्धि भरी हुई है। बिना कारण के उन्होंने मेरे पिता को अनेक कष्टों में फंसाया। उनसे बदला लेने के बाद ही इस अच्छाई के बारे में सोचूँगा।''

''चाहे कोई कितना भी बड़ा दुष्ट क्यों न हो, उसमें कोई न कोई अच्छा गुण होता है। उस अच्छाई की प्रशंसा करनी चाहिये और बुराई को माफ़ करना सीखना चाहिये। तुम जैसे अच्छे मानव के लिए द्वेष, घृणा, प्रतिकार शोभनीय नहीं हैं। मेरी बात मानो और अच्छाई कभी नहीं छोड़ो।'' ज्ञानेंद्र ने यों समझाया, फिर भी बदले की भावना उसमें जैसी की तैसी बनी रही।

उस समय संपाद वहीं उपस्थित था। सुधीर के पिता के रेश्तेदारों के अत्याचारों को वह बखूबी जानता था, इसलिए उसने सुधीर का ही समर्थन किया। उसने सुधीर से कहा भी कि साथ रहकर मैं भी तुम्हारी मदद करूँगा।

ज्ञानेंद्र ने मुस्कुराते हुए कहा, ''तुम्हें किस प्रकार से सुधीर की सहायता करनी है, इसका निर्णय परिपूर्ण विद्वान तुम्हारा पुत्र निंपाद ही करेगा। मानते हो न?''

संपाद ने गुरु की कही बात मान ली; गुरु ने निंपाद को बुलाकर विषय बताया। थोड़ी देर सोचने के बाद निंपाद ने अपने पिता से कहा, ''सुधीर के शत्रुओं से बदला लेने में भाग लेना आपकी जिम्मेदारी नहीं है। आप को भी उसका शत्रु बनना चाहिये। वही इनका प्रत्युपकार है।''

उसके बाद निंपाद सुधीर की ओर मुड़कर बोला, ''तुम्हारे द्वारा मेरे बोध में वृद्धि हुई है, इसके लिए मैं तुम्हें एक सलाह देना चाहूँगा। तुम्हारे पिता को जिन रिश्तेदारों ने कष्ट पहुँचाये है उनसे बदला लेने से पहले, मेरे पिता जिन्होंने तुम्हें पहले मदद की थी, जो अभी शत्रु बने हैं उनसे बदला लेने के लिए प्रयत्न करो और उसके बाद अपने रिश्तेदारों के व्यवहार पर ध्यान देना।''

इसे सुनकर संपाद और सुधीर चौंक उठे और गुरु की ओर मुड़कर देखा। गुरु ने निंपाद की बातों का समर्थन करते हुए सिर हिलाया।

वेताल ने यह कहानी सुनाने के बाद कहा, ''राजन्, निंपाद ने कहा कि उपकार करनेवाले से शत्रुता करना ही प्रत्युपकार है। इसे देखते हुए लगता है कि विद्याभ्यास में जो थोड़ी-बहुत

उसकी बुद्धि थी, वह और क्षीण हो गयी। विज्ञ गुरु ने उसका समर्थन किया। इसका अंतरार्थ क्या हो सकता है? नीति शास्त्र घोषित करते हैं कि भलाई भूल जाना एक ऐसा पाप है, जिसका कोई पश्चात्ताप नहीं। ऐसी स्थिति में जो भलाई करते हैं, उसके साथ शत्रुता मोल लेना कैसे धर्म कहा जा सकता है। मेरे इन संदेहों के समाधान जानते हुए भी चुप रह जाओगे तो तुम्हारे सिर के टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे।''

विक्रमार्क ने कहा, ''सुधीर अच्छा युवक है, मेधावी है। उसके प्रोत्साहन की वजह से ही निंपाद में असंभव परिवर्तन आया। सुधीर ने साबित कर दिखाया कि अच्छाई के साथ अक़्लमंदी जुड़ जाए तो असाध्य कार्य को भी साध्य कर सकते हैं। ऐसा व्यक्ति बदला लेने पर तुल जाए, मन द्वेष से भर उठे तो यह समाज के लिए हानिकर साबित होगा। उसके क्रोध का कारण है, यह विश्वास कर बैठना कि रिश्तेदारों में अच्छे गुण हैं ही नहीं। संपाद ने सुधीर को मदद करके, और उसके रिश्तेदारों की दुष्टता के बारे में कहकर उनके प्रति घृणा पैदा की। उसे अगर यह जानना हो कि शत्रुओं में भी अच्छाई होती है तो पहले उसका एक शत्रु होना नितांत आवश्यक है। संपाद की अच्छाई पर उसका असीम विश्वास है। इसलिए वह शत्रु भी बन जाये तो सुधीर उसकी अच्छाई को पहचानेगा और उसकी मैत्री के लिए सुधीर प्रयत्न करेगा। इस के आधार पर, रिश्तेदारों में भी अच्छाई को पहचानेगा। और बुराई की उपेक्षा करेगा। इससे प्रतिकार की भावना कम हो जायेगी।

''इससे समाज का भला होगा। विद्वान निंपाद ने गहराई में जाकर इस सत्य को जाना और प्रकट किया। इसीलिए गुरु ने उसका समर्थन किया। धर्म सूत्रों का उपयोग संदर्भों के अनुरूप अमल में लाना होता है। संपाद जिस शत्रुत्व की भावना को अपनाना चाहता है, वह शत्रुत्व ही सुधीर का भला करेगा। वह धर्म होगा।'' राजा के मौन-भंग में सफल वेताल शव सहित गायब हो गया और फिर से पेड़ पर जा बैठा।

(आधार : ''वसुंधरा'' की रचना)

समाचार झलक

यह रॉबोट बात कर सकता है!

इमिव (EMIEW) २ नामक मानवीय विशेषताओं से युक्त रॉबोट जापान की मुख्य इंजिनियरिंग कम्पनी हिटैची की नवीनतम खोज है। यह चल सकता है, घुटने टेक सकता है, पहियों पर घूम सकता है और बात कर सकता है। दोनों पैरों पर खड़ा होने पर यह ८० सें.मी. ऊँचा हो जाता है और इसका वजन सिर्फ १३ के.जी. है। यह ऐसे रॉबोट निर्माण की ओर जो मनुष्यों के साथ रह कर भिन्न-भिन्न घरेलू कामों में हाथ बंटाये, एक कदम है। इमिव एक कार्यालय के समान आगन्तुकों का स्वागत कर सकता है और उन्हें कैबिन्स में ले जा सकता है, फाइलें और ड्रिंक्स ला सकता है। यह ऑफिस के समय के बाद सुरक्षा का काम भी कर सकता है। एक रॉबोट से और अधिक क्या काम चाहते हैं?

फेफड़े की ताकत

केरल में, कोची निवासी शेल्फी जोस की छाती के ऊपर से २० मोटर बाइक्स २० मिनट में ६७८ बार गुजर गये। वह विश्व कीर्तिमान बनाने का प्रयास कर रहा था। विगत १६ मार्च को इस ३८ वर्षीय डैन ब्लैक बेल्ट कराटे चैम्पियन ने अर्नाकुलम में भीड़ भरे मेरिन ड्राइव पर अपनी शारीरिक शक्ति का प्रदर्शन किया। वह एक क्वायर मैट पर पीठ के बल लेट गया और अपनी छाती पर एक लकड़ी की पटरी रखवा दी। उसका संकेत पाकर एक मोटर बाइक पूरी गति के साथ उसके ऊपर से गुजर गई। एक सेकेण्ड के बाद दूसरी बाइक, फिर तीसरी-गिनती चलती रही। उसके ऊपर से ५०१ बार मोटर बाइक जाने के बाद जोश को उठना था। परन्तु फिर भी वह लेटा रहा। गिनती ६०० तक, फिर ६५० तक पहुँच गई। जब उसने उठने का संकेत दिया, तब तक २० सवार ६७८ बार उसके ऊपर से गुजर चुके थे। तब वह मुस्कुराता हुआ उठा और भीड़ का अभिवादन किया जिसमें उसकी पत्नी और दो बच्चे थे। गिनती करनेवालों में गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड्स का एक प्रतिनिधि था। शेल्फी जोस ने पत्रकारों को बताया कि अगली बार वह १०० जीप सवारों को अपने ऊपर लेने का प्रयास करेगा।

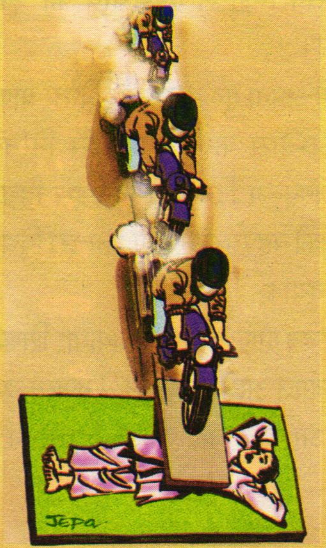

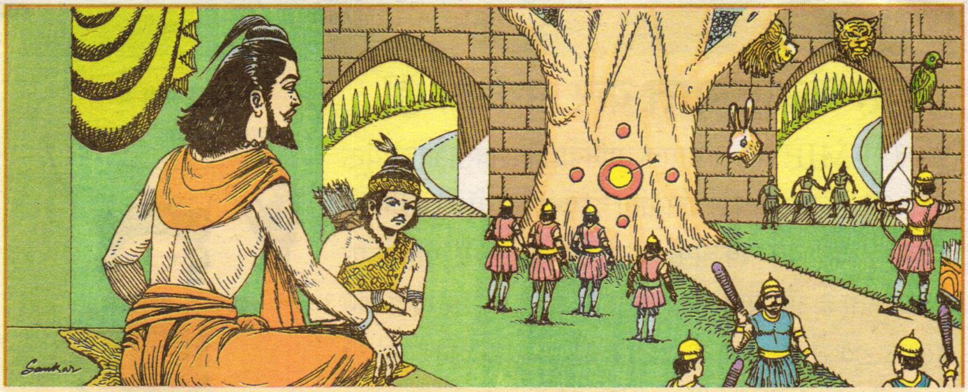

एकलव्य

दृढ़ संकल्प, अनुपम आत्म-संस्कार तथा निष्कलंक गुरुभक्ति के लिए सुप्रसिद्ध वीर कुमार एकलव्य हस्तिनापुर के निकट के अरण्यों में निवास करनेवाले भील राजा का पुत्र था। बचपन से ही आखेट के प्रति उसकी विशेष रुचि थी, अतः गुरु के द्वारा धनुर्विद्या सीखने की उसकी तीव्र इच्छा थी।

उस काल में द्रोणाचार्य हस्तिनापुर के कौरव और पाण्डव राजकुमारों को धनुर्विद्या सिखाते थे।

जब एकलव्य को यह मालूम हुआ, तब बड़े ही उत्साह के साथ वह हस्तिनापुर गया और द्रोणाचार्य से मिला। अपने बारे में उसने विवरण दिया और उसे अपना शिष्य बनाने की विनती की।

परंतु द्रोणाचार्य ने यह कहकर उसकी विनती ठुकरा दी कि वह एक भील है और क्षत्रिय कुमारों को ही वे विद्या सिखाते हैं।

द्रोणाचार्य की बातों ने एकलव्य को बहुत ही दुखी और निराश कर दिया। पर फ़ौरन उसने अपने आपको संभाल लिया और गुरु द्रोणाचार्य को सविनय प्रणाम करके वहाँ से निकल पड़ा। पर उसके अंदर की आशा ज्योति नहीं बुझी। उसका संकल्प वैसा ही बना रहा। जैसे ही जंगल में पहुँचा, उसने मिट्टी से द्रोणाचार्य की एक प्रतिमा बनायी।

उसने उन्हें अपना गुरु माना और निरंतर बाण चलाने का अभ्यास करने लगा। इस निरंतर प्रयास के फलस्वरूप दिन प्रति दिन इस विद्या की बारीकियों को वह समझने लगा और इस विद्या में निपुण बन गया।

तभी एक दिन द्रोणाचार्य के राजकुमार शिष्य शिकार करने जंगल आये। वे जंगल से गुजरते हुए उस जगह पर आ पहुँचे जहाँ एकलव्य रहता था।

पौराणिक युवा नायक - ३

उसके साथ आये हुए शिकारी कुत्तों में से एक कुत्ता अलग होकर अकेले जंगल में जाने लगा। उसने एकलव्य को देखा, जिसका शरीर हिरन के चर्म से ढका हुआ था, जिसके बाल जटाएँ बनकर लटक रहे थे। उस समय एकलव्य बाणों का प्रयोग सीखने में तल्लीन था। उसे देखते ही कुत्ता भौंकने लगा।

एकलव्य ने बिना उसे देखे, उसकी ध्वनि के आधार पर उसके ऊपर सात बाणों की वर्षा की। कुत्ते का मुख बाणों से भर गया, इसलिए उसने भौंकना बन्द कर दिया। पर आश्चर्य ! उसके मुख में तनिक भी चोट नहीं आई। कुत्ता राजकुमारों की ओर चुपचाप लौट गया।

कुत्ते के मुँह के अंदर चुभे बाणों को देखकर राजकुमारों ने जान लिया कि वह अवश्य ही कोई महान धनुर्धारी होगा। वे उसकी खोज में निकल पड़े। उन्होंने देखा कि एक युवक पेड़ के नीचे धनुर्विद्या का अभ्यास कर रहा है। उन्होंने उससे पूछा, ''तुम कौन हो? तुम्हारे पिता कौन हैं? गुरु कौन हैं?''

''मैं एक भील जाति के राजा का बेटा हूँ। मेरा नाम एकलव्य है। द्रोणाचार्यजी को अपना गुरु मानकर धनुर्विद्या का अभ्यास कर रहा हूँ।'' कहते हुए उसने द्रोणाचार्य की मिट्टी से बनी प्रतिमा दिखायी।

राजकुमार हस्तिनापुर लौटे और उन्होंने द्रोणाचार्य को यह समाचार बताया। द्रोण आश्चर्य में डूब गये। मुख्यतया अर्जुन को इस बात पर

चिंता होने लगी कि एकलव्य उससे बेहतर धनुर्धारी है और इस विद्या में उससे अधिक निपुण है।

गुरु द्रोणाचार्य जब अकेले थे, तब उसने उनसे कहा, ''आपने वचन दिया था कि दुनिया में धनुर्विद्या में मुझसे बड़ा धनुर्धारी नहीं होगा। किन्तु एकलव्य ने साबित कर दिया कि इस विद्या में वह मुझसे अधिक प्रवीण है।'' उसकी बातों में दुख और रोष भरे हुए थे।

''जो वचन मैंने दिया, उसे अवश्य निभाऊँगा। इस एकलव्य के बारे में मैं बिलकुल अनभिज्ञ हूँ, जिसने तुम्हारे मन में भय उत्पन्न किया,'' द्रोणाचार्य ने उसे सांत्वना दी और केवल अर्जुन को लेकर उस जगह पर गये, जहाँ एकलव्य रहता था।

धनुर्विद्या के अभ्यास में मग्न एकलव्य ने

द्रोणाचार्य को देखते ही सविनय प्रणाम किया और उन्हें बिठाकर उनका आतिथ्य सत्कार किया। फिर हाथ जोड़कर उसने कहा, ''अपने शिष्य को ढूँढते हुए आप इतनी दूर चले आये। आप आदेश भेजते तो मैं स्वयं उपस्थित हो जाता।''

''क्या तुम सचमुच मेरे शिष्य हो?'' द्रोण ने पूछा।

''हाँ, निस्संदेह मैं आपका शिष्य हूँ। आपको गुरु मानकर ही मैं इस विद्या का अभ्यास कर रहा हूँ।'' एकलव्य ने सविनय कहा।

''अगर सचमुच ही मेरे शिष्य हो तो मेरी गुरु दक्षिणा कहाँ है?'' द्रोण ने पूछा।

''कृपया बताइये कि गुरु दक्षिणा में आपको क्या चाहिये? तुरंत प्रस्तुत करूँगा'', एकलव्य ने कहा।

''तुम गुरु दक्षिणा के रूप में मुझे क्या दे सकते हो?'' द्रोण ने पूछा।

''गुरु दक्षिणा के रूप में आप जो भी माँगेंगे दूँगा। यह शरीर, मेरा प्राण सब कुछ आपको अर्पित करने के लिए सन्नद्ध हूँ'', एकलव्य ने दृढ़ स्वर में कहा।

''कहीं अपने वचन से मुकर तो नहीं जाओगे?'' द्रोण ने संदेह भरे स्वर में एकलव्य से पूछा।

''दिये हुए वचन से मुकर जाना आत्महत्या के समान है। हमारी जाति में ऐसा होता ही नहीं।'' एकलव्य ने दृढ़ स्वर में कहा।

''ठीक है। ऐसी बात है तो अपना दायाँ अंगूठा गुरु दक्षिणा के रूप में मुझे अर्पित कर दो।'' द्रोण ने निःसंकोच कहा।

''आपका आदेश शिरोधार्य है।'' कहते हुए बिना हिचकिचाये उसने अपना दायाँ अंगूठा काट कर द्रोण को समर्पित कर दिया।

''बहुत ही संतुष्ट हुआ, सुखी भव'', कहकर द्रोण ने उसे आशीर्वाद दिया और वहाँ से निकल पड़े। अर्जुन से मिलकर उन्होंने उसे यह विषय बताया और उसकी परेशानी दूर कर दी।

आज भी किसी भी क्षेत्र में अपनी मेहनत के बल पर जो असाधारण प्रतिभा दर्शाते हैं, उनकी तुलना एकलव्य से की जाती है।

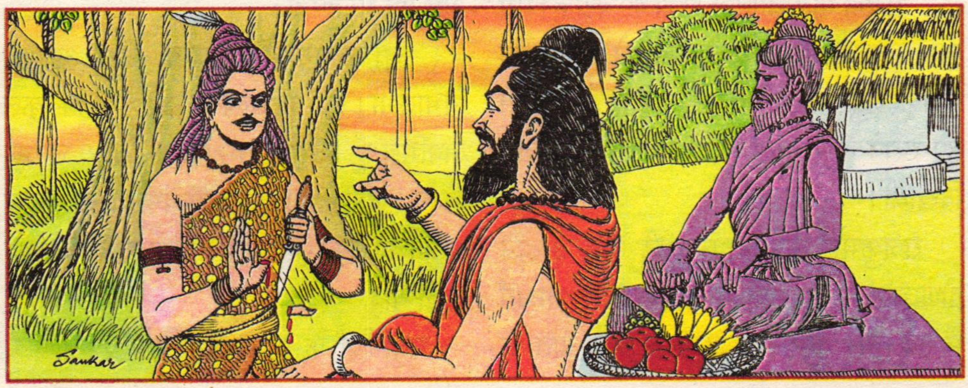

कहानी, जो मुझे सबसे अधिक पसन्द थी - १४

के.ए.अब्बास की कहानी "स्कूल में तीन कब्र" सन् १९८३ में "मेरी प्रिय कहानी" शृंखला के अन्तर्गत प्रकाशित हुई थी। इसे २५ वर्षों के बाद पुनः प्रस्तुत करके बहुसर्जक लेखक और लोकप्रिय फिल्म निर्माता को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। ख्वाजा अहमद अब्बास (१९१४-१९८७) का जन्म पानीपत में हुआ। उनके दादा ख्वाजा गुलाम अब्बास १८५७ के विद्रोहियों में से एक थे और पानीपत के पहले शहीद थे। अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी से कानून में स्नातक की उपाधि लेने के बाद के.ए.अब्बास ने पत्रकारिता से अपने जीवन की शुरुआत की। उन्होंने अंग्रेजी, हिन्दी और उर्दू में ७० से अधिक पुस्तकों की रचना की। उन्हें अनेक भारतीय तथा विदेशी भाषाओं में अनूदित किया गया है।

स्कूल में कब्र

मुझे पक्का विश्वास है कि आप सब ने मेरे जन्म स्थान का नाम सुना है। पच्चीस हजार की आबादी वाले शहर की चर्चा इतिहास की सभी पुस्तकों में की गई है, क्योंकि पानीपत की तीन लड़ाइयाँ इतिहास का एक भाग हैं।

अपने बचपन की पहली यादों में संगमरमर की तीन कब्रें अभी भी बसी हुई हैं, जिन पर मध्यावकाश के वक्त चढ़ कर हम उलटे सिर करके लटका करते थे। पानीपत में बसनेवाले हमारे पहले पूर्वज ख्वाजा मलिक अली थे जो अफगान-सोवियत सीमा पर हेरत से गियासुद्दीन बलबन के शासन के समय आये थे। वे अरबी और फारसी के बहुत बड़े विद्वान थे। राजा ने उन्हें तुरन्त कर मुक्त थोड़ी जमीन दे दी और पानीपत का काजी बहाल किया। उस समय वे स्थानीय मजिस्ट्रेट थे और इन पर बड़े पैमाने पर लौकिक और धर्म-निरपेक्ष मामलों के काम-काज और फर्ज की जिम्मेवारी थी।

पानीपत के काजी को सौंपे गये पहले मुकदमों में से एक था एक सूफी सन्त बू अली शाह कलन्दर के खिलाफ जिन पर विधर्मी होने का आरोप था। पानीपत के कट्टरपंथियों का कहना था कि वे अल्लाह के बारे में हास्यास्पद और अनादरसूचक शब्दों का प्रयोग करते हैं और उन्हें अपना प्रियपात्र मानते हैं। लेकिन यह सूफी परम्परा के अनुकूल था जिसमें अल्लाह को 'प्रेमिका' की तरह माना जाता है और उन पर हर तरह का स्नेह और प्यार उड़ेला जाता है। इसीलिए सूफी सन्त की मृत्यु को सर्वोच्च सत्ता के साथ 'विवाह' के समान उत्सव के रूप में मनाया जाता है।

काजी सूफी परम्परा और अनुष्ठानों से परिचित था, इसलिए उन्होंने सूफी सन्त को निर्दोष घोषित करते हुए कहा कि वे अल्लाह के आदमी हैं, यद्यपि जन विश्वास के अनुसार वे पागल (कलन्दर) माने जाते हैं। यही कारण है कि उनकी मृत्यु के पाँच सौ वर्षों के बाद भी अब तक उन्हें कलन्दर साहेब कहा जाता है।

हमलोगों का स्कूल, उनकी समाधि के विशाल प्रांगण में बने मण्डपों में से एक मण्डप में चलाया जाता था, इसीलिए इसे "कलन्दर साहेब का स्कूल" कहा जाता था। यह सूफी सन्त के मकबरे की छाया में था और कब्रें हमारे खेल के साथी थे जिनके साथ हमने अपना बचपन बिताया।

बू अली शाह ने अपने जीवन में और उससे भी अधिक जीवन के बाद पानीपत के हिन्दुओं और मुसलमानों में तथा आस पास के शहरों और गाँवों में जो विलक्षण श्रद्धा-भक्ति पैदा कर दी, उससे यह पता चलता है कि स्थानीय लोगों पर सूफी सन्तों का बहुत ही गहरा भावनात्मक तथा आध्यात्मिक प्रभाव था।

सूफी सन्तों ने हिन्दुओं का धर्म परिवर्तन नहीं किया, बल्कि स्थानीय लोगों के साथ आध्यात्मिक सम्बन्ध स्थापित किया। यह बड़ी दिलचस्म बात है कि उनके बारे में युगों से जो जनश्रुतियाँ प्रचलित हुई हैं, वे मूल रूप से वे ही हैं जो भारत के अन्य भागों में समसामयिक भक्त सन्तों के बारे में कही जाती हैं।

उदाहरण के लिए, सन्त तुका राम के बारे में यह कहा जाता है कि उसने उद्दण्ड स्थानीय शासक को सीख देने के लिए दीवार को हवा में उड़ने का आदेश दिया। उसी तरह बू अली शाह के बारे में भी ऐसी ही जनश्रुति प्रचलित है। एक दिन वे हमेशा की तरह चिथड़ों में लिपटे, जाड़े के मौसम में एक टूटी दीवार पर बैठे धूप सेंक रहे थे। तभी दिल्ली का सुलतान सुसज्जित हाथी पर सवार उधर से गुजरा। "सलाम बू अली शाह कलन्दर", राजा ने अभिवादन किया जिसने इस 'पागल' सन्त के बारे में काफी कुछ सुन रखा था।

सन्त ने कोई जवाब नहीं दिया।

राजा का क्रोध भड़क उठा। उसने कुछ ऐसा ही कहा, "हे भिखारी, देखता नहीं कि यद्यपि राजा हाथी पर सवार है पर फिर भी तुम से बात करने की कृपा कर रहा है।"

सन्त ने राजा को देखा और कहा, "हे घमण्डी

राजा, अपने हाथी पर इतना घमण्ड! पर यदि अल्लाह चाहे तो यह टूटी हुई दीवार तुम्हारे हाथी से अधिक तेज चलेगी।'' और जनश्रुति के अनुसार, दीवार आगे बढ़ने लगी और उसने हाथी को पीछे छोड़ दिया। यह चमत्कार देख कर राजा हाथी से नीचे उतरा और सन्त के चरणों में गिर पड़ा।

हर साल कलन्दर साहेब का उर्स बड़े जोश के साथ मनाया जाता था। यह मेले से भी अधिक बड़ा होता था। विशाल प्रांगण में पूरा बाजार लग जाता था। उसमें मसालेदार नमकीन, मिठाई, ठण्ढे शरबत और फालूदा की दुकानें होती थीं। खिलौनों की भी दुकानें होती थी, रंगीन मिट्टी के खिलौने, करताल बजाते मसखरे, सफेद घोड़े, हरे तोते। कपड़ों की भी दुकानें होती थीं- जापानी नकली रेशम, काफी सस्ते, हालांकि उनमें सुनहली और रूपहली चमक होती थी। हाथ से बुने स्थानीय सूती कपड़े भी होते थे, पर वे चमक-दमक में विदेशी कपड़ों का मुकाबला नहीं कर सकते थे।

रात में पैगम्बर या सूफी सन्तों के बारे में कौव्वालियाँ होती थीं जिनकी संगत के लिए ढोल, झांझ लय के साथ बजाते जाते थे। फकीर लोग अपनी कलाइयाँ हिला कर अपनी लोहे की पहनी चूड़ियों से ताल मिलाते थे।

और अक्सर, कोई सूफी या कोई और अनाड़ी आदमी अथवा कोई फकीर कौव्वाली के बीच-बीच में 'हाल' द्वारा समर्थन करता था अथवा सिर या पूरे शरीर को आनन्द के उन्माद में आगे-पीछे झूमता हुआ हिलाता था। वे कौव्वाली की ताल पर नाचने भी लगते थे। ईरान के नाचते दरवेशों की तरह पुरुष नाचने लगते और हरेक व्यक्ति उसके आनन्दोन्माद पर चकित रह जाता। गायक और शक्ति लगा कर गाने लगते। तालियाँ और तेजी से लय के साथ बजने लगतीं। तथा 'पाक' नाचनेवाला घूमता रहता जब तक वह बेहोशी की हालत में संगमरमर के फर्श पर गिर नहीं पड़ता।

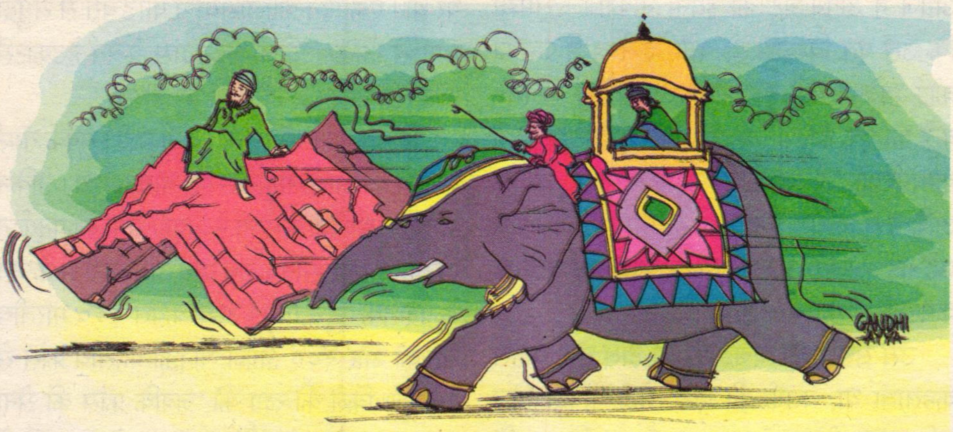

महापुरुषों के जीवन की झाँकियाँ-३२

दो गोलियों के बीच एक दीर्घ अन्तराल

इतिहास में ऐसे उदाहरण हैं जिनसे पता चलता है कि एक मात्र गोली ने घटना क्रम को बदल दिया है। किन्तु हम एक मात्र ऐसी गोली की कहानी कहने जा रहे हैं जिसने इतिहास को इसलिए बदल दिया क्योंकि उसका कारतूस अनदगा रह गया।

यह १८वीं शताब्दी का तीसरा दशक था। एक अंग्रेज ने अपने बेटे को इतना नाकाबिल समझा कि उसे पूरा विश्वास हो गया, इंग्लैण्ड में उसका कोई भविष्य नहीं है। लेकिन ऐसे लोगों के लिए कूड़े का एक ढेर था- भारत। ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी को, जो आयी थी व्यापार करने पर, देश के अधिक से अधिक हिस्से को हथियाने के लालच में पड़ गई, अलग-अलग पदों के लिए सब तरह के कर्मचारियों की जरूरत थी।

उस लड़के को चेन्नई में, जो हाल तक मद्रास कहलाता था, क्लर्क की एक छोटी नौकरी मिल गई। उसका वेतन पाँच पाउण्ड था– मासिक नहीं, वार्षिक। उसके लिए जिन्दा रहना मुश्किल हो गया और एक दिन उसने फैसला किया कि अब जिन्दा नहीं रहेंगे। वह अकेला रहता था। किसी से दोस्ती करने में संकोच करता था। गरीबी और नीरसता से विवश होकर उसने अपनी पिस्तौल भर ली, अपनी छाती पर उसकी नली रखी और घोड़ा दबा दिया।

घोड़ा ठीक से जरूर दबाने पर बस इतना ही हुआ। कारतूस नहीं दगा। क्या हथियार में कोई खराबी थी? उसने खिड़की से समुद्र की तरफ पिस्तौल की नली घुमाई और फायर किया। धमाके की आवाज के साथ कारतूस ठीक से दग गया।

'क्या मेरी किस्मत में जिन्दा रहना लिखा है? देखते हैं।' उसने सोचा और मरने का विचार बदल दिया।

यह वह समय था जब ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी और फ्रेन्च ईस्ट इण्डिया कम्पनी के बीच द्वन्द्व पराकाष्ठा पर था। एक दिन फ्रांसिसियों ने पांडिचेरी से समुद्री मार्ग से जाकर अंग्रेजों के मद्रास स्थित हेडक्वाटर्स फोर्ट सेंट जॉर्ज पर आक्रमण कर दिया।

ब्रिटिश सेना को मुँहकी खानी पड़ी। युवक रॉबर्ट क्लाइव को अन्य लोगों के साथ भागना पड़ा। लेकिन जब ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने अपनी सेना का पुनर्गठन किया, तब वह सैनिक बन गया और तेजी से कैप्टन के पद तक पहुँच गया। उसने केवल ३०० भारतीय सैनिकों और २०० अंग्रेज सैनिकों के साथ फ्रांस से आरकॉट किले की रक्षा की, जबकि फ्रांस की सेना बारह हजार थी। फ्रांस की इस पराजय के बाद अंग्रेजों

के साथ उसकी औपनिवेशिक प्रतिद्वंद्विता में मोड़ आ गया। ब्रिटिश अपने विजय पथ पर आगे बढ़ते गये।

उसकी वार्षिक आय पाँच पाउण्ड से बढ़कर चालीस हजार पाउण्ड हो गई। वह १७५३ में एक धनी व्यक्ति बन कर इंग्लैंड लौट गया, लेकिन दो वर्षों के बाद पुनः भारत लौट आया। उसकी सैनिक प्रतिभा तो स्थापित हो ही चुकी थी, उसने कम्पनी तथा अपने व्यक्तिगत लाभ के लिए भी छल-कपट और षड्यन्त्र रचने में अपनी बुद्धि का प्रयोग किया। जब कि व्यक्तिगत व्यापार करने की उससे अपेक्षा नहीं की जाती थी, फिर भी उसने नियम भंग किया। किन्तु एक प्रशासनाधिकारी होने के नाते उसने अन्य अधिकारियों को ऐसा करने से रोका।

उसे कम्पनी के हित को सुदृढ़ करने के लिए कलकत्ता भेजा गया। उसने बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला पर बिना युद्ध की घोषणा के आक्रमण कर दिया और जून १७५७ में उसे पलासी के मैदान में पराजित कर दिया। कम्पनी ने उसे बंगाल का गवर्नर बना दिया। निस्सन्देह अनेक अन्य युद्ध भी हुए और क्लाइव को सबमें विजय मिलती गई, किन्तु वह अधिकांशतः इसलिए कि वह अपने लक्ष्य की सिद्धि के लिए हमेशा अनैतिक साधनों का सहारा लेने के लिए तैयार रहता था। उसके अपने अधिकारियों ने उसके खिलाफ विद्रोह कर दिया, लेकिन इसकी चालाकी के सामने उनकी एक न चली।

अन्त में वह सेवा-निवृत्त होकर यह सपना लिए घर लौट गया कि उसका हीरो की तरह स्वागत किया जायेगा। वह इंग्लैण्ड के सबसे धनी व्यक्तियों में से एक माना जाने लगा। उसने नवाब के ओहदे के लायक महल और जागीर खरीदे। लेकिन जनता का सम्मान उसे नहीं मिला। ब्रिटिश संसद में उस पर भ्रष्टाचार और निर्ममता का आरोप लगाया गया। उसने अपने बचाव में कहा, "उस स्थिति पर विचार करो जिसमें विजय ने मुझे ला रखा था। एक बड़ा राजकुमार मेरी मर्जी पर निर्भर करता था। एक समृद्ध शहर मेरी मेहरबानी का मुहताज था।"

लेकिन उसके देशवासी प्रभावित नहीं हुए। "नवाब" अधिक से अधिक कुंठित होता गया। एक दिन १७७४ में उसने एक छूरा निकाला और अपनी छाती में उसे घोंपने ही वाला था कि उसने विचार बदल दिया। फिर उसने पिस्तौल उठाई। क्या उसे आशा थी कि एक बार फिर हथियार काम नहीं करेगा और विधाता के मन में उसके लिए एक और ऐतिहासिक उपलब्धि सुरक्षित है? हमलोग नहीं जानते। जो ज्ञात है वह यह कि इस बार पिस्तौल ने घायँ के साथ काम किया और तब लॉर्ड क्लाइव फर्श पर लुढ़क गया। ***(एम.डी.)***

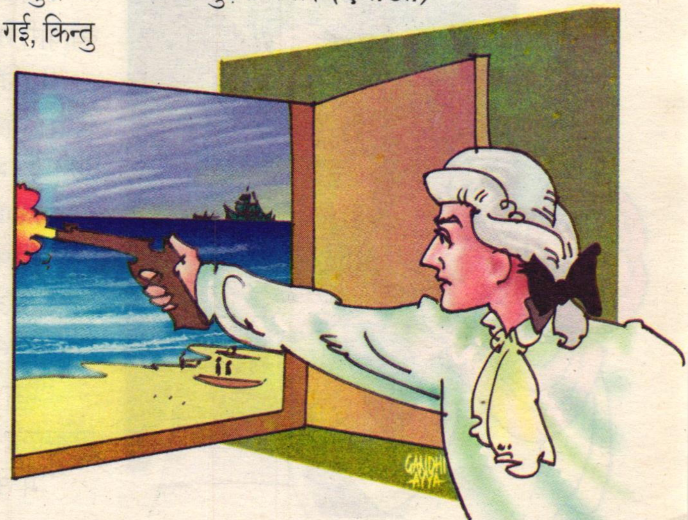

सत्य की शिनाख़्त

बादशाह अकबर के पास फैसले के लिए अनेक विवाद लाये जाते थे। एक दिन, जब वे दरबार कर हे थे, एक व्यापारी ने दरबार में आकर बादशाह को झुक कर सलाम किया और उनकी इजाज़त का इन्तजार करने लगा।

जब बादशाह ने उसकी तरफ देखा, तब व्यापारी बोला, ''शहनशाह! मैं मधुसूदन पाण्डे हूँ और घी का व्यापार करता हूँ। एक महीना पहले, मेरा दोस्त असलम खान, जो मेरे समान ही घी का व्यापार करता है, मेरे पास आया और उसने मुझसे २० मोहरों का कर्ज माँगा। उसने १५ दिनों के अन्दर इसे वापस करने का वादा किया। किन्तु उसने यह कर्ज अभी तक वापस नहीं किया।''

''क्या तुमने यह रकम उससे वापस माँगी?'' बादशाह ने पूछा।

''आलमपनाह! मैंने अनेक बार माँगा है। उसने ऋण चुकाने के लिए अधिक दिनों की माँग की। आज उसने ऋण देने से इनकार करते हुए कहा कि उसने मुझसे कभी कर्ज लिया ही नहीं। उसने बल्कि यह दलील दी कि उसे कभी भी किसी से कर्ज लेने की जरूरत नहीं पड़ी।'' व्यापारी ने अपनी बात स्पष्ट की।

''क्या तुमने, जो रकम दी, उसकी रसीद ली?'' बादशाह ने पूछा।

''नहीं आलमपनाह! मैंने उस पर विश्वास किया।

''तो यह उसके खिलाफ तुम्हारा बयान है?'' बादशाह की आवाज तेज और तीखी थी।

''शहनशाह! मैं सच बयान कर रहा हूँ।'' व्यापारी ने झुक कर कहा।

''यदि तुम सच बोलते हो तो तुम्हारा पैसा वापस मिल जायेगा।'' बादशाह ने व्यापारी को जाने का संकेत किया।

बादशाह बीरबल की तरफ मुड़ा। ''क्या आप इस मामले की तहकिकात करेंगे?''

शाम को बीरबल ने मधुसूदन पाण्डे को बुलाया और अपनी शिकायत को दुहराने के लिए कहा।

''पैसे-कौड़ी के मामले में लिखित सबूत लेना बुद्धिमानी कहलाती है।'' बीरबल ने कहा।

''मैं असलम खान को २० वर्षों से जानता

था। इसलिए मैंने उस पर विश्वास किया।'' मधुसूदन पाण्डे ने कहा, ''कृपया कर्ज वापस दिला दें।''

बीरबल ने उसे यह आश्वासन देकर भेज दिया कि उसके साथ न्याय किया जायेगा।

बीरबल ने असलम खान को बुलाया। अच्छी पोशाक पहने एक ऊँचे कद का व्यक्ति अन्दर आया। ''मैं असलम खान हूँ। मैं आप की क्या खिदमत कर सकता हूँ, हुजूर?''

''आप को बुलाया, इस असुविधा के लिए खेद है।'' बीरबल ने विनम्रता और शिष्टता के साथ कहा, ''मुझे आप के खिलाफ एक शिकायत मिली है।''

''मेरे खिलाफ? बीरबल जी! मैंने कभी किसी को शिकायत का कोई मौका नहीं दिया। मैं एक ईमानदार इनसान हूँ। एक बार भी मैंने कोई अपराध नहीं किया है।'' असलम खान ने इस प्रकार व्यवहार किया मानो उसे आश्चर्य हो रहा हो।

बीरबल ने मधुसूदन पाण्डे की शिकायत के कागजात निकाले और असलम खान की ओर बढ़ा दिये।

''मैं पाण्डे जी से कर्ज क्यों लूँगा? मेरे पास काफी जमीन जायदाद है। मेरा अपना घर है। मैं व्यापार से अच्छा खासा कमा लेता हूँ। इसलिए मैं कर्ज क्यों लूँगा? पाण्डे जी झूठ बोल रहे हैं।'' असलम खान बीरबल की आरे मुड़ा।

''हो सकता है।'' बीरबल ने अपनी ठुड्डी खुजलायी। बीरबल ने असलम को ध्यान से देखा जैसे उसके मन को पढ़ने की कोशिश कर रहा हो। ''तो उसके खिलाफ तुम्हारा यह बयान है!''

''अल्लाह ने मुझे काफी दिया है। मुझे किसी से कर्ज लेने की जरूरत नहीं है।'' असलम खान ने अपना बयान दुहराया।

''ठीक है!'' बीरबल ने तुरन्त विषय को इस प्रकार बदल दिया मानो उसे कोई जरूरी काम की याद आ गई हो। उसने असलम खान से कहा, ''क्या तुम मेरी एक मदद करोगे?''

''आप हुक्म दीजिये, बीरबल जी,'' असलम खान मुस्कुरा कर बोला।

''एक महीना पहले, मैंने अपने गाँव के एक दोस्त से शुद्ध घी का एक टिन मँगवाया था। उसने दो भेज दिये। मैं दूसरे टिन का क्या करूँ? मैं उसे रखना नहीं चाहता, क्योंकि घी ताजा रहने पर ही स्वादिष्ट लगता है।'' बीरबल असलम खान के जवाब का इन्तजार करने लगा।

''मैं उसे आप की खातिर बेच सकता हूँ और नकद भेज सकता हूँ,'' असलम बोला।

''शुक्रिया! मैं कल तुम्हारे पास टिन भेज दूँगा।'' बीरबल ने कह कर वापस भेज दिया।

दूसरे दिन बीरबल मधुसूदन पाण्डे से मिला। ''पाण्डे जी, मैं आप से एक मदद, चाहता हूँ। एक महीना पूर्व मैंने अपने गाँव के एक दोस्त से शुद्ध घी का एक टिन मंगवाया था। उसने दो भेज दिये। मैं दूसरे टिन का क्या करूँ? मैं उसे रखना नहीं चाहता, क्योंकि घी ताजा हो तभी स्वादिष्ट रहता है। क्या आप इसे मेरी तरफ से बेच सकते हैं?'' बीरबल ने पूछा।

''क्यों नहीं? क्या मैं आकर टिन ले लूँ?''

''नहीं, दोपहर के बाद मेरा आदमी छोड़ जायेगा।'' बीरबल ने धन्यवाद देकर मधुसूदन पाण्डे से विदा ली।

उसी दिन दोपहर को दोनों व्यापारियों के पास घी का एक-एक टिन पहुँचा दिया गया।

बीरबल पौधों में जब पानी डाल रहा था, तभी मधुसूदन पाण्डे हाँफता हुआ अन्दर आया और बीरबल को अभिवादन करके कहा, ''मुझे टिन के अन्दर एक स्वर्ण मुद्रा मिली। और घी के पैसे ये रहे।''

''आह! घी में सोने का मोहर! आज मेरे लिए शुभ दिन लगता है!'' बीरबल दिल खोल कर हँसा।

''बीरबल जी, मेरी शिकायत का क्या हुआ?'' व्यापारी सकुचाता हुआ धीरे से बोला।

''मैं जाँच-पड़ताल कर रहा हूँ। मुझे कल तक समय दीजिये।''

दूसरे दिन सुबह असलम खान बीरबल के पास आया। ''हुजूर! ये रहे घी के पैसे!'' असलम ने बीरबल को पैसे सौंपते हुए कहा।

''धन्यवाद'', बीरबल खीस निकालता हुआ बोला, ''अरे, मैं तो भूल ही गया! मैं अभी आया!'' बीरबल यह कहकर दौड़ कर सीढ़ियों से उतर कर अन्दर गया। असलम खान बरामदे में इन्तजार करता रहा और काफी खुश और सन्तुष्ट दिखाई पड़ा। बीरबल अन्दर अपने नौकर से कुछ कह रहा था, जो वह सुन नहीं सका। यदि वह सुन पाता तो वह इतना आत्म सन्तुष्ट और आत्मविश्वास से भरा खुश दिखाई नहीं पड़ता।

''असलम के घर पर जाओ और उसके बेटे को कहो कि तुम्हारा पिता सोने का वह मोहर माँग रहा है जो घी के टिन में मिला है।'' बीरबल अपने नौकर से कह रहा था।

नौकर दौड़ता हुआ असलम के घर चला गया। बीरबल असलम से आ मिला और उसे

बातचीत में लगाये रखा। शीघ्र ही नौकर असलम के दस साल के बेटे को लेकर आ गया। बेटा हाथ में सोने का मोहर लिये असलम के पास जाकर बोला, ''ये लो अब्बा जी। घी के टिन में जो सोने की अशर्फी मिली है।''

''बेवकूफ! घी के टिन में सोने की अशर्फी किसी ने सुना है?'' असलम ने धीमे से बेटे को डाँटा।

''अब्बा जी, जब घी को गर्म किया और दूसरे बर्तन में पलटा...''

''मैं झुका और मेरे कपड़ों के तह में से सोने का एक मोहर गिरा।'' असलम ने आँखें दिखा कर बेटे को चुप कर दिया और बीरबल की ओर मुड़ कर यह दलील दी।

''असलम खान, तुम्हारे बेटे ने सच कहा, क्योंकि मैंने ही टिन में सोने की मोहर डाल दी थी।'' बीरबल ने धीमी आवाज में कहा।

असलम खान पीला पड़ गया। लेकिन अपने भय को छिपाता हुआ बीरबल का हाथ अपने हाथ में लेकर बोला, ''ओह! मैंने सोचा कि मोहर मेरे कपड़ों के तह से गिरी। शायद मैंने गलती से यह समझ लिया। यह रहा सिक्का। ले लीजिये।''

''लेकिन मेरे दोस्त! उन २० मोहरों का क्या हुआ जो तुमने मधुसूदन पाण्डे से उधार लिये थे।''

''मैंने कोई ऋण उससे नहीं लिया।'' असलम ने कहा। ''यह झूठ है। अभी सच उगल दो या जेल की हवा खाओ।'' बीरबल आग बबूला होकर बोला।

असलम समझ गया कि खेल खत्म हो चुका है। ''मुझे खेद है, हुजूर। मैं मधुसूदन पाण्डे को मोहरें लौटा दूँगा।'' वह बीरबल के पाँव पकड़ कर माफी माँगने लगा।

अपने भारत को जानो प्रश्नोत्तरी

इससे तुम्हें भारतीय पौराणिक ज्ञान को ताजा करने में मदद मिलेगी।

१. गायत्री मंत्र में किस देवता को सम्बोधित किया गया है?

२. मयूर किस देवी का वाहन है?

३. उस गाय का नाम क्या है जिसे विश्वामित्र वसिष्ठ के आश्रम से बलपूर्वक ले गये?

४. स्वर्ग से गंगा को पृथ्वी पर लाने का श्रेय किसे है?

५. हनुमान के पिता कौन थे?

६. राम द्वारा रावण के वध के बाद लंका का राजा कौन बना?

(उत्तर पृष्ठ ७४ पर)

इधर-उधर से

उभरते खिलाड़ी: चार्ल्स पैडॉक अभी स्कूल में ही था। "मैं दुनिया का सबसे तेज धावक बनना चाहता हूँ।" उसने अपने कोच से कहा। "मुझे क्या करना चाहिये?" उसकी सलाह थी, "घुटनों को ऊँचा उठाओ और अपने पैरों को पिस्टन की तरह बढ़ाओ।" ऐण्टवॅप (१९२०) के खेलों में पैडॉक १०० मी. १०.८ सेकेण्ड में दौड़ गया और स्वर्ण पदक जीत लिया। वर्षों बाद, उसे छात्रों की एक सभा को सम्बोधित करने के लिए आमंत्रित किया गया। जब उसने कहा, "हो सकता है, तुम लोगों में कोई ओलम्पिक चैम्पियन हो," तब एक दम उनमें चुप्पी छा गई। एक बालक उसके पास गया, "मैं कुछ भी दे सकता हूँ यदि मैं आप की तरह चैम्पियन बन सकूँ।" पैडॉक ने कुछ युक्तियाँ बताईं। वह बालक जेसी ओवन्स था, जिसने बर्लिन (१९३६) खेलों में चार स्वर्ण पदक जीत कर कीर्तिमान स्थापित किया। कुछ वर्षों के पश्चात, ओवन्स ने अपने ऑटोग्राफ चाहनेवालों के लिए गाड़ी रोक दी। एक लड़के ने कहा, "मि.ओवन्स, मैं आप की तरह ओलम्पिक चैम्पियन बनने के लिए कुछ भी कर सकता हूँ।" जेसी ओवन्स ने चार्ल्स पैडॉक के साथ हुई अपनी पहली मुलाकात और उसकी बतायी युक्तियों की चर्चा की। वह लड़का हैरिसन डिलर्ड था, जिसने लन्दन (१९४८) में १०.३ सेकेण्ड में १०० मी.दौड़ कर ओवन्स के कीर्तिमान की बराबरी की।

बाइबल में विश्वास: फॉरेस्ट स्मिथसन को लन्दन (१९०८) में ११० मी. की बाधा दौड़ के फाइनल में दौड़ना था। ऐसा हुआ कि दौड़ का कार्यक्रम रविवार को निश्चित हुआ और उसने दौड़ने से इनकार कर दिया। आखिर में उसे प्रतियोगिता के लिए मनाया गया। वह बाइबल की एक प्रति साथ में ले गया। उसने स्वर्ण पदक जीत लिया।

पड़ोसी की चिन्ता: हॉलैण्ड की कोएन, फैनी ब्लैंकर्स ने लन्दन में (१९४८) १०० मी. २०० मी. ८० मी. हर्डल तथा १०० मी. रिले में स्वर्ण पदक जीता। वह लम्बी कूद में पदक जीतने की बहुत उत्सुक नहीं थी, तथा वह अपने ही विश्व कीर्तिमान से कूद में ५० से.मी.पीछे थी। जब वह अम्सटरडम लौटी, उसके पड़ोसियों ने उसे एक सायकिल का उपहार दिया। "तुम काफी दौड़ती रही हो!" उन्होंने टिप्पणी की।

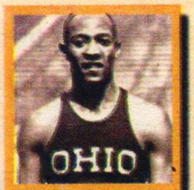

जेसी ओवन्स

फॉरेस्ट स्मिथसन

हैरिसन डिलर्ड

चार्ल्स पैडॉक

ब्लैंकर्स-कोएन

कश्मीर की एक लोक कथा

एक राजकुमार का जन्म

राजपुर का राजा बड़ा ही उदार और प्रजा का हित-चिन्तक था। वह हमेशा अपनी प्रजा के कल्याण के बारे में सोचता रहता था। रानी भी दयालु स्वभाव की थी और अपनी प्रजा को सन्तान के समान प्यार करती थी। उनकी प्रजा भी अपने राजा और रानी के प्रति भक्ति और आदर का भाव रखती थी। उनमें इतनी राजभक्ति थी कि वे अपने राजा-रानी के लिए अपने प्राणों की आहुति भी देने को तैयार थे।

राज्य में कोई कमी थी तो एक राजकुमार की जो समय आने पर राजा का स्थान ग्रहण कर सके। अन्य मनुष्यों की भाँति राजा-रानी भी चाहते थे कि उनकी मृत्यु के पश्चात उनका अन्तिम संस्कार करनेवाला कोई उनकी अपनी सन्तान हो।

राजा और रानी नियमित रूप से मन्दिरों में जाकर देवी-देवताओं का पूजन करते और अपनी एक मात्र इच्छा की पूर्ति के लिए प्रार्थना करते। राजा प्रतिवर्ष पुत्र प्राप्ति के लिए याग आदि अनुष्ठान करवाते। वे योगियों और ऋषि-मुनियों के स्वागत और सेवा-सत्कार के लिए हमेशा तत्पर रहते, जो उनके महल में राजसी दम्पति पर भागवत कृपा के लिए विशेष पूजा और अनुष्ठान कराते थे।

एक दिन, महल के द्वार पर, एक योगी आकर खड़ा हुआ और ऊँची आवाज में पुकार लगाई, "अलख निरंजन।" राजा दरबार में थे, इसलिए रानी ने दासी को यह पता करने के लिए भेजा कि द्वार पर कौन आया है। द्वार पर दासी ने देखा कि ललाट, भुजाओं तथा छाती पर राख लगाये एक साधु खड़ा है। उसके गले में काले मनकों की एक माला थी। उसके बाल लम्बे थे और लहराती दाढ़ी

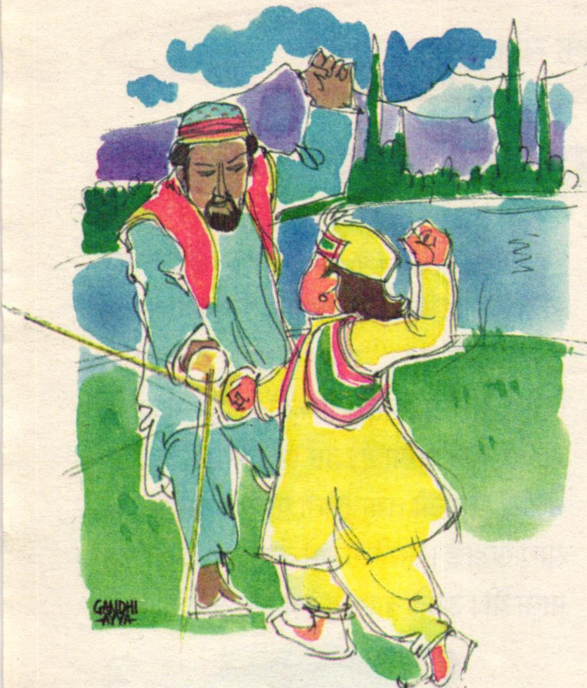

थी। उसके एक हाथ में कमण्डलु था और दूसरे में त्रिशूल। उसे देख कर भय लगता था। साधु रह-रह कर लगातार पुकार लगा रहा था, ''अलख निरंजन!''

दासी दौड़ कर रानी को बताने गई, ''महारानी, लगता है, भगवान शिव स्वयं यहाँ पधार गये हैं!'' रानी ने उसे पुनः भेज कर साधु को वहाँ ले आने के लिए कहा। साधु के आने पर रानी ने साष्टांग अभिवादन करने के बाद विनयपूर्वक कहा, ''हे पूजनीय महात्मा, आप की प्रसन्नता के लिए मैं क्या कर सकती हूँ?''

साधु ने रानी को आशीर्वाद दिया और कहा, ''मैं घुमक्कड़ भिक्षु हूँ और मुझे किसी चीज की आवश्यकता नहीं है। तुम बताओ, तुम्हें क्या चाहिये और तुम्हें, उसे प्राप्त करने के लिए, मैं आशीर्वाद दूँगा।''

रानी ने हाथ जोड़ कर प्रार्थना की, ''हे पुण्यात्मा, परम प्रभु ने हमलोगों को सब कुछ दिया है-एक विशाल राज्य, अतुल धनराशि और भक्ति भाव से ओतप्रोत प्रजा। किन्तु हमारी कोई सन्तति नहीं है। आशीर्वाद दीजिये कि मेरे पति के राजसिंहासन का कोई उत्तराधिकारी पुत्र हो।''

''पुत्री, तुम्हारी यह इच्छा पूर्ण होगी।'' साधु ने आशीर्वाद दिया। थोड़ी देर रुक कर वह पुनः बोला, ''लेकिन जब वह १२ वर्ष का होगा, तब उसे वापस ले जाऊँगा। अलख निरंजन!''

रानी कुछ बोले, इसके पहले ही साधु अदृश्य हो गया। रानी ने सोचा कि उसे एक भागवत पुरुष का आशीर्वाद मिल गया है। जब राजा अपने कक्ष में आया, रानी ने उसे साधु तथा शर्त के साथ उसके आशीर्वाद के बारे में बताया। राजा ने अपना विचार देते हुए कहा, ''हम प्रार्थना करते रहेंगे जिससे हमारा पुत्र हमेशा के लिए हमारे साथ ही रहे।''

एक साल पूरा होने के पूर्व ही रानी ने एक पुत्र को जन्म दिया। उनके आनन्द की सीमा न रही। पूरे राज्य में खुशियाँ मनाई गईं। अनेक दिनों तक भोज, आतिशबाजी तथा उत्सव होते रहे। राजकुमार का नाम निरंजन रखा गया और राजा-रानी उसे प्यार से अलख कहने लगे। उसके लालन-पालन की विशेष व्यवस्था की गई और ३ वर्ष की आयु से ही उसके लिए शिक्षक नियुक्त

किये गये। जब वह १० वर्ष का हुआ तो उसे शासन कला में दीक्षा दी गई और युद्ध कला में प्रशिक्षण भी दिया गया।

राजा और रानी दोनों को साधु को दिया गया वचन याद था। वे चिन्तित होकर बारह वर्ष पूरे होने की प्रतीक्षा करने लगे। रानी ने राजा से एक दिन सन्देह प्रकट करते हुए कहा, ''लेकिन साधु को कैसे मालूम होगा कि हमारा अलख कब पैदा हुआ?''

राजा ने तब रानी को याद दिलाया कि साधु कैसे महल से अचानक अदृश्य हो गया था। उनके पास सब कुछ जानने की शक्ति होगी। फिर भी, साधु के आगमन का कोई संकेत न मिलने के कारण राजा और रानी थोड़े समय के लिए यह भूल गये कि १२ वर्ष की आयु में राजकुमार को साधु के हाथों सौंप देना होगा।

आखिर अलख की बारहवीं सालगिरह आ गई और राज्य भर में धूमधाम से उत्सव मनाया जाने लगा। जब सारा महल जन्मोत्सव के आनन्द में डूबा था, तभी द्वार पर अलख निरंजन की गंभीर पुकार सुन कर राजा और रानी काँप उठे। अब उन्हें कोई सन्देह नहीं रह गया कि साधु अलख को ले जाने के लिए पहुँच गया है।

राजा के आदेश पर पहरेदार साधु को दरबार में ले गये। राजा, जिसने साधु को पहली बार देखा, साष्टांग अभिवादन करने के बाद बोला, ''मेरे महल में आप का स्वागत है, हे महात्मा! कृपया आसन ग्रहण करें!''

''मैं तुम्हारे पुत्र को ले जाने के लिए आया हूँ। मेरा आशीर्वाद ग्रहण करने के पूर्व तुम्हारी रानी मेरी शर्त से सहमत हो गई थी। तुम्हारा पुत्र कहाँ है?'' साधु ने पूछा। वह आशीर्वाद का अपना हिस्सा लेने के लिए मानो दृढ़ संकल्प था।

''मैं रानी और अपने पुत्र को अभी बुलाता हूँ।'' राजा ने कहा। और उसने एक पहरेदार को रानी और राजकुमार को तुरन्त बुलाने के लिए भेज दिया।

शीघ्र ही वे दोनों दरबार में आ गये और उन्होंने साधु का साष्टांग अभिवादन किया। रानी ने विनती की, ''हे महात्मा, कृपया राजकुमार को न ले जायें। वह हमलोगों की आँखों का तारा है और उसे देखे बिना हमलोग एक दिन भी नहीं रह सकते।''

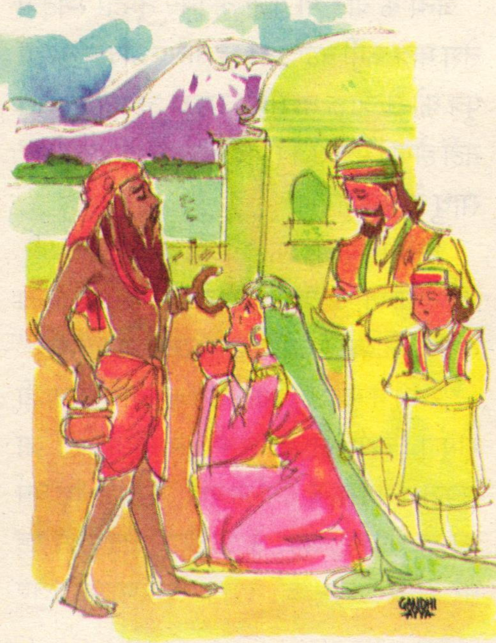

"पुत्री! मैं जानता हूँ तुम अपनी प्रजा को कितना प्यार करती हो! तुम उन्हें अपने बच्चों के समान देख भाल करती हो। मुझे प्रसन्नता है कि अपने बेटे के जन्म के बाद भी प्रजा के लिए तुम्हारे स्नेह में लेश मात्र कमी नहीं आई। इसलिए यदि मैं तुम्हारे पुत्र को ले जाऊँ तो तुम्हें उसका अभाव महसूस नहीं होगा। मुझे राजकुमार को साथ ले जाने दो।" साधु ने समझाया।

रानी साधु से, फिर भी, अनुरोध करती रही, "हे धर्मात्मा, आप चाहें तो हम पर कोई प्रतिबन्ध लगा दें, लेकिन मेरे बेटे को मेरे साथ ही रहने दें।"

साधु ने कहा, "आज उसे मेरे साथ जाना ही होगा। किसी भी हालत में इसे टाला नहीं जा सकता। मैं इसे, ६ वर्षों के बाद, जब वह १८ वर्ष का हो जायेगा, पुनः ले आऊँगा। तब तक वह मेरे साथ रहेगा, जो इसके भविष्य के लिए आवश्यक है। किन्तु..." साधु वाक्य को पूरा किये बिना रुक गया।

"हे पवित्र आत्मा!" राजा और रानी ने एक साथ कहा, "कृपा करके बतायें कि हमें इन ६ वर्षों में क्या करना होगा?"

"तुम दोनों को इस बीच उसकी खोज या उसके बारे में कुछ जानने की कोशिश नहीं करनी चाहिये। यदि तुम दोनों ६ वर्षों तक उसे देखे बिना प्रतीक्षा कर सको तो मैं समझूँगा कि तुम उसके माता-पिता बनने के योग्य हो। यह शर्त विचित्र लग सकता है, परन्तु इससे तुम्हारे पुत्र को लाभ होगा।" साधु ने कहा।

फिर उसने राजकुमार की ओर मुड़ कर कहा, "मेरे साथ आओ", और उसका हाथ पकड़ कर वह महल से बाहर चला गया। उसने मुड़ कर यह नहीं देखा कि राजा और रानी आँसू पोंछ रहे हैं।

अगले ६ वर्षों का उनका समय प्रार्थना करते-करते बीत गया, जिस प्रकार पुत्र जन्म से पहले का एक वर्ष बीता था। यह समय बहुत मुश्किल से कटा। परन्तु फिर भी साधु के आदेशानुसार उन्होंने अपने पुत्र और साधु को ढूँढ़ने का कोई प्रयत्न नहीं किया। इन्हें साधु पर पूरा विश्वास था कि वह अपने वचन के अनुसार ६ वर्षों के बाद उनके पुत्र को लेकर वापस आ जायेगा।

अन्त में, राजकुमार अलख निरंजन का १८ वाँ जन्म दिन भी आ गया। पिछले वर्षों की तरह, उसके जन्म दिवस पर महल को अच्छी तरह सजाया गया। राजकुमार की उपस्थिति के बिना

चन्दामामा प्रश्नोत्तरी-५ जून २००८ उत्तरः

१. फरवरी के अन्तिम कार्य दिवस पर, २. दादा भाई नौरोजी, ३. सरदार वल्लभ भाई पटेल, ४. १९३५ में; १९४८, ५. स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया; स्वाधीनता के पहले इम्पिरियल बैंक, ६. जहाँ बम्बई स्टॉक एक्सचेंज- भारत का पहला (१८७५) राष्ट्रीय स्टॉक एक्सचेंज (१९९२) - स्थित हैं; ७. प्रधान मंत्री।

ही उत्सव मनाया जा रहा था। तभी राजा और रानी को साधु का दिव्य मंत्रोच्चारण सुनाई पड़ा, "अलख निरंजन।"

राजा-रानी दोनों, द्वार की ओर, साधु और उसके साथ आये एक सुन्दर युवक का अभिवादन करने दौड़ पड़े। युवक ने राजा और रानी के चरण स्पर्श किये। राजसी दम्पति ने साधु का साष्टांग अभिवादन किया। उनकी आँखों में आनन्द के आँसू छलक पड़े।

साधु ने उन दोनों को आशीर्वाद देकर कहा, "तुम दोनों ने अपने को अपने बेटे के योग्य सिद्ध कर दिया है और तुम्हारा पुत्र अपने राजसी माता-पिता के सर्वथा योग्य है। तुमलोग ध्यान से सुनो, "मैंने उससे वचन लिया है कि वह तुम्हें यह नहीं बतायेगा कि उसने पिछले छः वर्ष किस प्रकार बिताये। इसलिए तुम सब यह जानने के लिए उत्सुक न होना कि उसका मेरे साथ किस प्रकार विकास हुआ। भगवान का आशीर्वाद तुम सब के साथ है।"

साधु इतना कह कर वैसे ही अदृश्य हो गया जैसे पहली बार रानी से मिलने के बाद अदृश्य हो गया था।

जन्मदिन का उत्सव चलता रहा, लेकिन अब राजकुमार भी उत्सव में उपस्थित था।

चिरस्मरणीय ऐतिहासिक घटनाएँ-११

लापता नाना का रहस्य

यह १८५७ का वर्ष था। प्रथम भारतीय स्वाधीनता संग्राम पूरे उन्माद पर था। अत्यधिक निराश और क्षुब्ध ब्रिटिश सरकार ने धोण्डु पन्त को जिन्दा या मुर्दा पकड़ कर लाने के लिए बहुत बड़े इनाम की घोषणा की, क्योंकि उसका नाम सुनते ही अंग्रेज भय से काँपने लगते थे। कौन था वह आतंकी?

वह जनश्रुत नाना साहेब था जो धोण्डु पन्त के रूप में सन् १८२४ में महाराष्ट्र के एक छोटे से गाँव में पैदा हुआ था। सन् १८२७ में उसका परिवार बित्तूर के राजा पेशवा बाजी राव द्वितीय के दरबार की सेवा में चला गया। इस छोटे तेजस्वी बालक ने तुरन्त राजा का मन मोह लिया और वहाँ के सभी लोगों का प्रिय पात्र बन गया। बाजी राव ने बच्चे को अपनी गोद में बिठाया और औपचारिक रूप से उसे अपना पुत्र घोषित किया।

दक्ष और साहसी नाना ने बचपन में ही युद्ध और शासन सम्बन्धी सभी प्रारम्भिक ज्ञान अर्जित कर लिये। अंग्रेजों ने पेशवा का राज्य हड़प लिया था और इसके बदले वे आठ लाख रुपयों का वार्षिक भत्ता दे रहे थे। बालक होते हुए भी नाना राज्य को अंग्रेजों से वापस लेने का सपना देखा करते थे।

सन् १८५१ में पेशवा बाजीराव द्वितीय का देहान्त हो गया। मरने के पहले उन्होंने वसीयत में अपने सारे अधिकार नाना के नाम लिख दिया था। नाना २० के ऊपर पूर्ण रूप से युवा हो चुके थे।

पर आह! धूर्त अंग्रेज शासक, ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने घोषणा की कि पेशवा को गोद लेने का अधिकार नहीं है। उन्होंने भत्ता देना बन्द कर दिया।

युवक नाना ने शीघ्र ही अंग्रेजों को एक रोष भरा बड़ा पत्र भेजा कि यदि दो दलों के बीच का अनुबन्ध एक दल अपनी मर्जी से तोड़ता है तो दूसरा दल अपना राज्य वापस ले सकता है।

परन्तु घमण्डी कम्पनी ने उसकी जायदाद और धन अधिग्रहण करने की धमकी दी। वे गोद लेने की प्राचीन परम्परा का मजाक उड़ाने लगे।

तभी १८५७ का वर्ष आ गया और विद्रोही सिपाहियों ने बहादुर नाना साहेब को अपना नेता बनाया। उन्होंने अपनी सेनाओं को एकत्र किया। उन्होंने अपने भाइयों की सहायता तथा अपने बहादुर सेनापति तात्या टोपे और बुद्धिमान सलाहकार अजीमुल्ला खान को लेकर

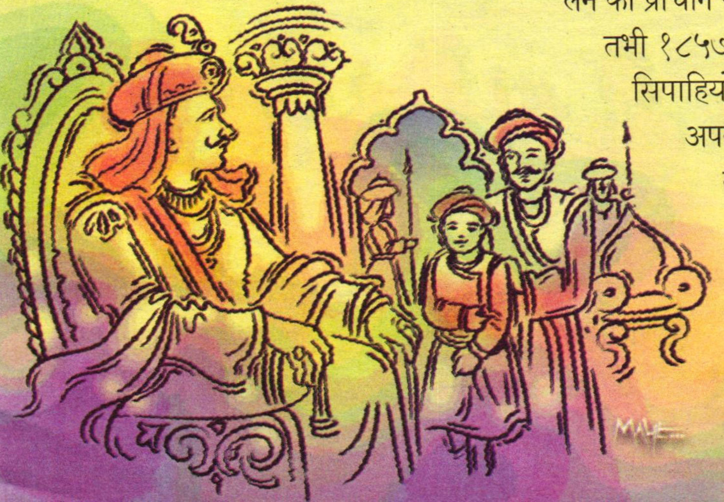

स्वाधीनता संग्राम में झाँसी की रानी लक्ष्मी बाई और जगदीशपुर के कुंवर सिंह का साथ लिया।

नाना ने अंग्रेज जनरल सर ह्यूग व्हिलर को पत्र लिख कर चेतावनी दी, ''हम आक्रमण आरम्भ करने जा रहे हैं, इसलिए हम यह नोटिस भेज रहे हैं।'' जनरल इस युवा नेता के भद्र आचार पर चकित हो गया। नाना आसानी से उन पर उन्हें बिना सावधान किये अचानक हमला कर सकता था। किन्तु उन्होंने उन्हें युद्ध की तैयारी करने का समय दिया।

नाना की सेना ने अंग्रेजों के मजबूत ठिकानों पर हमला किया। वे तीर के समान सीधे दुश्मन के शिविर में घुस गये और दीवारों पर चढ़ गये। उनकी बन्दूकों और तोपों ने उन पर कहर ढाह दिया। अंग्रेजों के किले में स्त्री, पुरुष और बच्चे भय से चीखते-चिल्लाते इधर-उधर भागने लगे। गर्मी का सूरज निष्ठुर होकर आग उगल रहा था। अन्दर पानी की कमी हो गई और उनके सैनिक प्यास, थकान और रोगग्रस्त होकर एक-एक कर मर कर ढेर होने लगे। भयावने सपनों की तरह तीन सप्ताह बीत गये। भोजन की कमी होती जा रही थी, ऐसी हालत में वे कब तक टिक पाते? निस्सहाय जनरल ने हेड क्वाटर्स को सन्देश भेजा, ''सहायता, सहायता, सहायता। हमलोग मर रहे हैं...।'' यह सन्दिग्ध था कि सन्देशवाहक विद्रोहियों से बच कर मुख्यालय पहुँचा होगा, क्योंकि सहायता कभी नहीं आई।

सन् १८५७ का २३ जून था। इसी दिन, एक सौ वर्ष पूर्व, अंग्रेज आक्रामकों ने पलासी के मैदान में प्रथम निर्णायक विजय प्राप्त कर भारत में अपने उपनिवेश की आधारशिला रखी थी।

एक भविष्य वाणी की गई थी कि इसी दिन ब्रिटिश शासन का अन्त आरम्भ होगा। अब पराजय और निराशा उन्हें सामने दिखाई देने लगी। उन्होंने हथियार डाल दिये और हार स्वीकार कर ली। कानपुर में अंग्रेजी शासन के सभी चिह्न मिट गये। पेशवा नाना साहेब बन्दूकों की गड़गड़ाहट और तालियों की गूंज के साथ बित्तूर के महल में सिंहासनासीन हुए तथा उन्होंने बड़ा दरबार किया।

लेकिन अंग्रेजों के लिए यह बहुत विकट चुनौती थी, सिर्फ अपमान का प्रश्न नहीं था, भारत में उनके अस्तित्व पर भी खतरा था। शीघ्र ही, जनरल हैवलॉक के सेनापतित्व में एक बड़ी बटालियन कानपुर की ओर कूच कर गई। मार्ग में उसकी सेना गाँवों और शहरों को जलाती और तहस-नहस करती गई। नाना साहेब की सेना ने मार्ग में उन्हें रोकने का प्रयास किया परन्तु उन्हें कुचलते हुए अंग्रेज सैनिक आगे बढ़ गये। शीघ्र ही उन्होंने देखा कि कानपुर के कंगूरे बादलों की ओर बढ़ रहे हैं। प्रफुल्ल हैवलॉक और उसके सैनिक तेजी से आगे बढ़े। नाना ने वीरता से उनका कड़ा विरोध

किया। किन्तु हैवलॉक के सैनिक अधिक दक्ष थे और हैवलॉक स्वयं एक पेशेवर कमाण्डर था।

नाना को पीछे हटना पड़ा। खुशी से पागल अंग्रेज सिपाही शहर पर, ''घायल शेर पर गिद्धों की तरह'' टूट पड़े। उन्होंने चारों ओर हत्या, लूटपाट और आग लगा कर तबाही मचा दी। लेकिन नाना कहाँ गया? वह बित्तूर से भाग गया था। तब हैवलॉक और उसके सैनिक बित्तूर की ओर चल पड़े।

उन्होंने पेशवा के महल का चप्पा-चप्पा छान डाला और उसमें आग लगा दी। पर अंग्रेजों का सबसे बड़ा खतरा नाना कहीं नहीं मिला। उसे पकड़ने और उसकी चर्चित अपार दौलत की खोज करनेवाले के लिए बड़े-बड़े इनाम घोषित किये गये। खोजियों के दल उस क्षेत्र के कोने-कोने को छानते हुए चारों ओर बिखर गये।

एक दिन अंग्रेज जासूसों को पता चला कि नाना साहेब एक कुलीन घराने में अतिथि के रूप में मौजूद हैं। इस सूचना के आधार पर कुछ सैनिकों के साथ एक कैप्टन छिप कर उनके बाहर आने का इन्तजार करने लगा। काफी समय बीत गया। चाँद आकाश में चमकने लगा। अन्त में, अंग्रेज पिछले द्वार से निकल कर घोड़े पर सवार होते हुए किसी को देख उत्तेजित हो उठे।

''रुक जाओ!'' कैप्टन ने बन्दूक तान कर आवाज दी। नाना घोड़े से कूद कर तेजी से दौड़ने लगे। कैप्टन ने कई गोलियाँ चलाईं, लेकिन इससे उसके अपने ही सैनिक घायल हो गये।

''उसे पकड़ो और पुरस्कार लो।'' कैप्टन चिल्लाया। आखिर पीछा करनेवाले एक व्यक्ति ने उसे पकड़ लिया। खुशी से पागल कैप्टन ने नाना को कैद कर लिया और उसे पकड़नेवाले के साथ हाथ मिलाया। ''मेरा पुरस्कार, सर।'' पकड़नेवाले ने माँगा।

''मुझसे सुबह मिलो,'' कैप्टन ने कहा। फिर अंग्रेज अफसरों ने कैदी को हवालात में बन्द कर दिया। जिस व्यक्ति ने नाना को पकड़ा था, वह पुरस्कार लाने कभी नहीं गया। शीघ्र ही, पूछताछ करने पर अंग्रेजों को आश्चर्य के साथ मालूम हुआ कि कैदी परिवार का दामाद था जो घर लौट रहा था। उसे आदर के साथ छोड़ना पड़ा। बाद में, यह जानकारी मिली कि जिस व्यक्ति ने दामाद को पकड़ा था, वही वास्तव में स्वयं नाना था। दामाद ने उसके साथ सहयोग किया था।

नाना को पकड़ने के लिए अफसर एक दूसरे के साथ स्पर्धा करने लगे। उन सबने कितने ही संदिग्ध व्यक्तियों को हिरासत में लिया। सबसे अन्त में, विद्रोह के ३७ वर्षों के पश्चात, एक भिक्षु को उन्होंने पकड़ा। अंग्रेज अधिकारी ने, जिसने नाना समझ कर भिक्षु को पकड़ा था, मुख्यालय को तार भेजा,

''नाना साहेब को पकड़ लिया। आदेश भेजें।''

ऊपर के अधिकारी ने फौरन जवाब भेजा, ''उसे तुरन्त छोड़ दो।''

अंग्रेज यह सुन कर भयभीत थे कि नाना शीघ्र ही जार की मदद से रूसी सेना का प्रधान बन कर भारत पर आक्रमणा करेगा। कुछ लोगों ने यह खबर फैलाई कि नाना को जंगल में एक बाघ ने मार कर खा लिया। लेकिन नेपाल में जंगल के निकट एक गाँव में उसकी पत्नी अकेली रहती है। वह विधवा की तरह वस्त्र धारण नहीं करती थी। लोगों को विश्वास था कि नाना साहेब गुप्त रूप से उससे मिलने आते थे।

एक इतिहासकार परसेवल लैंडन ने लिखा है, ''नाना साहेब की मृत्यु की सही तारीख और जिस परिस्थिति में उनकी मृत्यु हुई, ये हमेशा एशियाई इतिहास के अनसुलझे रहस्य बने रहेंगे।''

अनेक अंग्रेज लेखक और इतिहासकार नाना साहेब के प्रति आकर्षित थे। परन्तु वे इन्हें खलनायक अथवा असुर मानते थे। जुल्स वर्ने के एक उपन्यास के वे नायक भी हैं, जिसमें वे परिव्राजक के रूप में भारत लौट आते हैं। भारतीयों का विश्वास है कि वे वृद्धावस्था तक जीवित रहे और कुछ लोगों ने यह भी दावा किया है कि उनसे उन्होंने भेंट की।

एक बार हिमालय की एक पादगिरि पर एक छोटे बंगले में, दिन भर की यात्रा के बाद, एक यात्री विश्राम कर रहा था। काफी ठण्ढ थी और उसने गर्मी के लिए आग जला रखी थी। अचानक उसके पास एक वृद्ध व्यक्ति आ कर बैठ गया जिसकी दाढ़ी बर्फ़ की तरह सफेद थी और आँखों में सितारों की चमक थी।

वह आगन्तुक शीघ्र ही बड़े उत्साह के साथ सिपाही विद्रोह की कहानियाँ सुनाने लगा। मंत्रमुग्ध-सा वह यात्री उसकी कहानियाँ सुनने के बाद पूछ बैठा, ''सर, परन्तु यह सब आप को कैसे मालूम हुआ?''

''क्यों?'' वृद्ध व्यक्ति ने एक हल्की मुस्कान के साथ कहा। ''मैं इन घटनाओं के बीच से गुजर चुका हूँ! क्या आपने नाना साहेब के बारे में नहीं सुना है?''

यात्री चकित होकर कुछ कहने ही वाला था कि आगन्तुक अन्धेरे में अदृश्य हो गया।

नाना साहेब ने अंग्रेजों को लिखे अपने अन्तिम पत्र में, जो सम्भवतः नेपाल के जंगलों से लिखा गया था, कहा, ''भारत पर कब्जा करने और मुझे भगोड़ा घोषित करने का तुम्हें क्या अधिकार है? भारत पर शासन करने का अधिकार तुम्हें किसने दिया? यह कैसी बात है कि तुम फिरंगी लोग राजा बन गये हो और हमलोग अपने ही देश में चोर हो गये हैं?'' ***(ए.के.डी.)***

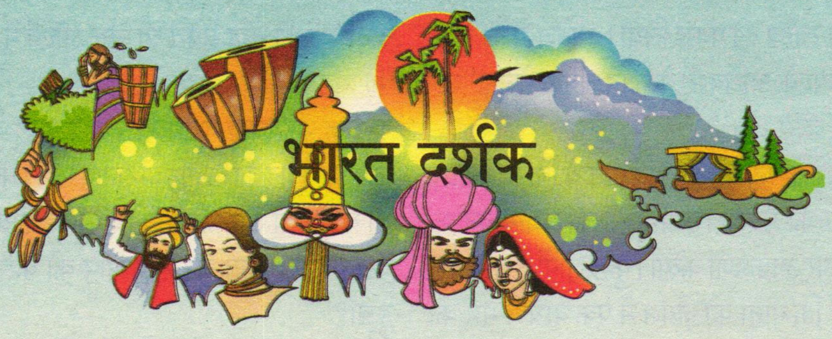

प्राचीन खेल-कूद

मध्य जनवरी के आस-पास जल्लीकट्टू, तमिलनाडु के अनेक हिस्सों में, पोंगल त्योहार के अंग के रूप में आयोजित होता है। इस खेल-कूद के शौकीन बताते हैं कि यह ३,५०० वर्ष पूर्व भी प्रचलन में था, जैसा कि तमिलनाडु के नीलगिरि जिले में कारीक्कियूर ग्राम की गुफाओं के शैल चित्रों से स्पष्ट है। इस ग्राम में, दक्षिण भारत में शैल चित्रों का सबसे बड़ा स्थल है जिसमें ५०० चित्र हैं। उन चित्रों में बड़े कूबरों और लम्बे सींगों वाले मजबूत सांढों का पीछा करते हुए पुरुष दिखाये गये हैं।

''अदृश्य' प्रतिमावाला मन्दिर

केरल में त्रिसूर स्थित वडक्कु नाथन मन्दिर, जिसका लोकप्रिय नाम तेन कैलास (तेन या तेक्कु: दक्षिण) है, के इष्ट देव (उत्तर के प्रभु- वडक्कू) हैं। प्राचीनता के आधार पर मूल मन्दिर परशुराम द्वारा निर्मित किया बताया जाता है जो विष्णु के छठे अवतार थे। शंकराचार्य के ब्राह्मण माता-पिता बहुत दिनों तक निःसंतान थे। वे नियमित रूप से इस मन्दिर में प्रार्थना किया करते थे। और अन्त में उन्हें पुत्र का वरदान प्राप्त हुआ जिसका नाम शंकर रखा गया। मुख्य प्रतिमा सामान्य रूप से १२ फुट ऊँचे घी के ढेर से ढकी रहती है जो प्रतिदिन के अभिषिक्त घी से बन जाता है और आश्चर्य यह है कि वह गर्मी के दिनों में भी नहीं पिघलता।

उनके पिछवाड़े में जंगल!

अमृतादेवी जब भोर में लगभग ४.३० बजे उठी तो उसके मुँह से एक आह निकल गई। कड़ाके की ठण्ढ थी। बाहर घना अन्धकार था। जलावन की लकड़ी चुनने के लिए अभी उसे २० कि.मी. पैदल जाना होगा! यह सोचते ही वह काँप गई। यह काम वह पिछले २० वर्षों से करती आ रही थी, १६ साल की उम्र से ही। पहले माता-पिता के घर में और अब शादी के बाद अपने घर में। लेकिन समय जैसे-जैसे बीतता गया, हर रोज की पैदल यात्रा लम्बी होती हुई लगने लगी, क्योंकि जंगल गाँव से अधिक दूर पीछे हटता हुआ जान पड़ा।

वह हिमालय में गढ़वाल क्षेत्र के मक्कू नामक एक गाँव में रहती है। उसकी तरह हजारों स्त्रियाँ हर रोज सुबह-चाहे जाड़े का मौसम हो या गर्मी का, बारिश हो या धूप-अपने घरों की जलावन की लकड़ी इकट्ठी करने के लिए अनेक कि.मी. की पैदल यात्रा करती हैं!

इस क्षेत्र के ग्रामीण अपनी अनेक जरूरतों के लिए जंगल पर निर्भर करते हैं। उन्हें चूल्हे पर खाना पकाने के लिए जंगल से लकड़ी की आवश्यकता होती है। अपने घरों की मरम्मत के लिए भी उन्हें इसकी जरूरत पड़ती है। बीमारियों की चिकित्सा के लिए अनेक जड़ी-बूटियों के पौधे जंगल में ही पाये जाते हैं। ग्रामीण स्त्रियाँ अपने मवेशियों को चराने के लिए जंगल में ले जाती हैं। इन लोगों के लिए अपने प्रिय जंगलों के बिना जीना असम्भव है।

अमृतादेवी अपनी १५ सहेलियों के साथ मिल कर पैदल यात्रा पर चल पड़ी। हर स्त्री सोच रही थी कि उसे जंगल से लौट कर क्या-क्या करना है। उन्हें जंगल में जाने, लकड़ी एकत्र करने तथा वापस आने में चार घण्टे लग जायेंगे। घर आकर उन्हें नाश्ता बनाना पड़ेगा और बच्चों को जगाकर स्कूल भेजना होगा। फिर खेतों में अपने मर्दों की ले मदद करनी होगी और मवेशियों को चराने जंगल जाना होगा। यह बहुत कठिन जीवन था।

अचानक, अमृतादेवी ऊँचे स्वर में बोल पड़ी,

Exclusively for Chandamama Readers!
Do you want to be a whiz kid? SIP Academy has a lot of cool programmes, like an International Art Programme, International Abacus and Brain Gym. Enrol TODAY at any one of 455 centres across India and get 15% off!
SIP Creating Intelligence

''क्या कोई मार्ग है जिससे हम अपने जीवन को आसान बना सकें? क्या हम कुछ ऐसा नहीं कर सकते कि हमारे गाँव के पास ही कुछ जंगल के लिए जमीन हो? हम लोग इस जंगल की देखभाल करते और इससे लाभ भी उठाते!'' यह सुनकर उसकी सभी सहेलियाँ इस पर विचार करने लगीं।

''कितना अच्छा होता यदि हम लोगों को हर रोज इतनी सुबह में उठकर उतनी दूर पैदल चलना नहीं पड़ता!'' लेकिन कैसे? वे लोग गाँव के बड़े-बूढ़ों से मिल नहीं सकते थे जो उन्हें बताते कि गाँव का पहले से ही वन पंचायत जंगल था।

करीब ७० वर्ष पूर्व इन ग्रामीणों ने अंग्रेजों से आन्दोलन करके अपने लिए कुछ जंगल उपलब्ध करने हेतु उन्हें मना लिया था। ये जंगल अभी भी वन पंचायत जंगल के नाम से जाने जाते थे और इनका प्रबन्ध भी स्थानीय लोगों के हाथ में था। उस क्षेत्र के अन्य जंगलों का अधिकांश भाग वन विभाग के अधीन है और ग्रामीणों को अपनी जरूरतों के लिए उनका उपयोग करना मना है।

किन्तु वन पंचायत जंगल हमेशा गाँव के निकट नहीं रहता था। और अधिक महत्वपूर्ण यह है कि गाँव के पुरुष ही यह निश्चय करते थे कि इन जंगलों का उपयोग कैसे किया जाये। सभी पन्द्रह स्त्रियों ने अनुभव किया कि यह न्यायोचित नहीं है। यदि स्त्रियाँ जंगल के अधिकांश काम सम्भाल लें तो क्या हर्ज है? उन्हें फिर भी यह बताने की अनुमति नहीं दी गई कि इसका उपयोग कैसे किया जायेगा।

अमृतादेवी का संयोगवश दिया गया विचार सचमुच काम कर गया। सभी स्त्रियाँ किसी समाधान की खोज करने पर तुली हुई थीं। उन्होंने अपने महिला क्लब-महिला मंगल दल की अगली बैठक में इस पर विचार करने का निश्चय किया। भाग्य से उसी शाम को बैठक बुला ली गई और करीब ५० ग्रामीण महिलाएँ उसमें शामिल हुईं।

बहुत-सी बुजुर्ग महिलाओं ने यह सोचा कि अपने जंगल के प्रबन्ध का विचार बिलकुल बेकार है। आखिर वे क्या इतने दिनों से दूर जंगलों में पैदल जाकर जलावन नहीं ला रही हैं? छोटी उम्र की स्त्रियाँ क्यों नहीं वैसी ही करती रहें! जो भी हो, छोटी उम्र की काफी स्त्रियों को यह विचार-विमर्श अर्थपूर्ण लगा। अन्ततः उनमें से कुछेक ने वन पंचायत के प्रधान मैथनीजी से बात करने का निश्चय किया।

मैथनीजी समझदार व्यक्ति थे। उन्होंने स्त्रियों के साथ सहानुभूति प्रकट की और उनकी समस्या पर विचार करने का निश्चय किया। वह कुछ दिनों के बाद उनसे मिला और उन्हें एक सुझाव दिया। उन्होंने कहा कि गाँव के बाहर जाते ही काफी मात्रा में जंगल की जमीन पड़ी हुई है, जहाँ अब बड़े-बड़े वृक्ष नहीं रहे। बहुत दिनों पहले ही वे वृक्ष काट दिये गये। यह जमीन गाँव की है।

उसने सलाह दी कि यदि स्त्रियाँ सहमत हों तो यह जमीन उन्हें मिल सकती है। उसकी रक्षा करना इनका दायित्व होगा। यदि इनकी रक्षा ठीक से की गई तो जंगल फिर से उग आयेंगे और इनका उपयोग सिर्फ घरेलू जरूरतों के लिए केवल स्त्रियाँ कर सकेंगी।

महिला मंगल दल की बैठक पुनः बुलाई गई। बहुत-सी महिलाएँ काफी उत्तेजित थीं। अन्त में, उनका सपना साकार हो सकता है। फिर भी, कुछेक को सन्देह था। ''औरतें इस जंगल की रक्षा कैसे करेंगी?'' ''क्या औरतों को पहले से ही ज्यादा काम नहीं करना पड़ता?'' ''उनके मर्द क्या कहेंगे?''

ऐसी कुछ औरतें पीछे हट गईं। किन्तु कुछेक औरतों ने इस चुनौती को स्वीकार कर लिया। इन औरतों के पास पैसे न थे। ये वन पंचायत जंगलों की तरह रक्षा के लिए पहरेदार नहीं रख सकते थे। उन्होंने निश्चय किया कि वे स्वयं बारी-बारी से 'अपने' जंगल की जमीन की रक्षा करेंगे। दो औरतें दिन में और दो रात में पहरा देंगी।

किन्तु, यह इतना आसान न था। बहुतों को अपने ही घर से विरोध का सामना करना पड़ा। कुछेक औरतों को उनके मर्दों ने जंगल में पहरा देने से मना कर दिया। मर्द अपनी औरतों की गैर मौजूदगी में घर का अतिरिक्त काम करना नहीं चाहते थे। परन्तु इन बहादुर औरतों ने हार नहीं मानी। उन्होंने जंगल की रखवाली करने की एक योजना बनाई। यहाँ तक कि जंगल में उनकी आज्ञा के बिना प्रवेश करनेवालों के लिए जुर्माना का भी नियम बनाया गया।

धीरे-धीरे पौधे उगने लगे। वे बड़े और मजबूत होने लगे। औरतों को अन्त में उनके परिश्रम का फल मिलने लगा। कुछ वर्षों के बाद उस उजाड़ जमीन पर हरा-भरा जंगल खड़ा हो गया। औरतों ने वहाँ से जलावन तथा अन्य चीजें लेनी आरम्भ कर दीं। उन सब ने उसके बाद यह नियम बनाया कि किसे इस जंगल से कितना सामान लेना चाहिये।

अब, अमृतादेवी, उसकी सहेलियाँ तथा गाँव की अन्य अनेक स्त्रियाँ भोर में ४.३० बजे उठ कर कोसों दूर तक पैदल नहीं जातीं। आखिरकार, उन्होंने अपने दृढ़ निश्चय से, अपने पिछवाड़े में ही एक जंगल का निर्माण जो कर लिया है!

-सीमा भट्ट

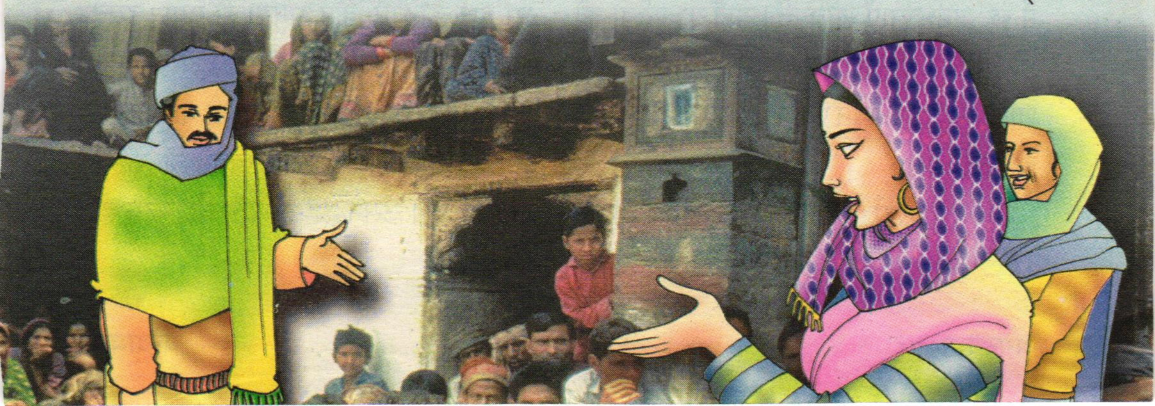

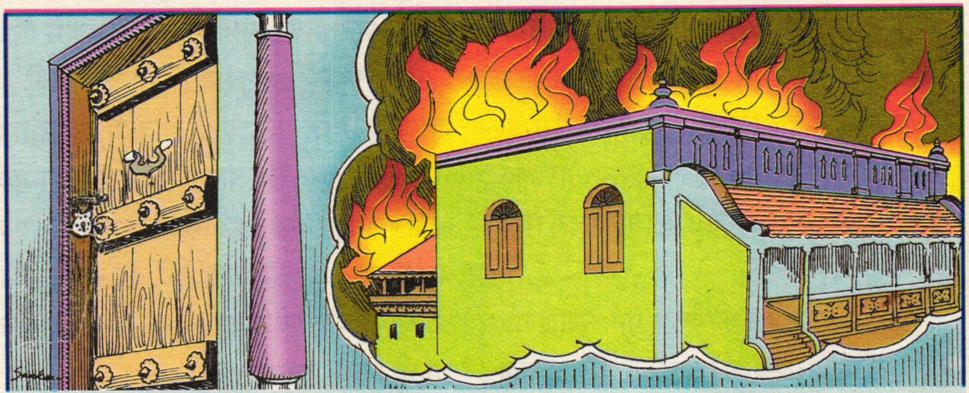

दान की महिमा

काशी राज्य पर ब्रह्मदत्त का शासन था। बोधिसत्व उनके यहाँ कोशाध्यक्ष थे। वे अस्सी करोड़ स्वर्ण मुद्राओं के अधिपति थे। उनके मन में वैराग्य उत्पन्न हुआ। उन्होंने सोचा कि अब संसार के मायाजाल को त्याग देना चाहिए। इसलिए उन्होंने राजा से निवेदन किया कि वे उनकी सारी सम्पति को स्वीकार कर लें।

''मेरे पास धन की कोई कमी नहीं है। इसलिए आप अपने धन का उपयोग अन्य प्रकार से कर लीजिए,'' राजा ने उत्तर दिया। इसके बाद कोशाध्यक्ष ने राजा की अनुमति लेकर काशी नगर में छः धर्मशालाएँ खोल दीं। यहाँ पर गरीबों को भोजन और दान भी दिया जाता था। इन धर्म-शालाओं पर प्रतिदिन एक लाख स्वर्ण मुद्राएँ खर्च हो जाती थीं।

अन्न शालाएँ चलाने के फल स्वरूप अपनी मृत्यु के बाद कोशाध्यक्ष को स्वर्ग में इंद्र का पद प्राप्त हुआ। उसका पुत्र भी पिता के चरण-चिह्नों पर चलकर चंद्र के रूप में पैदा हुआ। चंद्र का पुत्र सूर्य के रूप में पैदा हुआ। सूर्य का पुत्र मातलि के रूप में और मातलि का पुत्र पंच शिखाग्नि के रूप में पैदा हुआ। इस प्रकार उन सबने देवत्व प्राप्त किया। उन सब के पास धन के साथ-साथ कोमल हृदय तथा दान-कर्म की भावनाएँ थीं। धन से इनके कर्म नहीं बदले थे। यही कारण था कि उन सबको देवत्व प्राप्त हुआ।

पर पंच शिखाग्नि के पुत्र तक पहुँचते-पहुँचते उस वंश का धर्म-कर्म समाप्त हो गया। इसका कारण था कि पंच शिखाग्नि का पुत्र अस्सी करोड़ मुद्राओं का अधिपति होते हुए भी बहुत कंजूस था। जनता उसको मच्छरिकोशिय कहकर पुकारती थी। उसने अपने पिता की मृत्यु होते

जातक कथा

ही सारी धर्मशालाओं को बन्द करवा दिया जहाँ पर अन्नदान की व्यवस्था थी। साथ ही उन इमारतों को जलवा डाला। उसका विश्वास था कि उसके पूर्वज मूर्ख थे, इसलिए दान-धर्मों के पीछे बहुत सारा धन बर्बाद कर डाला था।

इसके बाद नगर के सभी गरीब लोग मच्छरिकोशिय के घर के सामने इकट्ठे हो कर विनती करने लगे, ''महानुभाव, कृपया दान देने का क्रम बन्द न कीजिए। अन्न शालाओं को फिर से चालू कर दीजिए। यदि आप ऐसा नहीं करेंगे तो हम गरीब लोगों को बहुत कष्ट होगा। हम सब भूखे मर जायेंगे।'' पर इस विनती का असर मच्छरिकोशिय पर कुछ भी न पड़ा, उल्टे उसने अपने नौकरों के द्वारा उन गरीबों को अपने घर के सामने से हटवा दिया।

मच्छरिकोशिय भी अपने बाप-दादों की भांति राजा के यहाँ कोशाध्यक्ष था। पर वह सुख वैभव का जीवन नहीं बिताता था। वह न स्वयं भर पेट खाता था और न अपनी पत्नी और बच्चों को भरपेट खिलाता था। वह थोड़ा , प्याज़-मिर्च मिला कर रोटी खा लेता और खट्टा छाछ पी लेता था। तन पर वल्कल पहन लेता था और घिसी हुई धुरी वाली पुरानी गाड़ी में कमज़ोर बैलों को जुतवाकर आता-जाता था।

एक दिन वह कंजूस कोशाध्यक्ष राजदरबार में जाते हुए सहायक कोशाध्यक्ष को भी अपने साथ राजसभा में ले जाने के विचार से उसके घर पहुँचा। ठीक उसी समय सहायक कोशाध्यक्ष

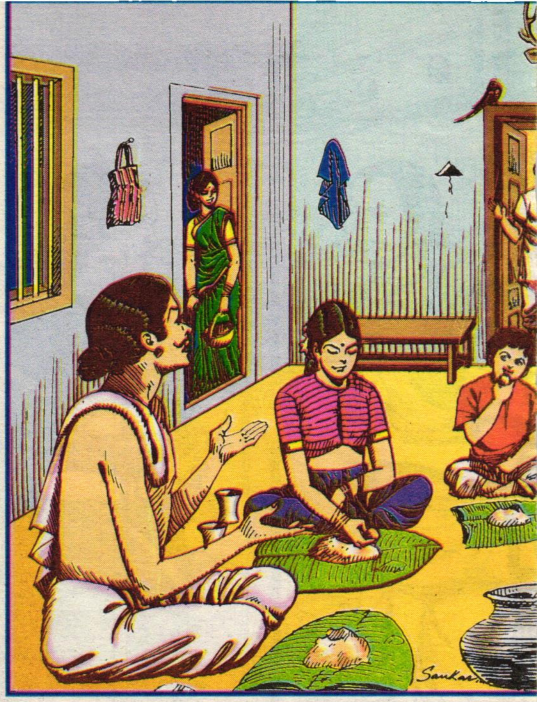

अपनी पत्नी और बच्चों के साथ पत्तलों के सामने बैठकर हलुआ खा रहा था। कोशाध्यक्ष को देखते ही सहायक कोशाधिपति उठ खड़ा हुआ और उसको भी हलुआ खाने को आमंत्रित किया।

मच्छरिकोशिय यह सोचकर डर गया कि इस समय यदि मैं इसके आतिथ्य को स्वीकार करके हलुआ खा लूँगा तो किसी न किसी दिन इसके सारे परिवार को दावत देनी पड़ेगी। यों विचार करके वह बोला, ''मित्र, इस समय मुझे भूख नहीं है। तुम लोग खा लो।''

लेकिन उसी क्षण से मच्छरिकोशिय के मन में हलुआ खाने की तीव्र इच्छा पैदा हो गई। पर उसने सोचा कि घर में हलुआ बनवाया गया तो और कई लोग खायेंगे। इस विचार से उसने घर में अपनी यह इच्छा प्रकट नहीं की और मन ही मन घुलते हुए बीमार पड़ गया।

उसकी पत्नी ने पूछा, ''क्या आप अस्वस्थ हो गयें हैं? दवा-दारू क्यों नहीं कराते? दवाई से आपकी बीमारी शीघ्र ठीक हो जाएगी।''

''तुम ही बीमार पड़ गई हो। मैं तो बिलकुल स्वस्थ हूँ,'' मच्छरिकोशिय ने उत्तर दिया। पर पत्नी ने अनेक प्रकार के सवाल पूछ कर अपने पति के मन की बात ताड़ ली और कहा, ''हम कंगाल थोड़े ही हैं! हलुआ के लिए बीमार पड़ने की क्या आवश्यकता है? मैं काशी नगर की सारी जनता को हलुआ खिलाऊँगी। सब लोग भर पेट खाकर प्रसन्न हो जायेंगे।''

''हाँ! हाँ! मैं जानता हूँ, तुम्हारे पीहर के लोग बड़े ही धनी हैं। वहाँ से धन लाकर सारे नगर के लोगों को हलुआ की दावत खिलाओ!'' कंजूस पति ने ताने मारे। इस पर उसकी पत्नी ने सुझाव दिया, ''कम से कम अपनी गली के लोगों के लिए हलुआ बनाऊँगी।'' इस प्रस्ताव का भी मच्छरिकोशिय ने विरोध किया।

''अच्छी बात है, मैं हम दोनों के लिए हलुआ बना लेती हूँ।'' पत्नी ने कहा।

''तुम्हारे लिए क्या आवश्यकता है? पति ने टोका। ''तो फिर सिर्फ तुम्हारे लिए ही बना देती हूँ। ठीक है न?'' पत्नी ने पूछा।

''वास्तव में घर में हलुआ नहीं बनाना है, समझी। तुम थोड़ा आटा, दूध, घी और शहद मुझे दे दो, बर्तन भी दे दो। मैं जंगल में जाकर हलुआ बनाकर खा लूँगा'', पति ने कहा।

पत्नी ने सारी चीज़ें लाकर मच्छरिकोशिय के हाथ में दे दीं। उन चीजों को एक गुलाम के सर पर रखवा कर, मच्छरिकोशिय अपने चेहरे पर नक़ाब डालकर, नदी के किनारे से होकर जंगल में चला गया। नदी के किनारे एक झाड़ी के निकट चूल्हा बनाया, अपने नौकर के द्वारा जलावन और पानी मँगवा लिया। तब उसे आदेश दिया, ''तुम जाकर रास्ते पर खड़े हो जाओ। यदि इस रास्ते से कोई गुज़रे तो मुझे तुरन्त सूचना दो।''

इस बीच इंद्र ने अपनी छठी पीढ़ी के मच्छरिकोशिय के बारे में सब कुछ जान लिया था।

इंद्र ने सोचा, 'पंच शिखाग्नि की पीढ़ियों के लोग दान-पुण्य करके देवत्व को प्राप्त हो गये, पर उसका पुत्र कंजूस बन गया। अपने वंश के आचार को तिलांजलि देकर स्वयं हलुआ खाने के लिए जंगल में जाकर बना रहा है। यदि मैं इस

को ज्ञानोदय न कराऊँ तो यह निश्चय ही नरक में चला जायेगा।' यों विचार करके इंद्र ने चंद्र, सूर्य, मातलि तथा पंच शिखाग्नि को बुलवा भेजा। इसके बाद इंद्र एक ब्राह्मण का वेष बना कर मच्छरि-कोशिय के पास पहुँचा, जहाँ पर वह हलुआ बना रहा था और पूछा, "सुनो, काशी जाने वाला रास्ता किस ओर है?"

"क्या तुम्हें काशी जाने का मार्ग नहीं मालूम है? इधर से निकल जाओ!" मच्छरिकोशिय क्रोध से चिल्ला कर बोला।

"चिल्लाते क्यों हो? ओह, ब्राह्मण भोज के लिए हलुआ बना रहे हो? उन की पंक्ति में मैं भी बैठ जाता हूँ," इंद्र ने हँसते हुए कहा। "भोज दावत कुछ भी नहीं है। जाओ, यहाँ से हट जाओ। चलो, निकलो।" मच्छरिकोशिय ने डाँटा। "बेटा, नाराज़ क्यों होते हो? मैं अभ्यागत हूँ। तुमने जो कुछ बनाया, उसमें से थोड़ा मुझे भी खिलाओ, तो तुम्हारा पुण्य होगा।

"अकेले कभी नहीं खाना चाहिए। यदि तुम ऐसा न करोगे तो तुम्हें, नरक-वास मिलेगा, परन्तु दान करने से तुम्हें उत्तम लोकों की प्राप्ति होगी।"

इस प्रकार इंद्र ने उसको उपदेश दिया। मच्छरिकोशिय बोला, "अच्छी बात है! वहाँ पर बैठ जाओ। तुम्हें भी थोड़ा सा हलुआ दे दूँगा।"

इसके बाद क्रमशः चन्द्र, सूर्य, मातलि और पंचशिखाग्नि भी ब्राह्मणों के वेष में आये और जम कर बैठ गये।

हलुआ बनने के बाद मच्छरिकोशिय ने सबको

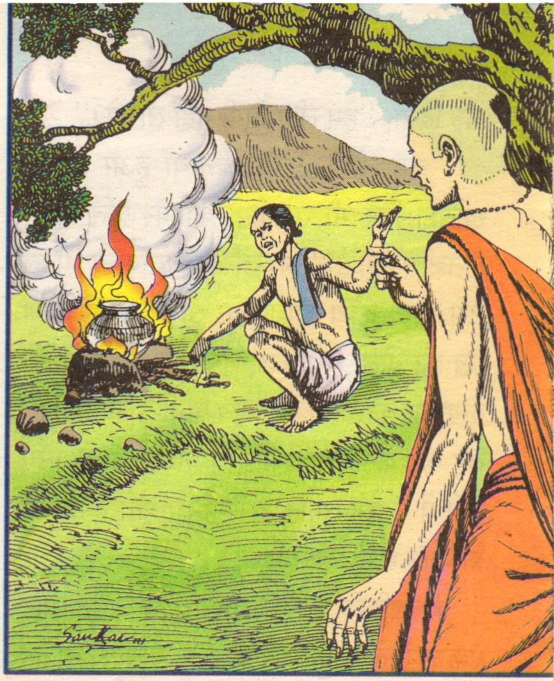

सम्बोधित कर कहा, "तुम लोग पत्तल लेकर आओ। हलुआ परोस देता हूँ।" ब्राह्मणों ने अपने हाथ फैलाये, बस, उनके हाथों में गाड़ी के पहियों के बराबर के कमल पत्र प्रत्यक्ष हुए।

"मैं इतने बड़े पत्तलों में नहीं परोसूँगा। मंदार जैसे पत्तों को लेकर आओ," मच्छरिकोशिय ने कहा। इस पर वे मंदार के पत्ते ले आये, लेकिन वे पत्ते भी केले के पत्तों के बराबर थे। अंत में उस ने उन पत्तों पर हलुआ परोस दिया। उन सब को परोसने के बाद भी बर्तन में बहुत सा हलुआ था। इतने में पंच शिखाग्नि कुत्ते का रूप धर कर उस पात्र में अपना मुँह डालने को हुआ। समय पर मच्छरि-कोशिय ने अपने हाथों से बर्तन को ढक दिया। फिर भी उसके हाथों पर कुत्ते का झूठन छू गया।

उसने ब्राह्मणों से कहा, "मेरे हाथ धोने के लिए पानी ले आओ।" पर उन लोगों ने साफ़

कह दिया, ''हम लोग पानी नहीं लायेंगे।''

''तुम लोगों ने मेरा बनाया हुआ हलुआ खाया। फिर भी तुमलोगों की मेरे प्रति इतनी कृतज्ञता नहीं है?'' मच्छरिकोशिय बोला। पहले उसे बहुत क्रोध आया, पर अपने पर नियंत्रण रख कर बोला, ''अच्छ, तुम लोग मेरे बर्तन की देखभाल करते रहो। मैं स्वयं पानी ले आता हूँ।'' यह कह कर मच्छरिकोशिय पानी लाने के लिए नदी में उतरने लगा। उसी समय कुत्ते ने हलुआ के बर्तन में मुँह डाल दिया।

मच्छरिकोशिय को बहुत क्रोध आया। वह एक लाठी लेकर कुत्ते का पीछा करने लगा। लेकिन इतने में वह कुत्ता घोड़े का रूप धर कर मच्छरिकोशिय का पीछा करने लगा। वह पल-पल में अपना रूप बदलते हुए कभी छोटा और कभी बड़ा दिखाई देने लगा। कभी वह भेड़िया बन जाता तो कभी घोड़ा। इसपर मच्छरिकोशिय प्राणों के भय से थर-थर काँपने लगा। वह उन ब्राह्मणों से प्रार्थना करने लगा, ''हे महानुभावों, आप लोग इस घोड़े से मेरी रक्षा कीजिए।''

दूसरे ही क्षण वे लोग अपने असली रूपों में हवा में उड़ कर खड़े हो गए।

''आप लोग मनुष्य नहीं, देवता हैं। आप कृपया यह बताइये कि आप लोग कौन हैं और यहाँ पर किसलिए आये हैं!'' मच्छरिकोशिय ने उनसे निवेदन किया।

''हम तुम्हारे पितृदेव हैं। मनुष्य का जन्म धारण करके दान-पुण्य करने के परिणाम स्वरूप देवत्व को प्राप्त हुए हैं। तुम कंजूस बनकर अपने वंश के आचार को त्याग कर नरक को प्राप्त होने जा रहे थे। इसलिए हम तुम्हें ठीक मार्ग दिखाने के लिए आये हैं। तुम भी अपने घर लौट कर हमारे जैसे दान-पुण्य करके देवत्व को प्राप्त कर लो।'' इंद्र ने उसे समझाया।

इंद्र का उपदेश सुनते ही मच्छरिकोशिय सोच में पड़ गया। उसे अपने व्यवहार पर बहुत पश्चाताप हुआ और उस का हृदय बदल गया। उसने घर लौट कर अपनी सारी संपत्ति गरीबों में दान कर दी और तपस्या करने के लिए हिमालय के पर्वतों में चला गया।

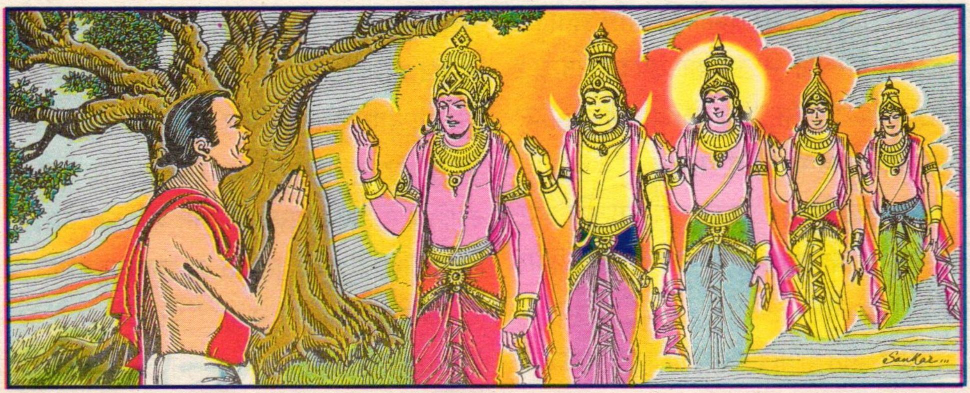

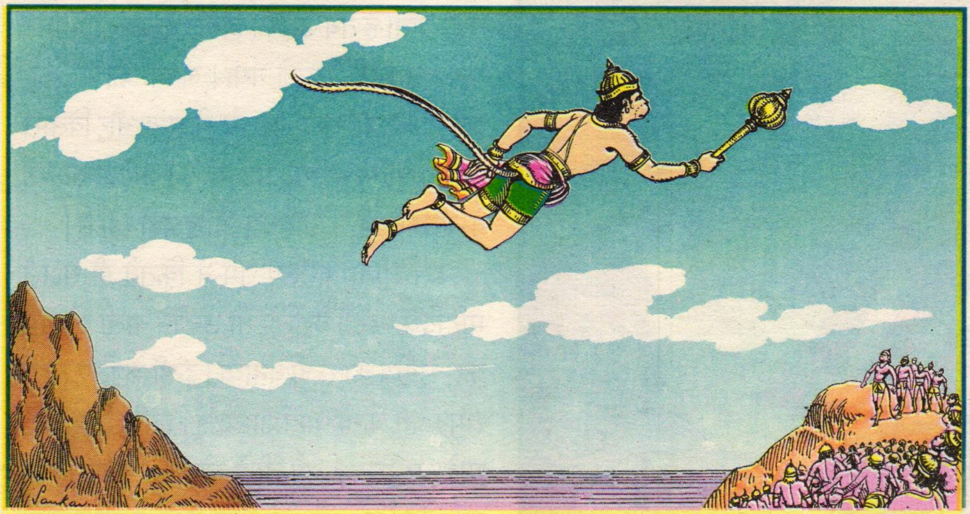

रामायण

हनुमान शिंशुपा वृक्ष पर चढ़कर, चारों ओर देखने लगा। अशोक वन इन्द्र के नन्दनवन की तरह था। उसमें फल और फूलों के पेड़ थे। पक्षी और पशु थे। जगह-जगह चबूतरे थे। महल और कमलों के तालाब थे। सबसे अधिक अशोक वृक्ष थे।

कुछ दूरी पर ऊँचा सफेद मण्डप दिखाई दे रहा था। उसमें हज़ार खम्भे थे। मोती से जड़ी सीढ़ियाँ और सोने के चबूतरे थे। वह एक चैत्य के आकार में था।

फिर हनुमान को सीता दिखाई पड़ी। उसने साड़ी पहिन रखी थी। उसके चारों ओर राक्षस स्त्रियाँ थीं। वह बहुत निर्बल हो गई थी। आहें भर रही थी। दयनीय प्रतीत होती थी।

न नहाने की वजह से शरीर पर धूल जमा थी। गहने न के बराबर थे। उसके बालों की एक चोटी-सी बन गई थी।

वह स्त्री सीता ही होगी, यह निर्धारित करने के लिए हनुमान ने यों सोचा। जब रावण उसको उठाकर ले जा रहा था, तो उस स्त्री में वे कुछ लक्षण दिखाई दिये, जो उन्होंने उसमें देखे थे। चन्द्रमा-सा मुँह था। लम्बी भौंहें। काले बाल, सुन्दर कमर-सीता यद्यपि बहुत दुखी और निर्बल थी तो भी ये लक्षण उसमें साफ़ दिखाई देते थे।

यही नहीं, राम ने भी सीता की कुछ निशानियाँ बताई थीं। इसलिए वह इस स्त्री को पहिचानने की पूरी कोशिश कर रहा था।

राम ने जिन आभूषणों के बारे में कहा था, उनको सीता ने पहनना न चाहा और पास के

सुन्दर काण्ड - ३

पेड़ की टहनियों पर लटका दिया था। परन्तु उनमें कान और हाथ के आभूषण थे। उसके कान और हाथ के निशान भी यह बता रहे थे।

सीता ने ऋष्यमूक पर्वत पर जो गहने गठरी में बाँध कर फेंक दिये थे, वे इनमें न थे। जिस कपड़े में सीता ने गहने बाँधे थे और जो वस्त्र उसने पहन रखे थे, एक ही थे। परन्तु साड़ी ज़रूर बहुत गन्दी हो गई थी। यह सब देख हनुमान बड़ा खुश हुआ क्योंकि उसे विश्वास हो गया कि वह सीता ही है। राम के बताये चिह्न, आभूषणों की बातें, अशोक वाटिका में बैठी दुखी स्त्री की अवस्था सब इस तरह मेल खा रही थी कि हनुमान को निश्चय करने में देर नहीं लगी कि यही सीता हो सकती है।

जब हनुमान को यह विश्वास हो गया कि यही सीता है तब उसकी हालत देखकर, हनुमान का दिल भारी-सा हो गया। जनक की लड़की, दशरथ की बड़ी बहू, कितने ही सुख और विलास उसको भोगने थे और अब यह इन भयंकर राक्षसों के बीच बैठकर, अविराम आँसू बहा रही है।

इस सीता के लिए राम ने कितने ही राक्षस मार दिये। इन्हीं के लिए तो उन्होंने वाली को मार कर, सुग्रीव को राजा बनाया। इन्हीं के लिए तो मैं समुद्र पार करके यहाँ आया हूँ। इनके लिए राम, यदि ज़रूरत हुई, तो तीनों लोकों में उथल पुथल मचा देंगे। जब मुझ पराये को ही सीता को देखकर इतना दुख हो रहा है, तो राम को उसे देखकर कितना दुख होगा। राम और लक्ष्मण दोनों महावीर हैं। उन्हें जब मालूम होगा कि सीता यहाँ दुखी होकर विलाप कर रही है तो वे रावण सहित सारी लंका को नष्ट करके सीता को ले जायेंगे। उन्हें मालूम नहीं है कि सीता कहाँ है, इसीलिए वे लाचार हैं। खैर, अब सीता का पता लग गया है। हमें जल्दी से जाकर राम को यह सब बताना होगा। हनुमान ने शिंशुपा वृक्ष पर बैठकर यह सब सोचा।

रात काफ़ी गुज़र चुकी थी। राक्षस ब्राह्मणों ने वेदाध्ययन प्रारम्भ कर दिया था। मंगल वाद्य बजने लगे थे। रावण उनकी ध्वनि सुनकर उठा और सीता को याद करने लगा। तुरंत उसने समस्त आभूषण धारण किये और चमकते अशोक वन की ओर निकला। उसके साथ सौ स्त्रियाँ थीं। उनमें से कई ने सोने के दीपस्तम्भ, कई चामर और कई पंखे पकड़े हुए थे। एक ने दायें हाथ में

मोती मणियों से जड़ा मद्य पात्र पकड़ रखा था। एक ने पीछे सीकवाली छतरी पकड़ रखी थी।

जब वे अशोक वन के द्वार के पास आये, तो पत्तों की आड़ में से हनुमान ने उनको देखा। रावण को अच्छी तरह देखने के लिए हनुमान नीचे की टहनी पर उतरा।

रावण अभी थोड़ी दूर ही था कि सीता भय से काँपने लगी। वह रोने लगी। कठिन भूमि पर बैठकर, भय के कारण रोती हुई सीता से रावण ने इस प्रकार कहा, "मुझे देखकर क्यों डरती हो? यहाँ तुम्हें कोई किसी प्रकार की हानि नहीं पहुँचा सकता? मैं तुम पर मुग्ध हूँ। मैं तुम से अपने प्राणों से भी अधिक प्यार करता हूँ। मैं तुम्हारे लिए कुछ भी कर सकता हूँ। मैं तुम्हारे लिए तीनों लोकों को जीत कर ला सकता हूँ। पर तुम्हारे हृदय में मेरे लिए कुछ भी प्रेम नहीं है। क्यों, यों दुखी होती हो? मेरा विश्वास करो। मुझे स्नेहबुद्धि से देखो, बिना साज शृंगार किये गन्दे कपड़े पहिनकर, तुम्हारा यों उपवास करना, तुम्हें बिलकुल नहीं शोभता। बहे हुए पानी की तरह यौवन फिर वापिस नहीं आता। भोगों का अनुभव करो। तुम-सी सुन्दरी इस संसार में कोई नहीं है। मेरा तुमने पाणिग्रहण किया, तो मैं तुम्हें बड़ी रानी बना दूँगा। सारा संसार जीतकर तुम्हारे पिता को उपहार में दे दूँगा। राजभार को खोकर, जंगलों में फिरनेवाला अभागा राम जीवित है कि नहीं, इसमें सन्देह है। अगर वह जीवित भी है, तो वह तुमको देख भी नहीं सकता। रावण की लंका तक पहुँचना

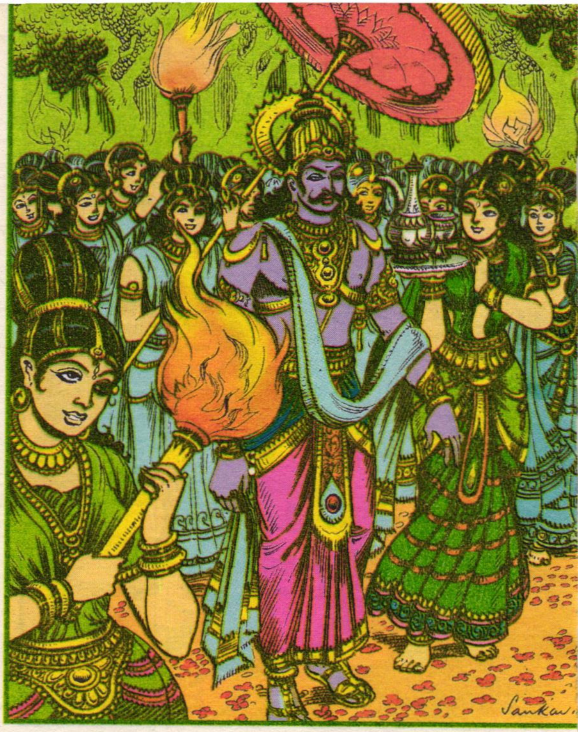

उसके लिए असम्भव है। जब हिरण्यकश्यप की पत्नी को इन्द्र उठा ले गया था, तो उसने नारद के द्वारा उसे बुलवा लिया था। राम की भी यही हालत है। परन्तु चाहे वह कितनी भी विनम्रता से माँगे, मैं उसे तुम्हें कभी नहीं दूँगा। जब यों तुम धूल-धूमरित हो, तब भी तुम्हारा सौन्दर्य मुझे मुग्ध कर रहा है और तुम अच्छे कपड़े और गहने पहन कर मुस्कुराओगी तब तो कहना ही क्या? मज़े से खाओ, पीओ, तुम्हें किसी बात की कमी नहीं है। सुख और सन्तोष से रहो।"

यह सुन एक तिनके को अपने और रावण के बीच रखकर सीता ने यों कहा, "मुझे छोड़ दो। पापी के लिए मोक्ष जितना दुर्लभ है, उतना ही मैं तुम्हारे लिए दुर्लभ हूँ। यदि तुम्हारी स्त्रियों को और कोई चाहने लगे, उन्हें और कोई उठा कर ले

राम क्षमा कर सकते हैं। नहीं तो राम और लक्ष्मण, तुम्हारा सर्वनाश कर देंगे। तुमसे बदला लेंगे। राम ने जनस्थान में जब राक्षसों को मार दिया था, तो तुम डर गये और जब वे और लक्ष्मण बाहर गये हुए थे, तो मुझे चोरी से उठा लाये। यदि आसपास होते, तो तुम भीगी बिल्ली बनकर भाग जाते। राम और लक्ष्मण से युद्ध न मोल लो। जब तक उन्हें मेरे बारे में नहीं मालूम है, तभी तक तुम्हारी खैर है। जैसे ही मेरी हालत और इस स्थान के बारे में उन्हें मालूम होगा, वे तुम्हें मार कर मुझे ले जायेंगे। तुम्हारी भलाई इसी में है कि तुम मुझे सम्मान के साथ राम के पास पहुँचा दो।''

सीता के ये परुष वाक्य सुनकर रावण बड़ा खिझा। ''तुम्हारी हरेक बात पर तुमको मौत की सज़ा दी जा सकती है। परन्तु मोहवश मैं वैसा नहीं कर रहा हूँ। दो मास की अवधि शेष है। यदि तुम ने तब तक मेरी पत्नी होना स्वीकार नहीं किया, तो मैं तुमको मरवा कर खा जाऊँगा। सावधान।''

उसने सीता के पास बैठी राक्षस स्त्रियों से कहा, ''तुम जैसे भी हो, सीता का मन मेरी ओर लगाओ। जो काम उनको पसन्द नहीं है, ऐसे काम करने को भी मैं तुमको अनुमति देता हूँ।''

रावण के साथ की स्त्रियों में देव, गन्धर्व स्त्रियाँ थीं। सीता की स्थिति देख दुखी होकर, उन्होंने संकेतों द्वारा, अपनी सहानुभूति प्रकट की। रावण की पत्नी धान्क मालिनी ने रावण का आलिंगन करके कहा, ''इन्हें तुम पर प्रेम नहीं है। क्यों तुम

जाये और यही बात वह उनसे कहे जो तुम मुझसे कह रह हो तो तुम क्या सोचोगे? शायद तुम्हें समझानेवाला कोई नहीं है, और शायद तुम किसी के समझाने पर भी नहीं सुनते हो? तुम्हें भोगविलास के अतिरिक्त और कुछ दिखाई नहीं देता। तुम काम और अहंकार से अन्धे हो रहे हो। परन्तु जो दुष्कर्म तुमने किया है, उससे तुम्हारी, तुम्हारे राज्य की, तुम्हारे राक्षस कुल की हानि ही होगी। मैं तुम्हारी अन्तःपुर की स्त्रियों पर बड़प्पन नहीं दिखाना चाहती। न मैं तुम्हारी धन-सम्पदा ही चाहती हूँ। मैं तुम्हारी लंका से बड़ा साम्राज्य छोड़ राम के साथ वन में चली आई। मैं चाहती हूँ, बस, अपने पति के साथ ही रहना। यदि तुम हमेशा सुखी रहना चाहते हो, तो मुझे राम के पास पहुँचा दो। राम से मैत्री कर लो। शरणागतों को

उन पर यों मुग्ध होते हो? शायद उसके भाग्य में सुख नहीं है। इसलिए तुम्हें नहीं चुन रही है।''

रावण यह सुनकर मुस्कुराया। स्त्रियों के साथ अपने घर चला गया। उसके जाने के बाद राक्षस स्त्रियों ने सीता को बातों से मनाया। आयुधों से डराया। किसी ने रावण की प्रशंसा की, तो किसी ने राम की निन्दा की। ''अगर जो हमने कहा, नहीं किया, तो हम तुम्हें खा जायेंगे और रावण से कह देंगे कि तुम मर गयी हो।'' एक राक्षसी ने कहा।

''झगड़ा न करना, इसके समान-समान टुकड़े करके बाँटना।'' एक और ने कहा। ''अगर साथ ताड़ी हो, तो और भी अच्छा होगा।''दूसरी ने कहा।

सीता को एक तरफ़ भय और दूसरी तरफ़ घृणा हो रही थी। वह अपनी जगह से उठी। शिंशुपा वृक्ष की ओर जाकर अशोक वृक्ष के नीचे उसकी टहनी पकड़कर, खड़े होकर अपनी दुस्थिति पर सोचने लगी। क्या राम और लक्ष्मण मर गये हैं? क्या रावण ने उनको मरवा दिया है... थोड़ी देर सीता को यह सन्देह हुआ। फिर उसे सन्देह हुआ कि कहीं उन्होंने संन्यास न ले लिया हो। इस प्रकार सीता के मन में नाना प्रकार की आशंकाएँ होने लगीं। कभी वह सोचती कि उन्हें यह मालूम नहीं होगा कि मैं कहाँ हूँ, किस हालत में हूँ, नहीं तो वे अब तक मेरी खोज में यहाँ आ गये होते। इस प्रकार सोचते-सोचते भय और सन्देह से सीता सन्तप्त हो उठी। इधर राक्षस स्त्रियाँ भी

उसके चारों ओर बैठकर उनको सताती जाती थीं।

इतने में त्रिजटा नामक एक वृद्ध राक्षसी ने, जो सोकर उठी थी, कहा, "सीता को मत खा जाना। चाहो, तो मुझे खा लो। मैंने एक भयंकर स्वप्न देखा है।"

राक्षस स्त्रियाँ यह सुन कर डर गईं। उन्होंने त्रिजटा से पूछा कि क्या सपना आया था।

"राम सफेद फूलों की माला पहन कर, सफेद कपड़े पहिन कर, दाँत की पालकी पर सवार हो, लक्ष्मण के साथ आकाश के मार्ग से लंका पहुँचे। उनकी पालकी को हज़ार हंस ढो रहे थे और सीता सफेद साड़ी पहिन कर, समुद्र के बीच के श्वेत पर्वत के ऊपर थी... यह सपना मैंने देखा। राम, लक्ष्मण चार दाँतोंवाले बड़े हाथी पर सवार होकर, लंका में घूम फिर रहे थे। राम का हाथी, जब श्वेत पर्वत पर पहुँचा, तो सीता भी उस पर सवार हो गई। राम की गोदी में से सीता उठी तब ऐसा लगा, जैसे सूर्य और चन्द्रमा को उन्होंने हाथों में पकड़ लिया हो। फिर मैंने राम को आठ सफेद बैलोंवाले रथ पर आते देखा। सीता को मैंने पुष्पक विमान पर, जिस पर राम और लक्ष्मण सवार थे उत्तर की ओर जाते देखा और रावण गन्नेर फूल पहनकर, सारे शरीर पर तेल पोतकर, लाल कपड़े पहन कर, नशे में चूर भूमि पर लुढ़कता हुआ दिखाई दिया। फिर एक बार देखा कि रावण पुष्पक विमान से गिर गया। मुझे और बिना बालवाले काले कपड़े पहने हुए स्त्री को घसीटते हुए उसे देखा। फिर रावण लाल फूल पहन कर, रक्त चन्दन पोतकर, तेल पीता, हँसता, उछलता कूदता, पागल गधों के रथ पर जाता दिखाई दिया। एक बार जब रावण उस पर दक्षिण की ओर जा रहा था, तो उस पर से गिर पड़ा। वहाँ से उठकर गालियाँ बकता हुआ, वह कीचड़ के पोखर में डूब गया। कुम्भकर्ण भी इसी स्थिति में दिखाई दिया। रावण के लड़कों ने भी शरीर पर तेल पोत रखा था। रावण को सूअर पर, इन्द्रजित को मगर पर, कुम्भकर्ण को ऊँट पर सवार होकर, मैंने दक्षिण की ओर जाते देखा। गोपुर और तोरण टूटकर गिर गये और लंका फिर समुद्र में डूबती हुई दिखाई दी। राम के एक दूत बन्दर ने लंका को जला दिया। तुम सीता को न सताओ। लंका पर अवश्य आपत्ति आनेवाली है।"

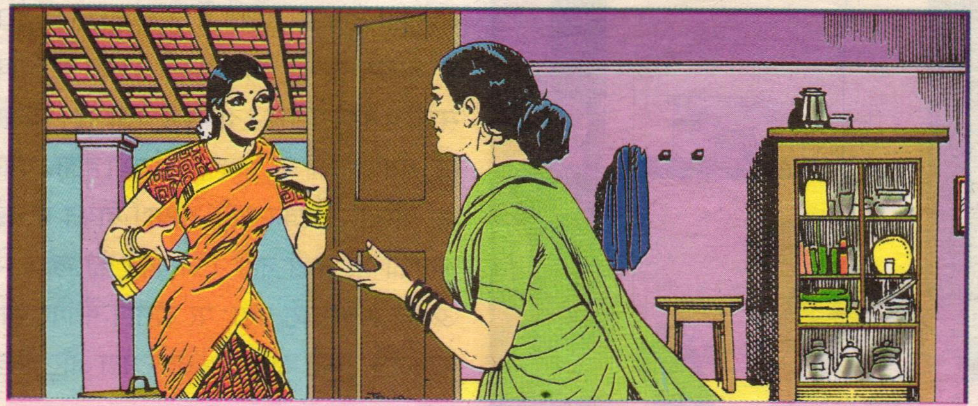

पड़ोसी झंझट

मालती और नंदना के बीच गहरी मैत्री थी। नंदना के पिता ने शहर में जाकर कोई व्यापार शुरू किया, इस कारण उसका परिवार शहर चला गया। अपनी सखी मालती को छोड़कर जाते वक़्त नंदना से उसे एक बार शहर में आने का अनुरोध किया और शहर पहुँचने के बाद अपना पता भी लिख भेजा।

थोड़े दिन गुजर गये। मालती के मन में नंदना को देखने की इच्छा हुई। एक दिन मालती के गाँव का एक व्यापारी शहर जा रहा था, उसने मालती को नंदना के मकान के समीप उतार दिया और वह अपनी गाड़ी हँकवाकर चला गया।

मालती ने बड़ी आसानी से नंदना के घर का पता लगाया, लेकिन नंदना के घर पर ताला लगा था। उसने पड़ोसी घर के निकट पहुँचकर भीतर झाँककर देखा।

उस घर की स्त्री ने मालती से पूछा, ''बेटी, तुम कौन हो? क्या चाहती हो?'' मालती ने उस स्त्री को अपनी हालत बताई और पूछा, ''नंदना कहाँ गई है? और कब घर लौटेगी?''

उस औरत ने समझाया, ''बेटी! नंदना के किसी रिश्तेदार के घर शादी है, इसलिए उसका पूरा परिवार शादी में गया हुआ है। संध्या तक लौट सकते हैं। तब तक तुम हमारे घर में रह जाओ, तुम अकेली इस शहर में कहाँ रह सकती हो?''

ये बातें सुनने पर मालती की जान में जान आ गई। मालती का पिता बराबर उसे समझाया करता था कि पहले ही सूचना दिये बिना किसी के घर नहीं जाना चाहिए। अब मालती की समझ में आ गया कि वे ऐसा क्यों कहा करते थे।

पड़ोसी औरत के एक कन्या थी। उसका नाम जानकी था। जानकी और मालती के बीच जल्दी

२५-वर्ष पूर्व चन्दामामा में प्रकाशित कहानी

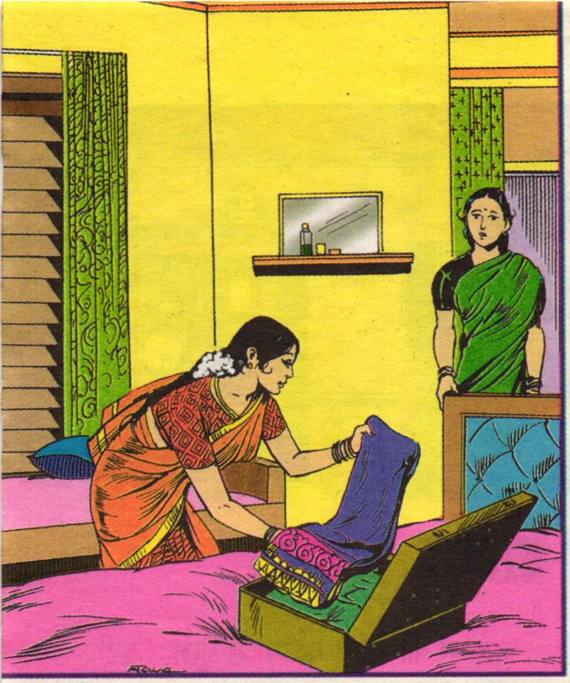

जानकी! तुम उस दावत में जरूर जाओ।'' इस पर जानकी ने कोई आपत्ति नहीं उठाई। चुपचाप साड़ी व गहने पहनकर दावत में चली गई। संध्या हुई, रात होने को थी, पर शादी में गया हुआ नंदना का परिवार लौटकर नहीं आया। दावत में गई जानकी भी लौटी नहीं। जानकी की खोज में उसका पिता चल पड़ा, पर दालान में गिरे एक कागज़ के टुकड़े को हाथ में लेकर पढ़ा और चीख उठा।

मालती ने झट से जानकी के पिता के हाथ से वह कागज़ लेकर पढ़ा। उसमें यों लिखा हुआ था, ''माँ, मुझे, आज ही पता चला कि गहने एक औरत के लिए दुश्मन होते हैं। मैं दावत से लौट रही थी, तब एक संकरी गली में चार गुंडों ने छुरी दिखाकर मेरे सारे गहने लूट लिये। मैं मालती को अपना चेहरा कैसे दिखा सकती हूँ? पिताजी क्रोध में आकर मेरा गला घोंट देंगे। इसीलिए मैं कहीं चली जा रही हूँ। मेरी खोज मत करना।''

उस चिट्टी को पढ़ते ही मालती रो पड़ी। कहीं जानकी कोई अनुचित कार्य न कर बैठे? गहनों से भी ज़्यादा जान कीमती होती है न?

चिट्टी पढ़कर जानकी की माँ रो पड़ी। जानकी के पिता ने मालती को समझाया, ''बेटी, मैं जैसे-तैसे थोड़े दिनों में तुम्हारे गहनों का मूल्य चुका दूँगा।'' यों कहते वह अपने आँसू पोंछने लगा।

''सुनिये, आप मेरे गहनों की चिंता न कीजिए। मुझे गहनों का मूल्य चुकाने की ज़रूरत नहीं है। पहले आप जानकी की खोज करने के लिए आदमी

ही मैत्री हो गई। वैसे जानकी के पिता की कोई नौकरी नहीं है। अच्छी खासी आमदनी भी नहीं है फिर भी एक अपरिचिता के साथ उनका यह आदर-सत्कार देख मालती उन लोगों के उस व्यवहार से काफी प्रभावित हुई। उस दिन शाम को जानकी की एक सखी की शादी की दावत थी। मगर जानकी दावत में जाने में सकुचा रही थी।

जानकी अपनी माँ से बोली, ''माँ, मैं उस दावत में नहीं जाऊँगी। उस शादी में सब संपन्न लोग आते हैं। मुझे तो पहनने के लिए कोई अच्छी साड़ी तक नहीं है। गहने पहने बिना उस दावत में जाऊँ तो लोग मुझे कोई नौकरानी समझेंगे।''

ये बातें सुनने पर मालती को जानकी पर दया आई। उसने अपने संदूक से रेशमी साड़ी निकालकर दे दी और गहने सजाकर बोली, ''बहन

भेज दीजिए। कल रात को अगर आप मुझे आश्रय न देते तो शायद ये डाकू मेरे गहने लूट लेते।'' मालती ने सहानुभूति दिखाई। इसके बाद जानकी का पिता अपनी बेटी की खोज में चल पड़ा।

थोड़ी देर बाद उस गली में किसी गाड़ी के रुकने की आहट हुई। इस पर मालती और जानकी की माँ बड़ी आतुरता के साथ बाहर आई। नंदना का सारा परिवार उस गाड़ी से उतर पड़ा। पड़ोसी मकान की ड्योढ़ी पर खड़ी मालती को देखते ही नंदना आश्चर्य में आ गई। उसने दौड़कर मालती के साथ आलिंगन किया। इसके बाद मालती अपने संदूक़ के साथ नंदना के घर में आ गई।

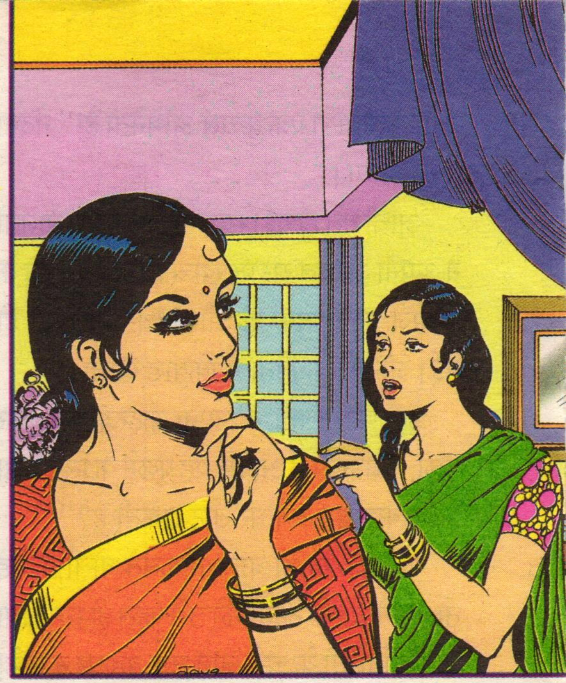

मालती के भीतर प्रवेश करते ही नंदना ने कहा, ''मालती, तुम पहले अपना संदूक़ खोलकर जाँच कर देख लो, कहीं तुम्हारा पूरा सामान है या नहीं? तुम्हारी कैसे इन चोरों के दल से ही दोस्ती हो गई?''

मालती ने चकित नंदना को सारा वृत्तांत सुनाया और दुख भरे स्वर में कहा, ''नंदना, तुम भूल करती हो! ये लोग बेचारे बड़े ही अच्छे हैं! मेरी वज़ह से जानकी कहीं चली गई है।''

नंदना ने कड़ककर कहा, ''वह कहीं नहीं जाएगी! मजे से अपने रिश्तेदारों के घर पहुँच गई होगी। यह सब एक नाटक है। शायद तुम शहर में होनेवाली धोखाधड़ी को नहीं जानती। मीठे शब्दों से ही गला घोंट देते हैं। खासकर इस परिवार के बारे में अड़ोस-पड़ोस के सभी लोग अच्छी तरह से जानते हैं। हम लोग थोड़ा भी असावधान रहें तो कपड़े-बर्तन तक हड़प लेते हैं। हम लोग इनसे तंग आ गये हैं। क्या तुमने यह भी सोचने का प्रयत्न नहीं किया कि जब गुंडों ने जानकी के गहने लूटे, तब उसे चिट्ठी लिखने के लिए क़लम और काग़ज़ कहाँ से और कैसे मिले? आसानी से धोखा खाने के लिए तुम उन्हें जो मिल गई हो न?''

इस पर मालती गुस्से में आ गई। उसने नंदना से कहा, ''नंदना, मैं गाँव की लड़की भले ही होऊँ, इस शहर के दगाबाजों के खेल मेरे सामने चलने के नहीं, पर मुझे तुम्हारी मदद की ज़रूरत है!'' इन शब्दों के साथ उसने अपनी योजना नंदना के कान में डाल दी।

''ओह, मालती! तुम तो बड़ी होशियार हो! तुम्हारी चाल चलाने के लिए हमारे साथ घर आये मेरा मौसेरा भाई मदद देगा। वह तो नाटकों में

काम करनेवाला एक कुशल अभिनेता है!'' नंदना ने समझाया।

आधी रात हो गई। सारा गाँव सो गया। मालती ने अपना आंचल सर पर खींच लिया, जानकी के दरवाजे पर दस्तक दी और अंधेरे में खड़ी हो गई। जानकी के पिता ने किवाड़ खोला।

इस पर मालती ने अपना कंठस्वर बदलकर पूछा, ''जानकी ने आपसे यह पूछने के लिए भेजा है कि क्या वह अब घर लौट सकती है?''

जानकी की माँ बाहर निकलते बोली, ''यह तो बावरी लड़की ठहरी! मैंने उसे पहले ही समझाया था कि मालती के चले जाने तक वह घर न लौटे! उससे कह दो कि उसे कब घर लौटना है, हम ही मौक़ा देखकर ख़बर कर देंगे, पर तुमने यह नहीं बताया कि आख़िर तुम हो कौन?''

''मैं मालती हूँ।'' यों कहते मालती रोशनी में आकर खड़ी हो गई। इस पर जानकी के माँ-बाप अवाक् रह गये। उनके चेहरे पीले पड़ गये।

इसके बाद अंधेरे में मालती के पीछे सिपाही के वेष में स्थित नंदना का मौसेरा भाई आगे बढ़कर कठोर स्वर में बोला, ''अब तुम्हारी पोल खुल गई। तुम तीनों मजे से जेल की सीखचों को गिनने कारागार में पहुँच जाओगे।''

सिपाही को देख जानकी के माँ-बाप थर-थर कांप उठे और गिड़गिड़ाते हुए बोले, ''मालती, हमें माफ़ कर दो। हमने तुम को दगा दिया है। आज तक हमने इज़्ज़त के साथ अपने दिन काटे। हमें इस अपमान से बचाओ। तुम्हारे गहने तुम्हें अभी वापस ला देते हैं।''

मालती ने साफ़ कह दिया कि उसके गहनों के साथ पड़ोस के घरों से चुराई गई सारी चीज़ें सौंप दे तो वह उन्हें माफ़ कर सकती है।

जानकी के माँ-बाप ने मिनटों में जानकी को बुला भेजा, मालती के गहनों के साथ अन्य घरों से चुराई गई सारी चीज़ें सब को सौंप दीं, तब सवेरा होने के पहले ही मकान खाली करके वे लोग कहीं चले गये।

इस पर नंदना ने कहा, ''मालती, तुमने हमें पड़ोसी झंझट से बचाया। इस खुशी में मैं तुम्हें बढ़िया दावत दूँगी।''

आपकी मनपसन्द नायक आर्य की वापसी

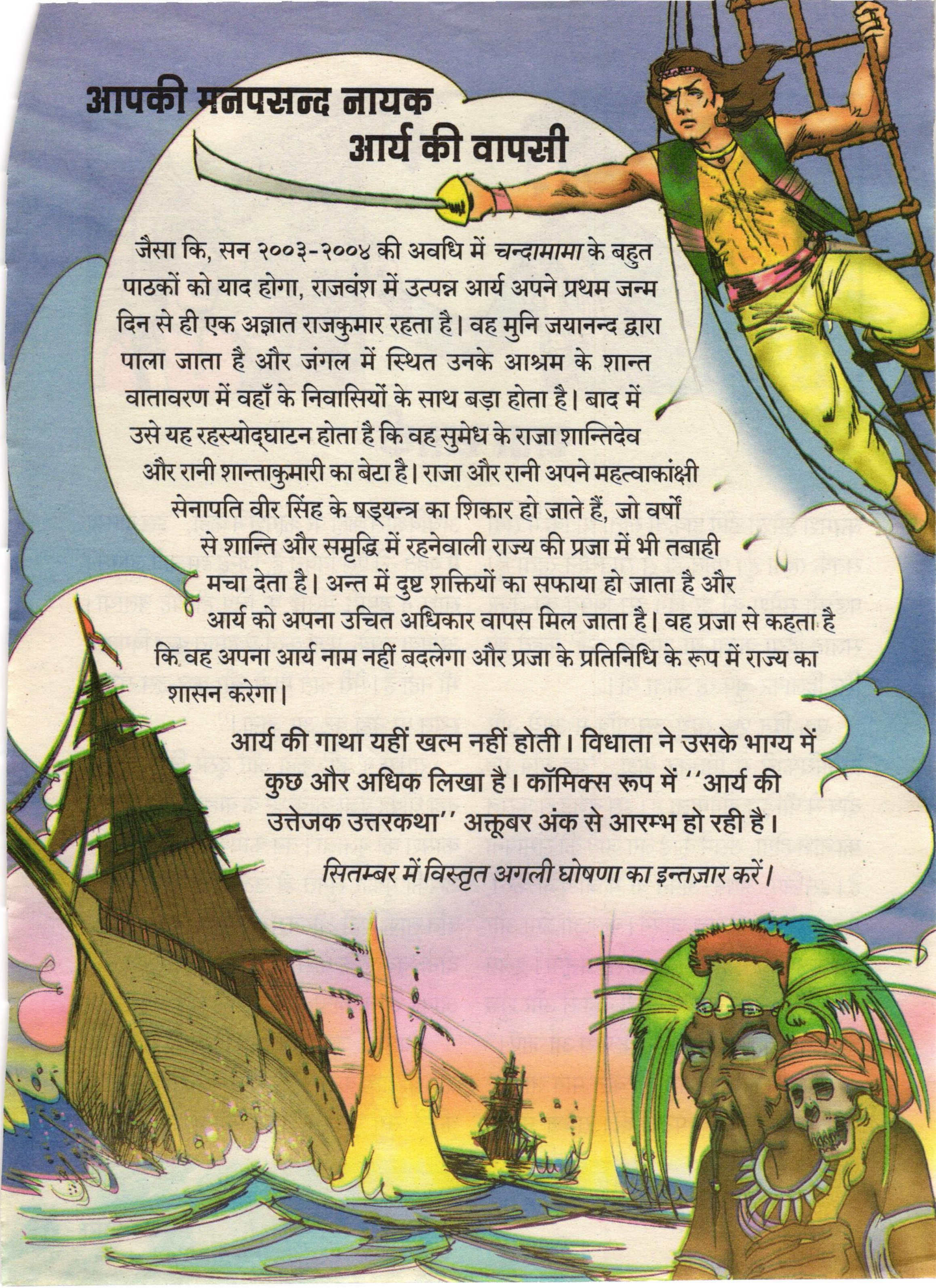

जैसा कि, सन २००३-२००४ की अवधि में *चन्दामामा* के बहुत पाठकों को याद होगा, राजवंश में उत्पन्न आर्य अपने प्रथम जन्म दिन से ही एक अज्ञात राजकुमार रहता है। वह मुनि जयानन्द द्वारा पाला जाता है और जंगल में स्थित उनके आश्रम के शान्त वातावरण में वहाँ के निवासियों के साथ बड़ा होता है। बाद में उसे यह रहस्योद्घाटन होता है कि वह सुमेध के राजा शान्तिदेव और रानी शान्ताकुमारी का बेटा है। राजा और रानी अपने महत्वाकांक्षी सेनापति वीर सिंह के षड्यन्त्र का शिकार हो जाते हैं, जो वर्षों से शान्ति और समृद्धि में रहनेवाली राज्य की प्रजा में भी तबाही मचा देता है। अन्त में दुष्ट शक्तियों का सफाया हो जाता है और आर्य को अपना उचित अधिकार वापस मिल जाता है। वह प्रजा से कहता है कि वह अपना आर्य नाम नहीं बदलेगा और प्रजा के प्रतिनिधि के रूप में राज्य का शासन करेगा।

आर्य की गाथा यहीं खत्म नहीं होती। विधाता ने उसके भाग्य में कुछ और अधिक लिखा है। कॉमिक्स रूप में ''आर्य की उत्तेजक उत्तरकथा'' अक्तूबर अंक से आरम्भ हो रही है।

सितम्बर में विस्तृत अगली घोषणा का इन्तज़ार करें।

सदा सतर्क

कामेश हमेशा डींगें हाँकता रहता था कि मैं सदा सतर्क रहता हूँ। पहले ही से सावधान रहता हूँ। पड़ोसी रामेश को हर दिन इस विषय को लेकर सलाह दिया करता था और वह 'हाँ' कहते हुए सिर हिलाकर चुप रह जाता था।

एक दिन एक साधु उस गाँव में आये और ग्रामाधिकारी से मिलकर कहा, ''यह गाँव ग्रह दोष से पीड़ित होनेवाला है। इस वजह से फ़सल का नाश होगा, उसमें कीड़े लग जाने की संभावना है। इसलिए, अपने-अपने घर में जो पूजा करेंगे, वे इस ग्रह दोष से बच जाएँगे। कल आऊँगा और इस पूजा की पद्धति पर प्रकाश डालूँगा। इसमें जिन्हें रुचि है, वे प्रातःकाल ही नहा लें और शुद्ध होकर गाँव के बीच के चबूतरे के पास आ जाएँ।''

ग्रामाधिकारी ने साधु की बात मान ली और गाँव भर में मुनादी पिटवा दी। रामेश ने इसे अंधविश्वास कहा पर कामेश ने कहा, ''इस दुनिया में बहुत-से ऐसे विषय हैं, जिन्हें हम नहीं जानते। साधु ने हमारी भलाई के लिए ही यह बताया। अलावा इसके, पूजा करने से हमारा कुछ बिगड़ता भी नहीं है। मेरी बात मानो और कल उस सभा-स्थल पर नहा कर आ जाना।''

रामेश ने 'हाँ' कहा और दूसरे दिन सवेरे ही नहा धोकर पूजा करके घर के बाहर आकर पड़ोसी कामेश को बुलाया। तब कामेश सोया हुआ था। उसकी पुकार सुनते ही उठ बैठा, जल्दी-जल्दी दाँत साफ किये और कपड़े बदलकर बाहर आया। दोनों चबूतरे के पास आये। तब तक बहुत लोग आकर साधु की प्रतीक्षा कर रहे थे।

तब वहाँ उपस्थित आदमियों में से एक ने दावे के साथ कहा, ''ग्रह दोष के कारण फसल में कीड़े लग जायेंगे, ऐसा कहना तो सरासर

श्रीधर

अंधविश्वास है।'' इसपर रामेश ने हँसते हुए कहा, ''इस विषय को लेकर चर्चा करना व्यर्थ है। किसी को संदेह हो तो साधु से पूछ सकते हैं। महात्माओं की बातें मूल्यवान होती हैं। एक बार एक साधु हमारे घर आये थे। उन्होंने कहा, मनुष्य को सदा सतर्क रहना चाहिये। कल का काम आज ही और आज का काम अभी करना चाहिये। यह बहुत ही महत्वपूर्ण संदेश है। कामेश, तुम्हारी क्या राय है?''

कामेश हमेशा इसी मौके की ताक में रहता था कि उसे कैसे नीचा दिखाऊँ, इसलिए उसने फौरन कहा, ''साधु ने जो बताया, वह तुम्हारे लिए ही है। मैं तो यह पहले से ही जानता हूँ। इसी वजह से मैं इतना बड़ा आदमी बन पाया हूँ।''

''तुम्हारे कथन में भी सच्चाई है। कल बीज बेचनेवाला हमारे गाँव आया था। मैंने सोचा, आज खरीद लूँगा। पर वे बीज कल ही सबके सब बिक गये। सदा सतर्क रहने की बात साधुओं से अवश्य सुनी, पर उसे आचरण में नहीं लाया। इसलिए विवश होकर बीज खरीदने कल दूसरे गाँव की हाट में जाना होगा'', रामेश ने हँसते हुए कहा।

उसकी इन बातों पर आश्चर्य प्रकट करते हुए वहाँ उपस्थित सूरदास नामक एक आदमी ने कहा, ''तुमने अब तक बीज नहीं खरीदे? कामेश ने तो कल ही बोरा भर के बीज खरीद लिया। मैंने सोचा कि उसके लिए आधा बोरा भर के बीज काफी हैं और शेष तुम्हारे लिए खरीदा है। आख़िर तुम दोनों दोस्त हो, पड़ोसी हो।''

कामेश ने सोचा तक नहीं था, वह आदमी उसका भांडा फोड़ देगा। उसने बोरा भर के बीज जान-बूझकर ही खरीदे, क्योंकि वह नहीं चाहता था कि रामेश को बीज मिले। इस सच्चाई को छिपाने के लिए कामेश ने चिढ़ते हुए कहा, ''तुम हम दोनों के बीच फूट डालना चाहते हो, नहीं तो यह बात अभी कहने की क्या ज़रूरत थी। मैं सदा सतर्क रहता हूँ। कल का काम आज ही कर डालता हूँ। अगले साल के लिए भी उपयोग में आये, इसीलिए मैंने बोरा भर के बीज खरीद लिये।''

रामेश ने प्यार से कामेश के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा, ''भला हम दोनों के बीच मनमुटाव क्यों जगह लेगा! मैं जानता था कि तुमने अतिरिक्त बीज खरीदे, फिर भी मैंने तुमसे नहीं माँगा।''

बेचारा कामेश उसकी बातों पर हक्का-बक्का रह गया। इतने में साधु वहाँ पधारे।

उपस्थित ग्रामीणों को संबोधित करते हुए साधु ने कहा, ''ग्रह की स्थिति-गति के कारण इस भूमि पर प्रभाव में परिवर्तन होते रहते हैं। मेरी बातों को अंधविश्वास न मानकर आप सब लोग आये, इसके लिए हृदयपूर्वक धन्यवाद। अब मैं हरेक को अभिमंत्रित अनाज का एक-एक बीज देता हूँ? इसे अपनी मुट्ठी में बंद कर लीजिये और घर के पूजा-गृह में रखे हुए भगवान की मूर्ति के चारों ओर घूमते हुए एक सौ आठ बार पंचाक्षरी मंत्र का जप कीजिये। ऐसा करने से ग्रह दोष निकल जायेगा। आप सबके सब नहाकर ही आये होंगे। बिना नहाये आनेवाले को यह बीज दूँगा तो उसका उलटा प्रभाव पड़ेगा।''

वहाँ उपस्थित लोगों में से कामेश सहित ऐसे दस लोग थे, जो नहाकर नहीं आये थे, इसलिए भय के मारे वे पीछे हट गये।

साधु ने उन्हें देखकर कहा, ''घबराइये मत। ग्रामाधिकारी को कुछ अतिरिक्त बीज दूँगा। उनकी पूजा के बाद इसे आप लीजिए तो इसका फल अच्छा होगा।'' कहते हुए उन्होंने हरेक को एक-एक बीज दिया और कुछ अतिरिक्त बीज ग्रामाधिकारी को सौंपा।

तब सूरदास ने कामेश को व्यंग्य-भरी दृष्टि से देखते हुए कहा, ''तुम्हारी सदा सतर्कता क्या हो गयी? समय पर स्नान करके आते तो साधु से खुद अभिमंत्रित बीज ले सकते थे न!''

रामेश ने फ़ौरन कहा, ''बाप रे, मैं जानता ही नहीं था कि हमारा कामेश भी उन आदमियों में से एक है, जिसे साधु से अभिमंत्रित बीज नहीं मिला। अगर मैं जानता तो साधु से यह कहकर वह बीज इसे दिलाता कि यह नियम मेरे दोस्त के लिए लागू नहीं होगा। सदा सतर्क रहनेवाले मेरे मित्र कामेश कल ही नहाकर तैयार हो गये।''

रामेश की इन बातों को सुनकर सभी लोग ठठाकर हँस पड़े। फिर एक और बार कामेश, रामेश के हाथों अपमानित हुआ। इसके बाद उसने कभी भी किसी से भी सदा सतर्कता के बारे में बात नहीं की।

चन्दामामा प्रश्नोत्तरी-७

(१६ वर्ष से कम आयु के बच्चों के लिए)

Co-sponsored by Infosys FOUNDATION, Bangalore

जो सही उत्तर देंगे, उनमें से एक को २५० रुपये दिये जायेंगे।*

इस महीने की प्रश्नोत्तरी भारत में सिक्कों की ढलाई तथा डाक-टिकटों पर केन्द्रित है।

**यदि सर्वशुद्ध प्रविष्टि एक से अधिक हों तो सफल प्रतियोगियों में से प्रत्येक को रु.५० की राशि मिलेगी।*

तुम्हें जो करना चाहियेः १. एक कागज पर इनके उत्तर लिख लो; २. अपना नाम, उम्र तथा पिनकोड के साथ घर का पूरा पता लिखो; ३. लिफाफे पर लिखो-**चन्दामामा प्रश्नोत्तरी-७**; ४. समय पर इसे पोस्ट कर दो ताके ३१ अगस्त २००८ के पहले हमें मिल जाये। उत्तर अक्तूबर अंक में प्रकाशित होंगे।

१. एक मुगल सम्राट ने राम और सीता की आकृति के साथ सिक्के निकाले। कौन था वह सम्राट?

२. भारतीय सिक्के का नाम 'रुपया' किसने दिया?

३. अंग्रेजी शासन में पहली बार कब सिक्के चलाये गये?

४. स्वतन्त्र भारत ने पहली बार कब सिक्के चलाये?

५. ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने इंग्लैण्ड के राजा की छवि के साथ सिक्के चलाये। राजा कौन था?

६. ईस्ट इंडिया कम्पनी द्वारा स्थापित डाक घर उनके कार्यालय सम्बन्धी पत्राचार के लिए थे। जन साधारण के लिए इन्हें कब खोला गया? डाक टिकट का मूल्य क्या था?

७. पहली बार भारत में कब डाक टिकट आरम्भ हुए? उनका नाम क्या था?

८. पूरे भारत में उपयोग के लिए पहली बार कब डाक टिकट जारी किये गये? मूल्य क्या था?

बच्चे अख़बार की सुर्खियों में

एक हाथी प्रेमी

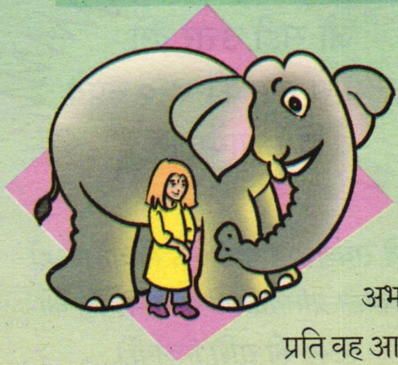

आठ वर्षीय पूजा एक जर्मन लड़की है। वह उस समय पैदा हुई थी जब उसके माता-पिता साहसी पर्यटक कार्टन तथा जेसिका ने अभी-अभी भारत छोड़ा था और नेपाल में प्रवेश किया था। जब पूजा तीन साल की थी तब उसने मुदुमलाई अभयारण्य का भ्रमण किया था, जहाँ शान्ति नामक एक हाथी के प्रति वह आकर्षित हुई। पूजा को हाथी का प्रभावशाली रूप तथा आकार प्रकार और मैत्री पूर्ण स्वभाव अच्छा लगा। यह २००५ की बात है। बाद में शान्ति को वहाँ से हटा कर त्रिचनापल्ली के निकट तिरुवानईक्कायल के अकिलाण्डेश्वरी मन्दिर में रखा गया। भू-पर्यटक परिवार तब से प्रतिवर्ष अपनी बेटी पूजा की खुशी के लिए मन्दिर का भ्रमण करता रहा है, क्योंकि उसने शान्ति के साथ पूर्व निश्चित भेंट बरकरार रखा है। दोनों के बीच के बन्धन से माता-पिता को एक पुस्तक लिखने की प्रेरणा मिली है, जिसका शीर्षक होगा, पूजा, द एलिफैण्ट गॅर्ल।

चन्दामामा प्रश्नोत्तरी-५ (जून २००८)

हमारे हिन्दी संस्करण के पाठकों की कोई प्रविष्टि सर्वशुद्ध नहीं पाई गई। इसलिए कोई पुरस्कार नहीं दिया जा रहा है। पाठकों के हित में प्रश्नोत्तरी के उत्तर पृष्ठ ४३ में दिये जाते हैं। चन्दामामा की सभी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताओं में भाग लेते रहिये।

Chandamama's Children's day out

For 60 years, Chandamama has been entertaining children with its unique stories, full of moral and information. In these 60 years, some 100 million readers might have read and enjoyed Chandamama.

We are now planning to launch a series of events in 16 cities all over India, called Chandamama Children's Day Out. This will be a full day activity in which over 5,000 school children in each city will join in activities like Painting, Clay Modeling, Poetry Writing / Story Telling, English Debate and a Single Wicket Cricket Tournament. The objective of Chandamama Children's Day Out is to organise a day when children can have fun competing in a medley of activities. The programme will culminate with a prize-distribution ceremony in the evening. A grand finale will be held in Mumbai during the first quarter of 2009.

For more information visit www.chandamama.com

खजुराहो

मध्य प्रदेश में खुजराहो, १९ वीं शताब्दी में अनेक हिन्दू और जैन मन्दिरों की खोज के बाद विश्व विख्यात हो गया। विश्वास किया जाता है कि वे एक राजपूत राजवंश, चन्देलों द्वारा निर्मित किये गये थे जो १० वीं से १२ वीं शताब्दी के बीच उस क्षेत्र में राज्य करते थे। उनका निर्माण सन ९५० और सन १०५० के मध्य हुआ। खजुराहो चन्देलों की राजधानी थी। बाद में महोबा को राजधानी बनाया गया। मन्दिरों का समूह कुछ दिनों तक समृद्धि पर था। बाद में, ऐसा प्रतीत होता है कि वे विस्मृति में खो गये। फिर अंग्रेजों द्वारा वे बहुतायत की संख्या में पाये गये। प्रारम्भ में, लगभग ८० मन्दिर थे, जिनमें से २२ मन्दिर मौजूद हैं। मन्दिर परिसर में आठ फाटकों के साथ चहारदिवारी बनी हुई है और हरेक फाटक के दोनों ओर दो सुनहले खजूर के पेड़ लगे हैं।

मन्दिर उत्तर भारतीय वास्तु शैलियों के उत्कृष्ट नमूने हैं, जिनमें, वर्गीकृत बनावट में ऊपर उठते हुए शिकाराओं (घुमावदार संरचना) के कारण विशिष्टता आ गई है। मुख्य शिकारा एक वर्गाकार चबूतरे के केन्द्र में स्थित मुख्य देवालय तथा चारों कोनों में चार छोटे देवालयों की सुरक्षा करता है। मन्दिरों के उपास्य देवता त्रिमूर्त्ति ब्रह्मा, विष्णु और महेश हैं अथवा जगदम्बिका के समान देवी का रूप है। कन्दरिया महादेव (शिव) मन्दिर में ८४ शिकारा हैं जिनमें मुख्य शिकारा ११६ फुट ऊँचा है। इन मुख्य और उप शिकाराओं के कारण मन्दिरों में एक असाधारण भव्यता आ गई है। इन मन्दिरों में उन दिनों के दैनिक जीवन की दिनचर्या को दर्शानेवाली यथार्थक प्रतिमाएँ भरी पड़ी हैं। इन प्रतिमाओं में शृंगार करती स्त्रियाँ, संगीतज्ञ, कुम्भकार, कृषक तथा आनन्दोत्सव और मनोरंजन में व्यस्त लोग दर्शाये गये हैं।

खजुराहो के इन कीर्ति-स्तम्भों को विश्व विरासत की सूची में सन १९८२ में शामिल करते हुए यूनेस्को ने टिप्पणी में कहा कि ''उच्च स्तरीय मौलिक वास्तुकला की संरचनाएं चन्देला संस्कृति के अनुपम प्रमाण हैं।'' इन मन्दिरों के प्रसंग एक बहुत बड़े यात्री, इब्न बतूता की डायरियों में पाये गये हैं, जो सन् १३३५ में भारत का भ्रमण करने आया था।

चित्र कैप्शन प्रतियोगिता

MAHANTESH C. MORABAD

क्या तुम कुछ
शब्दों में ऐसा
चित्र परिचय
बना सकते हो,
जो एक दूसरे से
संबंधित चित्रों के
अनुकूल हो?

MAHANTESH C. MORABAD

चित्र परिचय प्रतियोगिता, चन्दामामा,

जे वि एल प्लाज़ा, छठी मंजिल, नं. ६२६(पु.नं.५०१), अण्णा सालई, तेनाम्पेट, चेन्नई - ६०० ०१८.

जो हमारे पास इस माह की २० तारीख तक पहुँच जाए। सर्वश्रेष्ठ चित्र परिचय पर १००/- रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा, जिसका प्रकाशन अगले अंक के बाद के अंक में किया जाएगा।

बधाइयाँ

अक्षित आदित्य तिलक राज गुमा
मकान न. २४४९/१३,
मुकुन्द लाल नेशनल कॉलेज के साथ,
रादौर, यमुना नगर - १३५ १३३
हरियाणा.

विजयी प्रविष्टि

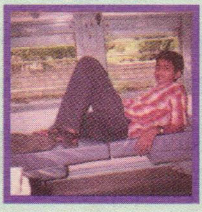

रेल सवारी, कितनी प्यारी।
काम है मुश्किल, मेहनत भारी॥

अपने भारत को जानो प्रश्नोत्तरी के उत्तर:

१. सूर्य; २. सरस्वती; ३. कामधेनु; ४. भगीरथ;
५. पवन देव; ६. विभीषण।

Printed and Published by B. Viswanatha Reddi at B.N.K. Press Pvt. Ltd., Chennai - 26 on behalf of Chandamama India Limited, JVL Plaza, 6th Floor, 626 (Old 501), Anna Salai, Teynampet, Chennai - 600 018. Editor : B. Viswanatha Reddi (Viswam)

Friends can win you prizes!
BSA LADYBIRD
friendship day contest
attach a photo or a sketch of yourself and a friend, tell us what friendship day means to you and you can win some funky prizes!
Here's what the winners get
First prize: Nokia music express
5 second prizes: iPod shuffles
10 third prizes: mp3 players
100 Friends DVDs
Age up to 16 years. Conditions apply.
BSA LADYBIRD Your best friend for life.
contest forms available at BSA go stores and Hercules BSA zones. you can also visit www.ticyclesindia.com or BSA ladybird your best friend for life communities on orkut, bigadda and facebook to participate online.
Contest closes 10 August 2008

CHANDAMAMA (Hindi) August 2008 Registrar of Newspapers of India No. 1087/57. Regd No. TN/CC(S)Dn/163/06-08
Licensed to post WPP - Inland No.TN/CC(S)Dn/92/06-08, Foreign No. 93/06-08